श्रीवनमाली-चरितामृत

महाकाव्य

श्रीदाऊजी महाराज, श्रीबलदेव

चावला ऑफसैट, नदिया मौहल्ला, भरतपुर फोन : 224461

॥ श्री गोविन्दाय नमो नमः ॥

श्रीवनमाली-चरितामृत

महाकाव्य

श्रीराधागोविन्द देवजी, जयपुर

रचयिता - बाबूलाल शास्त्री

श्रीराधाकृपा कुंज, पास पंचवटी आश्रम

पंचमुखी हनुमान परिक्रमा मार्ग, राजपुर बाँगर श्रीधाम, वृन्दावन (मथुरा)

श्रीवनमाली-चरितामृत

महाकाव्य
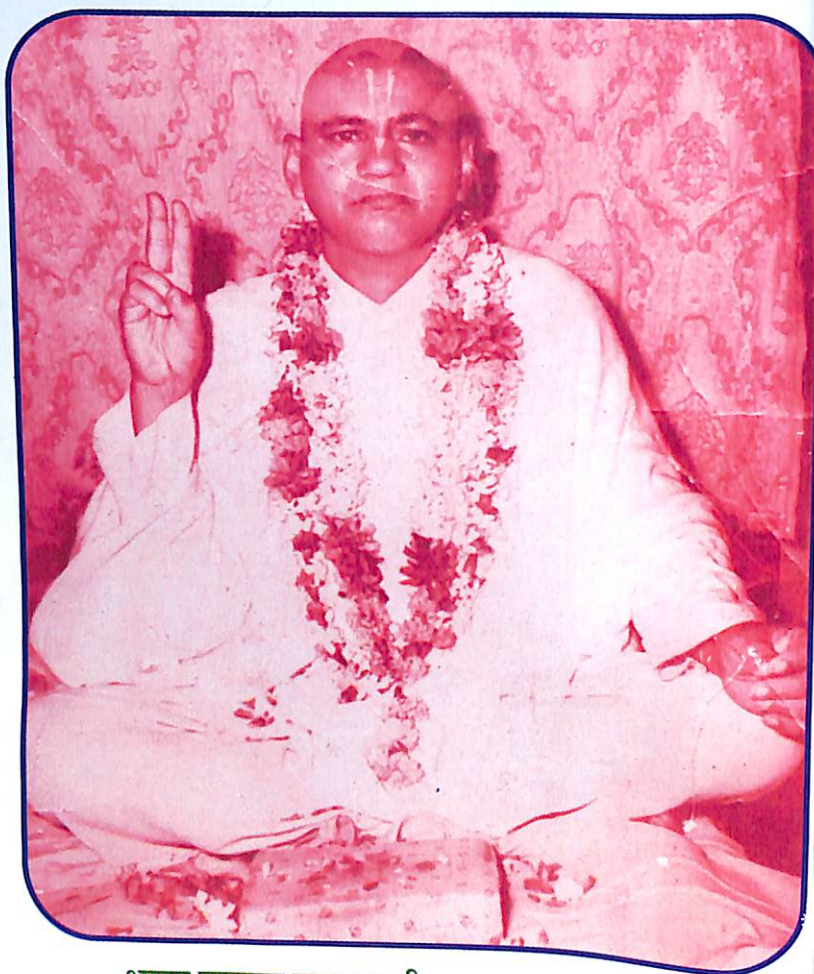
भारत सरकार द्वारा कालीदास पुरस्कार से पुरस्कृत

महाकविः श्रीवनमालिदासजी शास्त्री

काव्य वेदान्त तीर्थ, घटिका शतक

श्रीगोपालचम्पू आनन्द वृन्दावनचम्पू, श्रीपद्यावली आदि

प्राचीन ग्रन्थों के टीकाकार।

॥ श्रीरामकृष्णौ विजयेते तमाम्॥

भूमिका

श्रीधाम वृन्दावन के महान संत, ब्रजमण्डल के गौरव, रसिक संत शिरोमणि, हान प्रकाण्ड पण्डित, मूर्धन्य उद्भट विद्वान, महाभागवत, विज्ञ शिरोमणि, विवर, कविकुल चूड़ामणि, सकल शास्त्र विशारद, विद्या वारिधि, प्रेम-क्ति-ज्ञान-वैराग्य के पुँज, विश्व की अप्रतिम विभूति , दीनता, विनम्रता की जीव मूर्ति, श्रीकृष्ण-बलदेव के प्राणप्रिय सखा, घटिका शतक, महाकवि वनमालिदासजी महाराज के जीवन, व्यक्तित्व, कृतित्त्व पर प्रकाश डालना ड़ा ही दुष्कर एवं असाध्य कार्य है। सूर्य के प्रभा मण्डल की तुलना जुगनू के मटिमाते मन्द प्रकाश से करने जैसा है।

लेकिन ब्रजेश्वरी श्रीमती राधारानी, श्रीराधागोविन्द देव, श्रीकृष्ण-बलदेव, राधारमणदेवजी की महती कृपा वश असाध्य एवं दुष्कर कार्य-ीवनमाली-चरितामृत-महाकाव्य" के रूप में आपके सामने प्रत्यक्ष रूप उपस्थित है।

मैं ग्रन्थ रचना की अनुमति लेने श्रीराधारमण मन्दिर वृन्दावन गया। राधारमणदेवजी के सेवायत गोस्वामीजी ने श्रीराधारमण ठाकुर की प्रेरणा से भु का प्रसादी पान, तुलसीदल तथा प्रसादी माला प्रदान की। जिसे मैंने राधारमणदेव की प्रत्यक्ष कृपा माना। मुझे बहुत प्रसन्नता हुई। ब्रजेश्वरी मती राधारानी ने स्वप्न में ग्रन्थ रचना का आदेश दिया। श्रीकृष्ण-बलदेव जी स्वप्न में कहा कि यह लिखो, वह लिखो, ऐसा लिखो, वैसा लिखो आदि-आदि। पनी सहर्ष अनुमति प्रदान की। श्रीराधागोविन्ददेवजी, स्वप्न में कभी गौर वर्ण श्रीबलदेवजी बन जाते, कभी श्रीबलदेवजी श्याम वर्ण के श्रीगोविन्ददेवजी न जाते। इस प्रकार दोनों ने अनुभव कराया कि हम दोनों एक ही स्वरूप हैं, नों में कोई अन्तर नहीं, कोई भेद नहीं। दोनों ही प्रिय भाई अपने प्राणप्रिय ख्रा श्रीवनमालिदासजी के जीवन चरित्र लिखने की बार-बार आज्ञा दे रहे हैं। सबकी कृपा शक्ति पाकर मुझ अज्ञ, अल्पज्ञ ने कठपुतली के समान ग्रन्थ ना की।

ग्रन्थ रचना कैसी है- ठाकुर-ठकुरानी जानें और आप जानें। मैं तो मात्र कठपुतली की तरह हूँ और सब प्रकार से हीन हूँ। श्रीयुत श्रीधनीराम शास्त्री जी का मैं विशेष रूप से आभारी हूँ। जिन्होंने मेरा उत्साह बढ़ाया, साथ ही ग्रंथ पढ़कर बहुत प्रसन्न हुए।

मैं विज्ञ, सुधी पाठक, श्रोताओं से सादर विनम्र प्रार्थना करता हूँ कि मेरी अथवा प्रेस की गलती से त्रुटियाँ रह जाना सहज एवं स्वाभाविक है। विज्ञ सुधी पाठक, श्रोता, वक्ता इसके लिए मुझे क्षमा करें। उसके लिए कृपाकर मुझे सूचित करें अथवा स्वयं ही संशोधन करलें।

निज बुधि बल भरोस मोहि नाहीं। तातें विनय करउँ सब पाहीं॥
कवि न होउँ नहिं बचन प्रबीनू। सकल कला सब विद्या हीनू॥
कबित बिबेक एक नहिं मोरे। सत्य कहउँ लिखि कागद कोरे॥

-रामचरितमानस

अन्त में मैं श्रीसद्गुरुदेव एवं उनके ठाकुरजी से अपनी बार-बार कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ कि मेरे जीवन में जो भी शुभ है वह आपकी कृपा से है तथा जो भी अशुभ है वह सब मेरे ही अपने अज्ञान से है। श्रीकृष्ण-बलदेव एवं श्रीसद्गुरुदेव श्रीवनमालिदास जी के कर कमलों एवं श्रीचरणाविन्द में सादर सप्रेम भेंट करता हूँ। भागवत के श्लोक के साथ श्रीगुरुदेव के स्वरूप, स्वभाव, महिमा को प्रकट करते हुए अपनी बात समाप्त करता हूँ।

तितिक्षवः कारुणिकाः सुहृदः सर्वदेहिनाम्।
अजातशत्रवः शान्ताः साधवः साधुभूषणाः॥

श्रीमद्भागवत (3-25-21)

आपका कृपाकांक्षी

बाबूलाल (ब्रजविहारीदास)

विषय सूची

श्रीमंगलाचरण

दोहा— राधागोविन्द इष्ट प्रभु, प्रभु श्रीकृष्ण-बलराम।
कृपा करहु निज दास पर पुनि-पुनि करहुँ प्रणाम॥

श्रीकृष्ण-बलदेव जी प्यारे। कृपा करहु करुणा उर धारे॥
गोविन्द चरन मैं कीन समर्पण। राधा पद मम तन मन अर्पण॥
बाँह गहे की लाज निभाओ। सब बिधि नाथ मोहि अपनाओ॥
राधारमण कृपा कर मो पर। चरण राख नित मम सिर ऊपर॥
गोपाल भट्ट के प्यारे ठाकुर। कृपा मूर्ति करुणा गुन आकर॥

दो०— हे श्री राधारमण प्रभु कृपा करहु भरपूर।
मो से दीन गरीब सिर निज पद राखहु धूर।।
वन्दन करि गुरु पद युगल पुनि बन्दौं गौर निताइ।
ब्रह्मसुता सुमिरन करौं श्रीगणेश पद ध्याइ।।

ब्रह्मसुता सरस्वति महारानी। वेदहु महिमा नहिं तव जानी॥
देहु विमल मति माता मोई। पुनि-पुनि पद वन्दहुँ मैं तोई॥
विघ्न हरन मंगल के दाता। जो कोई गणेश पद ध्याता॥
बुद्धि राशि सब सदगुन सागर। सकल सिद्धि विद्या के आगर॥
विघ्न हरहु गन नायक नागर। कृपा करहु हे मंगल सागर॥
पुनि-पुनि चरन कमल प्रभु ध्यावहुँ। वनमाली के चरित मैं गावहुँ॥

दो०— मध्व-मुनिहिं वन्दन करहुँ पुनि-पुनि शीश झुकाइ।
बरणत हूँ गुरु चरित कहुँ पूरण करहु निताइ॥

दो०— मध्व-मुनिहिं सिर नाइ, रामानुज वन्दन करौं।
विष्णु स्वामि पद ध्याइ, निम्बारक चरननि परौं॥

कृपा करहु चारों आचारज। करु पद छाया देहु चरन रज॥
सब जीवन प्रति करुणा भारी। किये सुखी सब जीव दुखारी॥
श्रीरूप-सनातन जीव गुसाईं। रघुनाथ युगल गोपाल गुसाईं॥
षड् गोस्वामी पद करि वन्दन। कृपा करहु अभिलाषा पूरन॥

श्रीहरिकृपा का स्वरूप महत्व वंदना

हरि कृपा कहँु पुनि-पुनि वंदन। हरिवश राखहि परम विलक्षन॥
हरि कृपा हरि हृदय विराजे। सर्वोपरि सब जन सुख साजे॥

श्रीहरिनाम वंदना

बन्दहुँ कृष्ण नाम जगदीशा। सिर धरि पुनि-पुनि नावहुँ शीशा॥
प्रेम प्रकाशक सबके त्राता। हित-परलोक लोक पितु-माता॥
भक्त प्राण जग की चिन्तामणि। कामबीज गायत्री नवमणि॥
मात पिता सर्बसु तुम मोरे। शरण शरण शरण मैं तोरे॥
नाम काम तरु सब सुख खानी। बेद प्रान जन जीवन जानी॥
राधाकृष्ण नाम वपु धारा। जो सुमिरहि सो होयहि पारा॥

श्रीवनमाली जन्म-हेतु

हरि सख्य भाव का लोप देखकर। मधुकंठ सखा भेजा अवनी पर॥
सखा भाव मम रस विस्तारो। शरण आइ जो सबको तारो॥
एहि कारन वनमाली आये। सखा भाव अवतार कहाये॥
रामकृष्ण के जीवन प्रान। शिष्यन के सर्वस्व निधान॥
जीह जसोमति हरि बलराम। जंजीरी के प्यारे श्याम॥
जय जय जय जंजीरी नन्दन। कृपाधाम भक्तन हिय चन्दन॥

श्लोक— श्रीमद् विज्ञशिरोमणिं कविवरं भक्ति प्रचारेरतं
कृष्णध्यानपरायणं हरि सखं श्रीमित्रभाव प्रदम्।
जीवानामुपदेशदान विधया कल्याण कल्पद्रुमं
श्रीलश्रीवनमालिदाससुगुरुं नित्यं नमामो वयम्॥

श्रीकृष्ण मित्रं गुरु भक्त दासं,
निकुंज वृन्दावनधाम वासम्।
महाकविं काव्य रसस्य रासं,
नमाम्यहं श्रीवनमालिदासम्॥

दो०— जय वनमालीदास गुरु जय सखा कृष्ण बलराम।
जय वनमाली शिष्य सब पुनि-पुनि करहुँ प्रणाम॥

वनमाली के भक्तजन सबकी चरनन धूलि।
कृपा करहु मो दीन पर सब अपराधनि भूलि॥

सब करि कृपा देहु वर मोई। गुरु पद पंकज प्रीती होई॥
श्रीवनमाली-चरितामृत गाऊँ। प्रेम पियूष रसधार बहाऊँ॥
तुम्हरी कृपा मोर अवलम्बन। मन अभिलाष करहु मम पूरन॥
भक्त शिष्य मोहि पथ दिखलाओ। अबुध बाल गिनि करुणा लाओ॥

ग्रन्थ रचना प्रयोजन

सपने आज्ञा दी ठकुरानी। करुणा मूरति ब्रज महारानी॥
कृष्ण-बलदेव सखा वनमाली। लिखौ चरित मम आयसु पाली॥
वनमाली के चरितहि गाई। सुखी भक्त होइ जन समुदाई॥
कृष्ण-बलदेवहु आज्ञा दीनी। चरित लिखन की जिद अति कीनी॥

राधागोविन्द मोरे लिखाय आज्ञा करी।
राधारमण कीन कृपा कहितेन पारी॥
राधागोविन्द राधारमण होड़ा-होड़ी करी।
एइ लिखौ बोई लिखौ आमी रात्री दिने मरी॥

पुनि-पुनि पद बन्दौं श्रीराधारमण राय।
दीन जानि दीन 'पान' मोरे कैल कृपाय॥
राधागोविन्द गोपीनाथ मदनमोहन।
एइ तीन ठाकुर सर्व वैष्णवेर प्राणधन॥

वनमाली के शिष्य सुजाना। आयसु कीन परम सुख माना॥
सबकी आयसु निज सिर धरेहू। पावन चरित लिखन अनुसरेहू॥

प्रिया कुंड बैठि करौं ग्रंथ कौ रचन।
राधाकृष्ण मय जग जानि करौं वंदन
यथा राधा प्रिया विष्णोस्तस्याः कुण्डं प्रियं तथा।
सर्व गोपीषु सैवैका विष्णोरत्यन्त बल्लभा॥ पद्म पुराण

समस्त गोप सुन्दरियों में जिस प्रकार श्रीराधा, श्रीकृष्ण को अत्यन्त प्रिय हैं उसी प्रकार श्रीराधाकुण्ड भी उन्हें प्रिय है।

'प्रियाकुंड' नित करहुँ प्रणामा। परम प्रेम रस भरेहु ललामा॥
कुंड स्नान करे जो आई। राधा सरिस प्रेम वो पाई॥
राधा महिमा सो कुण्ड की महिमा। प्रिया माधुरी सो कुण्ड मधुरिमा॥

ग्रंथ आरम्भ समये हिय हय चमत्कारिक आनन्द।
मन वाणी अगोचर अनुभव गम्य परम प्रेमानन्द॥

प्रिया–प्रियतम रीझि मोहि देहु कृपा बल।
पद पंकज बन्दौं सदा नाहिं मोर बल॥

अज्ञ अबोध जानि सब भाँती। मो पर कृपा करहु दिन राती॥
तुम्हरी परम कृपा मैं चाऊँ। वनमाली के गुन गन गाऊँ॥
कृपा सहारा कृपा सहारा। नहिं जानत मति मंद गँवारा॥
अमिय चरित लिखावहु मोई। कृपा सहारे पूरण होई॥

श्रीराधा वंदना - कृपा याचना

प्रेममय करुणामय परम दयामय। राधार पद बन्दौं परम कृपामय॥
कृपा करौ कृपा करौ, कृपा करौ महत। तव कृपा पाइ रचौं वनमाली चरित॥
शोभ–शील–रूप गुन खानी। प्रेम भवन करुणा महारानी॥
पुनि–पुनि बन्दौं राधा चरना। मोह जनित संशय तम हरना॥

कृष्ण ह्लादिनी श्री राधारानी। परम शिरोमणि ब्रज महारानी॥
गोविन्द मनोरथ पूरण करई। तेहि कारण सब राधा कहई॥
कृष्णहिं आराधहिं राधा प्यारी। राधा पद पंकज भ्रमर मुरारी॥
कृष्ण मोहिनी सब गुन खानी। परम प्रेम निधि राधा रानी॥

वृन्दावन रानी नमो नमः। हरि की पटरानी नमो नमः॥
भक्ति महारानी नमो नमः। हे प्रेम दिवानी नमो नमः॥
कृष्ण ह्लादिनी नमो नमः। हे कुञ्ज विलासिनि नमो नमः॥
हे कृपा रूपिणी नमो नमः। महाभाव रूपिणी नमो नमः॥

हे प्रेम रूपिणी नमो नमः। हे रस सागरि नमो नमः॥
हे नव नागरि नमो नमः। हे सखी शिरोमणि नमो नमः॥
शील नेह निधि नमो नमः। प्रिय गुन खानी नमो नमः॥
हे महारास मणि नमो नमः। हे रूप स्वामिनी नमो नमः॥

हे कृष्ण स्वामिनी नमो नमः। ब्रजबधू शिरोमणि नमो नमः॥
हे रास रसिकिनी नमो नमः। निकुँज स्वामिनी नमो नमः॥
हे प्रेम परसमणि नमो नमः। भाव रस सागरि नमो नमः॥
हे कीर्ति कुमारी नमो नमः। वृषभानु नन्दिनी नमो नमः॥

हे नट नागरि नमो नमः। एकान्त विलासिनि नमो नमः॥
हे गौर रूपिणी नमो नमः। हे कान्ति स्वरूपिणि नमो नमः॥
हे गौरांगी नमो नमः। हे करुणा मूरति नमो नमः॥
हे भक्त पोषिणी नमो नमः। हे कृष्ण मनोमणि नमो नमः॥

हे कृष्ण हृदयनिधि नमो नमः। हे कृष्ण प्राणमणि नमो नमः॥
गोविन्द प्राणप्रिय नमो नमः। हे हरि प्यारी नमो नमः॥
हे राधाप्यारी नमो नमः। हे श्यामा प्यारी नमो नमः॥
माधुर्य स्वामिनी नमो नमः। गोविन्द आत्मा नमो नमः॥

श्रीवनमालीदास जी के माता-पिता जन्म भूमि आदि की वंदना

श्री तुलाराम पद बन्दौं वनमालीर पिता।
जंजीरी माता बन्दौं वनमालीर माता॥

दो०— बास ग्राम के सकल जन बन्दहुँ बारम्बार।
वनमाली जहँ जनम ले कीनों जग उद्धार॥

पुनि-पुनि बन्दहुँ बास सुग्रामा। जड़ चेतन पद कमल नमामा॥
धन्य बास के सब नर नारी। प्रेम मगन कीने सब झारी॥
लोह चुम्बक ज्यों सब खिचे आंइ। देह गेह भूलि सब वनमाली कूँ चाँइ॥
वनमाली के चरित सुहावन। सबके मन बहु सुख उपजावन॥

भक्तिहीन भूमि जहँ जनमे वनमाली।
मरुभूमि कल्पवृक्ष प्रेम-भक्ति माली॥
कल्याण कल्पद्रुम कीनों जग कौ मंगल।
सखा भाव देइ भेंटे सारे अमंगल॥
जन्मभूमि कीनी भक्ति रस सों प्लावित।
शिशु लीला करि कीने प्रेम-विभावित॥
नर अरु नारि वृद्ध युवा मंडल।
देखो बिनु चैन नाहिं तृषित सकल॥
वनमाली पद कमले जे मत्त मधुकर।
सबके पद कमल बन्दौं नित्य निरन्तर॥

हे कुलदेवता नमो नमः। स्थान देवता नमो नमः॥
हे ग्राम देवता नमो नमः। हे इष्ट देवता नमो नमः॥
मात पिता अरु बाबा दादी। सब पुरखन की चहों परसादी॥
सब मिलि मो पर किरपा करिहौ। तुम्हरे चरन कमल सिर धरिहौं॥

जड़ चेतन सब मेरे स्वामी। सबके चरण नमामि नमामी॥
दास सखा किंकर मोहि जानहु। कीजै अमित कृपा हित साजहु॥
कुल ठाकुर बन्दहुँ इष्ट देवता। इहलोक-परलोक सेइ करे रक्षिता॥
जासु नाम नाहिं करे अमेते वंदना। शत-शत नमन कर अपराध मार्जना॥

सबकी करि पद वंदना पुनि-पुनि करहुँ निहोर।
निज पद रज कन जानिकें करहु कृपा की कोर॥
बास ग्राम महिमा बढ़ी यश सौरभ सब ओर।
मानहु प्रेम समुद्र से प्रकट्यो चन्द्रकिशोर॥

अथ जंजीरी का सुत भया वनमाली तेहि नाम।
सखा भाव अवतार सो पुनि-पुनि करहुँ प्रणाम॥
अथ तुलाराम का सुत भया श्रीवनमाली नाम।
कोटि-कोटि पद वंदना नित प्रति करहुँ प्रणाम॥

श्रीसद्गुरुदेव-वंदना-महिमा

श्लोक-अंगीकृतः हरि सख्य भावः श्रीगोपालचम्पू रसदानकर्त्ता।
विव्दद्वरः काव्य कला प्रवीणः किं कालीदासः न हि वनमालिदासः॥

सरल संस्कृत काव्य रच धन्य किया ब्रजधाम है।
भक्तिभाव श्रद्धा सहित गुरुवर तुम्हें प्रणाम है॥
किस बिधि कहूँ सकल तव गुण गण भारी।
श्रीचरण कमल पर बार-बार बलिहारी॥

दो०— पद सरोज बन्दहुँ सदा कृपा करहु गुरुदेव।
तव किंकर निज दास हूँ चरण कमल रति देव॥

हे वनमाली गुरु हमारे। मंगलमय पद कमल तुम्हारे॥
तुम मंगल के मंगल धामा। तुम्हरे पाद सरोज प्रणामा॥
तव पद पंकज जो नित ध्यावत। अरथ धरम भक्ति सो पावत॥
जोइ-जोइ इच्छा होइ मनमाहीं। गुरु कृपा कछु दुर्लभ नाहीं॥

सुरतरु सम तव पद फल दाता। सकल शोक भय भव जन त्राता॥
तव पद पंकज आश्रित जोई। करत पवित्र भुवन को सोई॥
गुरु पद पंकज के जो दासा। पुजबहिं सकल मनोरथ आसा॥
तव पद पंकज शरणी आये। तिनके सब दुःख सहज नशाये॥

सोई चतुर सोई बड़भागी। गुरु सेवा का जो अनुरागी॥
गुरु सेवा सम धरम न आना। कहहिं वेद इतिहास पुराना॥
शिष्य धरम का सुनहु बखाना। गुरु सेवा में तन मन लाना॥
गुरु के पाद पद्म रति जेही। सकल विभव बस करिहैं तेही॥

सो पद जल गुरु मम सिर धारौ। करहु देव कल्याण हमारौ॥
ग्रंथन में महिमा तव गाई। तुमने गोविन्द दियौ बताई॥
हे ब्रह्मण्यदेव गुरु राई। तव पद कमल बसहिं हिय माई॥
तव पद कमल नमामि नमामी। मैं सेवक अनुचर अनुगामी॥

जिस-जिस योनि विषे मैं जाऊँ। दास्य भाव श्रीगुरु का पाऊँ॥
इन सम शांत कृतज्ञ उदारा। देव दुनज नहिं कोउ निहारा॥
कृपा दृष्टि अब निरखौ मोई। परम अनुग्रह करियै सोई॥
गुरु पद होबै मम अनुरागा। गुरु दरशन से मम बड़भागा॥

तवपद कमल बसहिं हिय म्हारे। धन्य होंइ गुरु भाग हमारे॥
गुरुदेव करूँ मैं चरण प्रणामा। तुम पूरित हो निज जन कामा॥

दो०— वनमाली पद रज चहूँ दासन हू कौ दास।
कृपा दृष्टि मो पर करहु श्रीवनमाली दास॥

गुरु के गुण गावे मम वाणी। पद पंकज सेवहिं मम पाणी॥
मम सिर बन्दे श्रीगुरु चरणा। प्रिय यश सुनहिं निरन्तर करणा॥
जहाँ कहीं यदि हम तनु धारें। होबै गुरु पद प्रेम हमारें॥
गुरु सहाय करौ अब मेरी। शोकातुर मैं शरणी तेरी॥

लोक-वेद तिनकौ यश गावें। जो सदगुरु से प्रीति बढ़ावें॥
गुरु के वचन अटल करि मानै। तब ही कृष्ण तत्त्व कूँ जानै॥
गुरु पद पंकज नख गन ज्योती। सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती॥
अमिय मूरिमय रज सिर लाये। अघ भव रोग ताप मिट जाये॥

अज शंकर सनकादिक कोई। बिनु गुरु कृपा न भव तर सोई॥
गुरु पद कमल नमामि नमामी। गुरु पद कमल नमामि नमामी॥
करहु कृपा गुरुदेव हमारे। भूलूँ नहिं पद कमल तुम्हारे॥
वनमाली जगदीश नरायण। शरणागत के परम परायण॥

कृष्ण सखा तुम परम अधारा। निज जन हित तव नर अवतारा॥
कृष्ण प्रेम धन तुम्हरे पासा। तुम हो रामकृष्ण के दासा॥
गुरु चरनन में जो मन लाबै। तिन कहुँ श्यामा श्याम लखावे॥
तव पद कमल नमामि नमामी। तव पद कमल नमामि नमामी॥

तिन चरनन कौं नित प्रति ध्यावौं। पद रज हिय सिर नयननि लावौं॥
गुरु पद युगल सरोज परागा। पुनि पुनि बन्दि सहित अनुरागा॥
प्रिय वनमाली गुरु हमारे। मंगलमय पद कमल तुम्हारे॥
हे सदगुरु अब किरपा करियै। मेरी भव बाधा सब हरियै॥

सर्व देवमय गुरु नमामी। कृपा अनुग्रह कीजै स्वामी॥
तव पद पंकज कौ मैं दासा। तव पद पंकज की मोहि आसा॥
दुर्गम काज जगत के सारे। परम सुगम गुरु कृपा- सहारे॥
नमो नमः पद कमल तुम्हारे। रक्षक हो सब भाँति हमारे॥

हाथ जोड़कर करहुँ प्रणामा। पुनि पुनि पद बन्दहुँ गुरु रामा॥
पद पंकज सुमिरहुँ दिन-रात। जीवन धन सर्वस पितु मात॥
गुरु पद पंकज मम सिर धारौ। कृपा करहु कल्याण हमारौ॥
गुरु पद रज संजीवन चूरन। करहि सकल अभिलाषा पूरन॥

पावन गुरु चरणोदक जोई। करत पवित्र भुवन को सोई॥
तव पद रज हिय पावन होई। कृपा करहु अब जन पर सोई॥
धरम धुरंधर तुम वनमाली। महाकवी पण्डित वनमाली॥
देव देव गुरुदेव तुम्हारा। सकल काय कल्याण अगारा॥

पत्र-पुष्प अरपित जन कोई। प्रेम-भक्ति के बस तुम होई॥
गुरु वनमाली गुरु वनमाली। गुरु पद पंकज के हम माली॥
अस करुणा करियै जन त्राता। भूलूँ नहिं तव पद जलजाता॥
परम सुमंगल तव श्रीचरना। संशय शोक मोह तम हरना॥

मंगल मंजुल मोद बढ़ावन। परम प्रेम हिय सरस सुहावन॥
कोटि जनम के अघ गन जोई। गुरु दरशन से नाशत सोई॥
अब प्रसन्न होबहु गुरुदेवा। का उपकार करूँ का सेवा॥
निज स्वभाव बस करियै दाया। मैं जड़ पामर मोहित माया॥

गोविन्द कृपाते मैं गुरु पाबा। हरे सकल दुःख दारिद दाबा॥
अब करुणा करियै गुरु देवा। तव पद कमल करूँ नित सेवा॥
गुरु गोविन्द अति दीनदयाला। मम कर ग्रहण करो ततकाला॥
मो पर देव अनुग्रह करिये। मेरी भव बाधा सब हरियै॥

मात पिता प्रभु बन्धु हमारे। तुम बिनु मोर न कोउ सहारे॥
सेवा करहुँ कबन विधि थारी। तुम्हरे पाद प्रणाम हमारी॥
तुम्हरे योग्य वस्तु कछु नाहीं। मैं बिचारि देखी मन माहीं॥
मम तन मन धन नाथ तुम्हारा। सब बिधि मैं शरणागत थारा॥

तुम मम तात बन्धु प्रभु भ्राता। मम प्रानन के जीवन दाता॥
कृपा करहु हे गुरुवर म्हारी। पाहि-पाहि मैं शरण तिहारी॥
तव पद पंकज शरणी आये। लोक त्याज्य अघ जन अपनाये॥
तव पद जल जग पावन करिहै। तव सेवा करि जन निस्तरिहै॥

जप तप तीरथ संयम नाना। सब कर फल गुरु दरश बखाना॥
गुरु पद कमल नमामि नमामी। कृपा अनुग्रह करियै स्वामी॥
सर्व देवमय गुरु हमारे। मेंटहु पाप अमंगल सारे॥
मो पर परम अनुग्रह करियै। ताप त्रय ज्वाला मम हरियै॥

ब्रह्मा विष्णु शंकर देवा। सबही करहिं गुरु पद की सेवा॥
रामकृष्ण हू गुरु पद ध्याये। मंगल सुख बैभव सिधि पाये॥
गुरु चरनन के जो हैं अनुचर। बन्दत पद तिनके सुर मुनि नर॥
चतुर शिरोमणि सोई कहाबहिं। गुरु सेवा में जो मन लाबहिं॥

गुरु उपदेश मनहिं जो धारत। भव सिन्धू के पार वो जाबत॥
गुरु शरणी में जो जन आबत। ताके सब मंगल उपजाबत॥
गुरु बचन नहिं जिन विश्वासा। सुख सिधि नहिं आबत तिन पासा॥
कहहिं वेद इतिहास पुराना। गुरु सेवा में तन मन लाना॥

वेद पुरान संत मत एहू। करियै गुरु पद सहज सनेहू॥
गुरु चरनन में जो जन आये। लोक वेद तिनकौ यश गाये॥
गुरु पद बस जिनके मन माहीं। तिन कहुँ जग दुर्लभ कुछ नाहीं॥
गुरु पद पंकज के जो दासा। पुजबहिं सकल मनोरथ आसा॥

श्यामा श्याम ब्रह्म् भगवाना। गुरु पद पंकज ठौर ठिकाना॥
जो कछु चाहौ सब कुछ पाओ। गुरु के चरन कमल उर लाओ॥
कृष्ण कहाँ अरे कृष्ण कहाँ?। गुरु चरन जहाँ गुरु चरन जहाँ॥
गुरु पद पंकज जो मन लाये। रामकृष्ण सहजहि वो पाये॥
अब तौ कृपा करहु गुरु राया। पाहि पाहि तव शरणहिं आया॥
मोरि सुधारहु गुरु सब भाँती। मो पर कृपा करहु दिन राती॥

ध्यान धरौ गुरु मूरति कौ
पूजा करि चरननि मन लाऔ।
गुरु के बचन मंत्र सम मानौ
गुरु की कृपा कृष्ण धन पाऔ॥

अज्ञान तिमिर गुरु कृपा नसाये। सुख-संपति मंगल उपजाये॥
सदगुरु मंगल कृपा मनाऔ। रामकृष्ण गोविन्दहि पाऔ॥
अब तौ कृपा करहु सब भाँती। रामकृष्ण भजिहौं दिन-राती॥
ब्रज वृन्दावन मन बसि जाये। राधा गोविन्द पद युग ध्याये॥

श्रीवनमालिदास जी के शिष्य परिकर की वंदना

श्रीवनमाली के शिष्य सुजाना। सब मिलि देहु कृपा कर दाना॥
तव पद कमल नमामि नमामी। कृपा करहु तुम सब मम स्वामी॥
श्रीवनमाली के तुम सब पायक। कृपासिन्धु पावन सब लायक॥
तुम बिनु मोर न और सहाया। यही जान तव शरणहिं आया॥

होइ प्रसन्न मोहि यह वर देहू। गुरु पद बाढ़हि सहज सनेहू॥
मोरि सुधारहि तुम सब भाँती। तव पद कृपा चहहुँ दिन राती॥
मो से शठ के तुम उद्धारक। भक्ति सिन्धु सब सदगुन धारक॥
सदगुन भवन दीन प्रति पालक। अघ तम घोर निशा के घालक॥

कहौं मनोरथ तुम बिनु कासू। तमहि नाशि तुम देत प्रकाशू॥
सब बिधि करियै अपनी दाया। करियै नित पद पंकज छाया॥
तुम रीझहु सनेह सुठि थोरें। चरन कमल तव सम्बल मोरें॥
का करियें हम तुम्हरी सेवा। गुरु चरित्र चिन्तामणि देवा॥

यह सब नाथ तुम्हारी करुणा। हम निरखे जो गुरुवर चरणा॥
हमरी सकल मनोरथ आशा। निष्किंचन तुम गुरु के दासा॥
कृपा करहु तुम सब मम स्वामी। मैं मूरख पामर खल कामी॥
हम तो कछु लायक नहिं स्वामी। तव पद कमल नमामि नमामी॥

मैं गरीब कछु लायक नाहीं । जप तप सेवा साधन नाहीं॥
गुरु शिष पाद सरोज तिहारे। सरबसु धन सौभाग्य हमारे॥
भव भय बस तव शरणहिं आया। हरहु शोक भय दारिद माया॥
कृपा अनुग्रह करियै स्वामी। तव पद कमल नमामि नमामी॥

त्राहि त्राहि मैं दास तुम्हारा। क्षमा करहु अपराध हमारा॥
परम अनुग्रह मो पर करियै। दुःख कलेश बाधा भय हरियै॥
आयसु होइ करूँ सोइ सेवा। हम किंकर तुम हमरे देवा॥
यह आशीष सबन की पाऊँ। रामकृष्ण पद प्रीति बढ़ाऊँ॥

सब करियै मो पर पद छाया। सब करयै मो पर निज दाया॥
परहित लागि तुम्हारा जीवन। परजीवन के तुम सब भूषन॥
भजन करन की रीति बताओ। केहि बिधि संत रहहिं समझाओ॥
निज के अनुभव मोहि सुनाओ। भक्त संत रसिकन गुन गाओ॥

दीनबन्धु सब करुणा करियै। मन काया के दुःख मम हरियै॥
वनमाली के गुन गन गाऊँ। शुभ आशीष कृपा तव पाऊँ॥

दो०— जो गुरु भक्त जहाँ जहँ सब पद कमल नमामि।
कृपा अनुग्रह करहु सब सबही मेरे स्वामि॥

नाम कछुन के जानहुँ बहुतन के नहिं जान।
बन्दहुँ सबके पद कमल परम शिरोमणि मान॥

पाप कलेवर जानि निज आया तुम्हरे द्वार।
पुनि-पुनि करहुँ निहोर तव करहु मोर उद्धार॥

सबके चरण कमल सिर नाईं। कृपा करहु शुभ दृष्टि लाईं॥

संत-वैष्णव वन्दना-कृपा-महिमा

वैष्णव-संत महत उपकारी। कृपा सिन्धु, करुणा उर भारी॥
मंगल हू के मंगल दाता। जड़ चेतन जन-जन के त्राता॥
संत सदा तीरथ कहलाये। चलते फिरते परम सुहाये॥
तीरथ को ये तीरथ करहीं। पावन करते सदा बिचरहीं॥

कल्पतरु सम संत कृपाला। अति कोमल मृदु दीन दयाला॥
परम पतित पावन सुखधामा। कलिहत जीवन कहुँ विश्रामा॥
गोविन्द प्रीति सेवा व्रत धारी। मन क्रम वचन संत उपकारी॥
वैष्णव मन अति करुणा भारी। सब जीवन को करहिं सुखारी॥

पर दुःख देखि द्रवहि सो संता। परहित सहज स्वभाव अनंता॥
जड़-चेतन सबका हित लाई। वैष्णव कर सबकी सेवकाई॥
करुणामय अति संत कृपाला। दीन दुःखी प्रति दीनदयाला॥
भव रोगन के वैद्य सुजाना। आगम निगम पुरान बखाना॥

तव पद उर महिं राखहुँ गोई। पद पंकज मन मधुकर होई॥
नमो नमः पद कमल तुम्हारे। वैष्णव रक्षक तुमहि हमारे॥
सब विधि संत मोहि अपनाओ। निज चरनन को दास बनाओ॥
संतहु मोकहुँ तुम्हरी आसा। कृपा करहु पुजबहि अभिलासा॥

संत कुटी हैं उत्तम तीरथ। पद जल कोटि-कोटि अघ चीरत॥
चित्त तुरंग होत बस जबही। वैष्णव युक्ति बताबत तबही॥
गोविन्द भक्ति सोई जन पाबत। संतन की शरणी जो आबत॥
बन्दहुँ पाद सरोज तुम्हारे। कृपा करहु करुणा उर धारे॥

भव भय से डरपत जन सोई। उनका तुम बिनु प्रभु नहीं कोई॥
दीन दुखी तुम गले लगाओ। गोविन्द भक्ति संजीवनि प्याओ॥
करूँ सोच मैं निश-दिन ऐसे। बृक गण आवृत हरिणी जैसे॥
करि रक्षा मोहि संत बचाओ। कृपा दया करि मोहि अपनाओ॥

तुम्हरी शरणहिं जो जन आये। सकल शोक अघ ओघ नशाये॥
वैष्णव पद जो प्रीति करहीं। यम सिर पद धरि सो भव तरहीं॥
निज यश नहिं गोविन्दहि भावे। वैष्णव यश गोविन्द लुभावे॥
हरि भक्तन कौ जो यश गावत। तिनकहुँ श्यामा-श्याम लखावत॥

त्राहि त्राहि हम शरणहिं आये। शरणागत कहुँ संत बचाये॥
तुम्हरे बिनु हमारा नहिं त्राता। पुनि पुनि पद वन्दहु जलजाता॥
मम तन मन धन संत तुम्हारा। सब बिधि संत करहु भव पारा॥
तव पद पंकज मम उर चन्दन। नित-नित कोटि-कोटि पद वंदन॥

दो०— काहू के तप योग बल कुल करनीकी आस।
मोहि संत चरन रज आस है संत करहु विश्वास॥

बैठि तुम्हारी नाव में चाहत होन मैं पार।
करहु पार भव सिन्धु से करि करि प्यार दुलार॥

तुम मेरे नाविक भये मैं संसारी जीव।
तब चरन कमल की छाँह में बिहरत रहूँ सजीव॥

तव चरन कमल मम सिर रहै सुमिरूँ दिन अरु रात।
मम जीवन के प्राण हो मेरे गुरु पितु मात॥

मम गति मति सब वैष्णव राई। मात पिता गुरु बन्धु भाई॥
मम आश्रय वैष्णव गन ठाकुर। कृपा करहु सब मिलि करुणाकर॥
संत सबन के गुरु पितु माता। स्वामि सखा सुहृद प्रिय भ्राता॥
क्षण-क्षण पल-पल तुमहिं प्रणामा। तव कृपा पाइ मैं पूरन कामा॥

वनमाली के चरित सुहावन। मम मति मंद मलीन अपावन॥
कृपा करहु मति विमल बनाओ। दिव्य चरित गुरु के लिखबाओ॥
मंगलमय चरित्र अति पावन। संत भक्त रसिकन मन भावन॥
जाकर चरित सुनत मन लाई। होइ कृष्ण पद प्रीति सुहाई॥

दो०— वनमाली के शुभ चरित गायन की अभिलाष।
संतन की शुभ दृष्टि से पुजबहि मन की आस॥

सहज स्वभाव संत उपकारी। परहित रत सेवा व्रतधारी॥
मन बुद्धि चित श्याम समाया। प्रभु सेवा में तनहि लगाया॥
प्रेम विकार रहहिं तन छाई। गोविन्द लगन तन मनहि समाई॥
प्रेमानन्द मगन मन भूले। प्रभु लालसा तन मन झूले॥
निज जन के तुम भक्ति प्रदाता। नित प्रति बंदहुँ पद जलजाता॥

धन्यता

दो०— धन्य धन्य जंजीरी माँ धन्य धन्य तुलाराम।
धन्य धन्य जड़ चेतन धन्य धन्य 'बास' ग्राम॥

धन्य गृह धन्य तिथि धन्य शुभ ग्रह नक्षत्र।
वनमाली जहँ जन्म ले कीने सकल पवित्र॥

धन्य देश जहँ गंगा-यमुना बहती अमृतधार।
धन्य धन्य है पावन धरती जहाँ भक्त अवतार॥

कुल पवित्रं जननी कृतार्था,
वसुन्धरा भाग्यवती च धन्या।
स्वर्गस्थिताः तत्पिरोऽपि धन्याः,
यस्मिन कुले वैष्णवनाम धेयम्॥

जिस कुल में श्रीकृष्ण का भक्त जन्म धारण करता है वह कुल पवित्र हो जाता है, जन्म देने वाली माँ कृतार्थ हो जाती है तथा पृथ्वी भाग्यवती व धन्य हो उठती है। स्वर्ग में स्थित पितर भी कृष्ण भक्त के कारण धन्य-धन्य हो जाते हैं।

वैष्णव जहँ लेबहिं अवतारा। धन्य-धन्य सब कुल परिवारा॥
धन्य पितर सौभाग्य मनाये। धन्य गाँव तीरथ बनि जाये॥
कण-कण धन्य धन्य सब गावहिं। तीरथ सकल तहाँ चलि आबहिं॥
महिमा तहँ की जाहि न गाई। करहिं साधु सुर संत बड़ाई॥

जन्मभूमि बास ग्राम की शोभा

धन्य धन्य पुर 'बास' सुहावन। त्रिबिध समीर बहति अति पावन॥
'बास ग्राम' के वन अरु उपवन। लज्जित इनते नन्दन कानन॥
बागन बिटप बेलि बहु रंगा। पिक शुक बोलत गुंज्जत भृंगा॥
कूजत खग कुल चातक मोरा। कोयल सारस हंस चकोरा॥

पंकज युक्त जल मिष्ट तड़ागा। चम्पक कुन्द प्रफुल्लित बागा॥
बिटप लता फूले बहु भाँती। नव पल्लव भये अगनित जाती॥
निम्ब कदम्ब अशोक रसाला। पीपर पाकरि पनस तमाला॥
बट दाड़िम जामुन अरु केरा। बकुल पलाश खजूर लिसोरा॥

शीशम महुआ धौह शहतूत। गूलरि इमली आँवल पूत॥
पीलू बाँस बबूल बेरिया। नाना बिटपन 'बास' घेरिया॥
तुलसी चम्पा मरुआ केशर। कमल कदम परिमल अति मनहर॥
मण्डप लता बने अति सोहत। गोल मटोल कुँज मन मोहत॥

तोता मैंना हंस चकोर। चकवा चकवी बुलबुल मोर॥
टिट्टिभि बक पपिहा अरु तीतर। कोयल बया बटेर कबूतर॥
बैठे बिटपनि खग बहु भाँती। रंग बिरंगे नाना जाती॥
बोलहिं मधुर मधुर ध्वनि प्यारी। लेहिं पथिक जन पास हँकारी॥

सेव संतरा बादाम खजूर। काजू पिस्ता अरु अंगूर॥
लौंग इलायची बिबिध प्रकारा। सेवहिं सींचहिं मालाकारा॥
नाना भाँति बिटप फल फूले। पथिक थकित मानहुँ मग भूले॥
सघन वृक्ष जहँ नाना जाती। कूप वाटिका सर बहु भाँती॥

चारि दिशा तहँ चार तलाबा। चार धरमशाला तहँ आला॥
ग्राम संपदा न जाइ बखानी। भवन बने मनु मनि की खानी॥
एक भवन तहँ बहुत मनोहर। सकल संपदा ता घर भीतर॥
रिद्धि–सिद्धि करती जहँ सेवा। अतिथि आबहिं पाबहिं मेवा॥

श्रीवनमालिदासजी के माता पिता

सो०— पंडितराज महान, 'बासग्राम' के विप्रपति।
देत विविध विधि दान, अतिथि पावहिं मान सब॥

गौड़ वंश विप्र श्री तुलाराम नाम।
धरमशील करमशील दया करुणा धाम॥
तासु पत्नी पतिव्रता जंजीरी नाम।
प्रेमयी करुणामयी ललित ललाम॥

प्रेममयी जंजीर तासों जंजीरी नाम।
सुखदा ही जनमी मनों सुख की ही धाम॥
पर दुःख देखि होवै परम विकल।
युवा वृद्ध नारि मान देवें सकल॥
पति सेवा कृष्ण पूजा करे रात्रि दिने।
रामकृष्ण देखि भई विस्मित सपने॥

कृष्ण कहे सुन माता हमरी। तुमसों बात कहहिं अब सबरी॥
जनम जनम कौ सखा हमारौ। आइकें पुत्र होयगो थारौ॥
समयोचित हमें गान सुनावै। खेलै कूदे धेनु चरावै॥
हमकूँ चैन पड़े ना वा बिन। बिहरें हम सब श्रीवृन्दावन॥

श्रीवृन्दावन है भूमि हमारी। जहाँ रहत सब जीव सुखारी॥
परम प्रेममय श्रीवृन्दावन। रसिक भक्त सबके मन भावन॥
मो मन श्री वृन्दावन भावै। वृन्दावन बिनु कछु न सुहावै॥
वृन्दावन तजि कहूँ न जाऊँ। वृन्दावन बिनु कछू न चाहूँ॥

दो०— कल्पवृक्ष सब वृक्ष हैं कामधेनु सब गाय।
रज कण सब चिन्तामणी कण कण प्रेम जगाय॥

प्राणन हू कौ प्राण है श्रीवनमाली नाम।
जनम लेइ तुम्हरे यहाँ जन मंगल गुनधाम॥

मृदुहास करि दे आशीषा। गुप्त भये वृन्दावन ईशा॥
हड़बड़ाइ जंजीरी जागी। विस्मय संशय करने लागी॥

दो०— पंडितराज महान कूँ सपन बतायौ प्रात।
कहा कहूँ हे नाथ जी सुनहु स्वप्न की बात॥

रामकृष्ण प्रिय दोनों भ्राता। दरशन दीन अंग पुलकाता॥
मैं पुनि-पुनि पद वंदन कीना। प्रेम-भक्ति कर उन वर दीना॥
रामकृष्ण का सखा है प्यारा। जनम लेइ हमरे गृह द्वारा॥
कर पावन अपने घर गाँवहि। पितर सकल पावहिं विश्रामहि॥

देखत देखत छिपे दोऊ भाई। तेज गयौ मम उदर समाई॥
स्वप्न अलौकिक समझन आवै। प्रभु की लीला विस्मय लावै॥
सपने की सुनि सबरी बातें। तुलाराम मन सोचत जाते॥
तुम सम भाग्यबंत कोहु नाहीं। कृष्ण सखा जनमे घर माहीं॥

गोविन्द सखा अब हम घर जनमै। आनन्द सिन्धु उर मन भयौ तन्मै॥
प्रेम विवश मुख बचन न आवें। पुनि-पुनि गोविन्दहिं सिर नावें॥
जेहि कुल वैष्णव लेइ अवतारा। अमित प्रभाव तासु विस्तारा॥
जेहि थल वैष्णव जनमे आई। सो थल पुण्य तीर्थ बनि जाई॥

आयसु कृष्ण देत जब जबही। साधु संत जनमे तब तबही॥
करुणा दया कृष्ण जब करहीं। तब वैष्णव जन जन निस्तरहीं॥
दंपति कर नारायण पूजन। तुलसी पूजा करहिं स्तवन॥
कम्प स्वेद पुलकावलि छाई। अश्रु नयन जल झड़ी लगाई॥

हरष बिवश तन दशा भुलानी। यही प्रेम की अकथ कहानी॥
तन मन पुलकइ अति हरषाई। प्रेम बिवश मुख बचन न आई॥
कथा भागवत तियहि सुनाबहिं। सुनि जंजीरी बहु सुख पाबहिं॥
ध्रुव प्रहलाद कथा मन भाये। ऐसौ ही सुत हम घर आये॥

परम प्रेम दंपति अनुरागे। मानहुँ युगल प्रेमरस पागे॥
कथा पुण्य करते दिन राती। पुण्य दिवस बीतत एहि भाँती॥
गौ सेवा करि तेहि प्रति पालहि। पक्षीन को नित चुग्गा डालहिं॥
चेंटीन को मिष्ठान्न खिलाबहिं। करहिं तृप्त निज प्यार दिखाबहिं॥

सावधान होय पंथ चलाबहिं । छोटे जीव न पग तर आबहिं॥
सब जीवन प्रति करुणा भारी । करते नहि कोई जीव दुःखारी॥
दीन दुःखी भिक्षुक गृह आबहिं । दान मान करि सबहिं मनावहिं॥
साधू सेवा कर संकीर्तन । नाम रुचि वैष्णव पद वंदन॥

ठाकुर सेवा में मन लाई। रात-दिवस कर प्रभु सिवकाई॥
दम्पति गोविन्द पद अनुरागे। एहि प्रकार दिन बीतन लागे॥
भागवत गीता हरि संकीर्तन। तुलसी रामायण सुनहिं मुदित मन॥
यज्ञ-हवन व्रत-दान कराबहिं। शुभ मंगलमय दिवस बिताबहिं॥

जन्म-महोत्सव

तेज पुँज जंजीरी ऐसी। पहले देखी कभी न वैसी॥
आदर सब दम्पति का करहीं। बार-बार तेहि चरननि परहीं॥
वस्तु मान धन सबही देवहिं। रिपू हू वैर भाव तजि सेवहिं॥
मंगल शकुन होंइ सब काहू। संतन मन अति परम उछाहू॥

पवन परस तन पुलकित लोगा। तन मन मुक्त भये सब रोगा॥
पाराबत नाचत वन मोरा। हरषित पिक शुक हंस चकोरा॥
उपवन कुँजलता बहु फूलीं। विविध सुमन फल भारन झूली॥
मधुप करहिं स्वर नाना भाँती। खग कलरब ध्वनि मधुर सुहाती॥

झरना नदी सुधा सम बारी। मन हरषित सब नर अरु नारी॥
कमल खिले सर सरितन माहीं। जड़ चेतन तन मन पुलकाहीं॥
मंगल शकुन भये एकबारा। सरिता बहहिं सुधा की धारा॥
शिशु कर जनम सुअबसरु आबा। सकल लोक उर आनन्द छाबा॥

जोग लगन ग्रह तिथि अरु बारा। सानुकूल भये सब एक बारा॥
हरे कृष्ण ध्वनि सब दिशि छाई। सब हरषित मन लोग लुगाई॥

दो०— कार्तिक मास सित पक्ष बैकुंठ चतुर्दशी रविवार।
ब्रह्म महूरत भरणी नक्षत्र शिशु वनमाली अवतार॥

विक्रम संवत उन्नीस सौ पिचहत्तर। जनमे सुत बनि तुलाराम घर॥
हरियाणा प्रदेश जहाँ ह्य 'बास' ग्राम। जननी जंजीरी श्री पिता तुलाराम॥
जात करम शुभ करम कराये। नाभि नाल छेदन करबाये॥
मधुर बाल शिशु रोदन ठाना। तेज पुँज सुकुमार निधाना॥

दो०— गौर बरन सुन्दर तन सुन्दर काम समान।
देखि पुत्र को मात उर भा अति हरष महान॥

संकीर्तन ध्वनि चहु दिशि छाई। प्रेम मगन वैष्णव समुदाई॥
अमरागन मन बहु हरषाई। पुष्पन की गृह झड़ी लगाई॥
जय जय ध्वनि नभ मंडल छाई। करहिं अप्सरा गान सुहाई॥
ग्यान विराग प्रेम रसधारा। भक्ति रसमय यह अवतारा॥

तन पुलिकित अरु मन आनन्दित। जड़ चेतन भये सबही पुलकित॥
जूथ जूथ मिलि भामिनि आईं। करहिं गान कलकंठ लजाईं॥
सहज सिंगार किये उठि धाईं। जिनहिं देख रति–शचि शरमाईं॥
चन्द्र बदन सब कोकिल बयनी। मंदहास चंचल मृगनयनी॥

परम सुन्दरी नारि ललामा। गौर श्याम रंग सबही श्यामा॥
शोभा पुँज रूप गुन खानी। रूप निरखि मोहहि मुनि ज्ञानी॥
सब चंचल मानहुँ घन दामिनि। सबही रूप छटा की स्वामिनि॥
रूप झरहि तन कान्ति झलकत। अंग अंग शोभा मुनि मन करषत॥

बिविध भाँति तन मनहिं सजायें। रूपामृत छवि सबहिं लुभायें॥
शिशु निरखन कूँ मन अति लोभा। दौरि दौरि आबहिं गृह शोभा॥
बिधु बदनी मृगशावक नयनी। सौन्दर्य लक्ष्मी अमृत बयनी॥
अमृत रसमय शिशु तनु पाई। देखन आबहिं लोग लुगाई॥

मुग्ध होंइ लखि शिशु कर रूपा। धरेहु मदन मनु रूप अनूपा॥
सुधा वदन तन कान्ती धारा। सुबलित देह परम सुकुमारा॥
अधर बिम्बफल पंकज नयना। अंग–अंग शोभा का क्या कहना॥
सोलह कला पूर्ण मुख चन्द्र। मनहुँ इन्द्र कर अनुज उपेन्द्र॥

कोमल अंगन सों आये सुगन्धी। दिव्य गंध लाया मनु गन्धी॥
गौर बरन लखि रूप मनोहर। भये मुदित मन सब नारी नर॥
'बास गाँव' में आनन्द छावा। घर घर गावहिं मधुर बधावा॥
भेरि मृदंग बाजने बाजें। शहनाई के स्वर प्रिय लागें॥

गीत नृत्य बाजे बहु बाजें। देवन के संगीत हु लाजें॥
जन्म महोत्सव रहे मनाई। उर आनन्द न मनहिं समाई॥
परमानन्द मगन सब लोगा। आनन्द मगन भये रुचहि न भोगा॥
देहिं अशीष सकल जन आई। चिरजीवी होवै शिशु माई॥

शिशु सुबुद्धि सुस्थिर गुणवान। देहिं आशीष होयहि भगवान॥
पुण्य कल्पद्रुम फला तुम्हारा। शिशु को लखि धनि भाग हमारा॥
मागध सूत वन्दिगन आये। पावन गुन गावत हरषाये॥
भारत भूमि जनम जो लेई। जन्म सार्थक होबहि तेई॥

रामकृष्ण यहाँ क्रीड़ा करते। ग्यानी संत महंत बिचरते॥
अमरागन ललचाये हनि हनि। धनि धनि भारत भूमि मुकुट मनि॥
पग पग पावन तीर्थ हमारे। अखिल लोक नहिं इतने सारे।
जन्म लेइ परमारथ करई। अनायास भव सागर तरई॥

'बासग्राम' को करहुँ प्रणामा। वनमाली प्रकटे जेहि ग्रामा॥
'बासगाँव' सम त्रिभुवन नाईं। जहँ जनमे वनमालि गुसाईं॥

नामकरण-महोत्सव

दान मान सब लोगन पाबा। घर घर आनंद गबहि बधावा॥
नामकरण शिशु कर करबाया। परम सुमंगल नाम धराया॥
बनबारी एहि शिशु कर नामा। कुल समाज दायक विश्रामा॥
रूप-शील गुन अमित प्रभावा। होइ भगत कुल गुरु अस गावा॥

नर अरु नारि सकल चलि आये। तुलाराम घर गबत बधाये॥
आरती करि न्यौछावर करहीं। बार-बार शिशु चरनहिं परहीं॥
कहहिं ज्योतिषी अरु आचार। करहि ये वैष्णव धर्म प्रचार॥
कोटि-कोटि जीवों को तारे। परमारथ पथ जग विस्तारे॥

जन्म कुण्डली वृहस्पति उच्च। पुरुषसिंह होयहि सर्वोच्च॥
अन्य ग्रहन की दृष्टि सुदृष्टि। कृपा दया की करिहहि वृष्टि॥
यह शिशु कल्पतरू चिन्तामणि। जग जन जीवन की यह नवमणि॥
सब जग में प्रकाश फैलाये। दीन दुःखी प्रति करुणा लाये॥

परम सरल सब कहुँ सुखधामा। हरि भक्तन दायक विश्रामा॥
तेज पुँज ज्ञानी गुन खानी। बन कवि कोविद तापस दानी॥
बत्तीस महापुरुष के लक्षन। शिशु तन दीखत ये सब अंगन॥
पूर्णचन्द्र के जो कर दर्शन। होइ पाप क्षय मिले भक्तिधन॥

शिशु कर जानन हेतु स्वभावा। अन्न वस्त्र सब ही मंगवावा॥
छाँड़ि सबहि भागवत कर दीना। पंडित बनहि सबनि मन चीना॥
अमृतमय तन अति सुकुमारा। परम मनोहर तन मन वारा॥
अमिय बोरि सब अंग बनाये। निरिख नारि नर सबहिं लुभाये॥

क्षण-क्षण हँसि रोबहि मुख इन्दु। अधर अरुण माथे कृष्ण बिन्दु॥
लाल लाल पग वज्र लखाये। चक्र मीन यव शोभा पाये॥
कहहुँ कहाँ लगि बाल बड़ाई। ज्योतिष ज्ञाता मन सकुचाई॥
नर अरु नारि सकल अनुरागे। शिशु के रूप सुधा में पागे॥

माँ का वात्सल्य शिशु का शिशुपन एवं बालक्रीड़ा

माँ शिशु के मुख स्तन देबहि। खोलहि मुख फिर शिशु तेहि लेबहि॥
बार-बार करि दूध पियाबहि। पियहि मुग्ध मन माँ सुख पाबहि॥
चूमहि माँ निज शिशु कर वदना। मोद समेत झुलाबहि पलना॥
हँसत शिशू मधु अमृत झरही। मुदित होइ माँ अंकहिं भरही॥

मात झुलाबत झोटा देही। किलकत बाल हँसत मनमें ही॥
माँ मुख चुम्बहि चुम्बहि गालहि। पुचकारत कभु सूँघहि भालहि॥
दबदोरहि मन हरषित भारी। सोबहु प्रान जाहुँ बलिहारी॥
शिशु सोवत कभु अधरहु फरकत। हिलत-डुलत कभु लेबहि करबट॥

अति सुकुमार रूप रस गेहा। निरखत शिशु को बढ़त सनेहा॥
सब भूषन माता पहिराये। पीली, झंगुली मनहिं चुराये।

हस्त-पाद शिशु कबहु चलाबहि। पाद अँगूठा मुख में लाबहि॥
लुढ़कि परत कबहू पलना सों। घिसटत सरकत निज अंगना सों॥

तन सँभार नहिं डग मग चालहि। गिरत उठहिं पर उठनन पाबहि॥
चित्त लिटाबहि मात पलंग पर। लाड़ लड़ाबहि भाँति-भाँति तर॥
गोद सँभारि सुजन जन लेंही। निरखत शिशु पुनि चुम्बहिं तेही॥
पुनः चलाबहिं सम्हरि न पाबत। लुढ़कि परत पग हाथ चलाबत॥

प्रियजन की अँगुली कसि पकड़हि। डगमग ठोकर खाबत चलिहहि॥
कबहू हँसहि अरु पुनि पुनि किलकहिं। कहन चहत नहिं बोलत चितबहिं॥
मामा बाबा कहि नहिं पाबहि। कहन चहत कछु बोलत आनहि॥
माँ जंत्र-मंत्र टोटिका कराबत। वनमाली की नजर उतारत॥

नारायण रक्षा कर प्यारे। भूत प्रेत आदिक माया रे॥
तोतरि बोली सुनि सब हरषहिं। मधुर अमिय मनु चहुँ दिशि बरषहिं॥
छाया को कभु पकड़न भाजहि। शोभा देखि मदन मन लाजहि॥
नाचत कबहू छाँव निहारी। जननी सब जन होंइ सुखारी॥

भागत भागत गिरि-गिरि जाबहि। मैया तन मन मोद बढ़ाबहि॥
पलक मूँदि कबहू फिर खोलहि। मा मा कहि बनवारी बोलहि॥
तोतरि बोली बोलहि लाला। रामकृष्ण कहि नाचहि बाला॥
धावत पीछे जब कोहु जाबत। लौटाबहि पर लौटि न आबत॥

प्रिय शावक खग मृग जब देखहि। डरपत चुम्बहि अंकहि लेबहि॥
श्वान सुतहि गोदी बैठाई। मुख चूमत हरषित अधिकाई॥
पुनि-पुनि चुम्बत मुख अरु गालहि। जननी मना करत नहिं मानहि॥
पशु-पक्षी की बोली बोलहि। मुख मटकाइ लेत मनु मोलहि॥

किलकत कबहु धरनि उठि धावत। कबहु मधुर ध्वनि मन मन गावत॥
ठुमुक ठुमुक शिशु चलहि पराई। खेलत धूरि रेत में जाई॥
अति प्रिय मधुर तोतरी बानी। पुनि-पुनि पूछहिं चतुर सयानी॥
नाम पूछि पूछत बहु बाता। उतरु देत कछु-कछु तुतलाता॥

आँख कान मुख कहाँ बताओ?। अधर दन्त हमको दिखलाओ॥
हाथ-पैर चोटी बतलाना। सिर अँगुली अरु पेट दिखाना॥
स्तन नाभि नासिका बताओ?। कच कपोल चिबुक दिखलाओ?॥
रसना गदरन पीठ कहाँ?। घुटना कोंहनी बता कहाँ?॥

अँगुली से शिशु तिनहिं बताबत। लखि-लखि बनिता सकल सिहावत॥
मात अनंदित मन मन होई। निज सुत मधु क्रीड़ा में खोई॥
सकल अमिय मनु पीबन चहईं। उमगि-उमगि शिशु अंकहिं भरईं॥
मुख चूमहि अरु चूमहि गालहि। पाद हस्त सूँघहि पुनि भालहि॥

यह शिशु सुख-संपति कर गेहा। बाढ़त एहि लखि सहज सनेहा॥
एक कहइ अति मन हरषाई। एहि शिशु रखिहों नयननि माईं॥
अपर कहहि उर सों चिपटाबहुँ। अन्तर मन की तपन बुझाबहुँ॥
तीजी कह निज सिर पर रखिहों। बार-बार पद कमल परसिहों॥

कोई कहत निज गोद खिलाबहुँ। पद तलुवे पुनि-पुनि सहलाबहुँ॥
घर आँगन शिशु बिचरहि जाई। लेहिं सकल तिय गोद उठाई॥
कौंन तपस्या कीनी आली?। जिन घर जनमे श्रीवनमाली॥
कौन करम शुभ हमने कीना। अमिय मूर्ति निज दरशन दीना॥

हम पर ईश अनुग्रह कीने। श्रीबनबारी दरशन दीने॥
जनम-जनम हम बिधिहि मनाबहिं। दरशन करि हम अति सुख पाबहिं॥
निज संतान हमें प्रिय नाहीं। जितनौं बनबारी मन माहीं॥
यह निरखी हम मूर्ति मनोहर। जनम-जनम की दिव्य धरोहर॥

अरुण अधर शुभ गोल कपोल। अति प्रिय मधुर तोतरे बोल॥
किलकत मनहुँ अमिय रस घोल। मृदु मुसकानि युक्त हरि बोल॥
मन्द मन्द मुस्कान सुहावन। भृकुटि वक्र अरु तिरछी चितवन॥
गौर बरन यह सुभग कुमारा। धँसकर हिय महिं लोचन द्वारा॥

हरि लीना हमरा मन बहना। बिनु देखे अब परतन चैंना॥
हमरा भाग्य होइ सखि जोई। नित प्रति इनका दरशन होई॥
जन्म सफल अब हुआ हमारा। 'बासग्राम' शिशु कर अवतारा॥
भया पवित्र वंश सखि आजू। हरषे सुर नर पितर समाजू॥

अहो भाग्य सखि आज हमारे। बनबारी जो नयन निहारे॥
लहेहु जनम कर सुख अधिकाई। चिन्तामणि मन हमहिं छिपाई॥
जग जन लोचन सुधा अनूप। मधुर-मधुर अरु नव नव रूप॥
अति प्रिय मधुर रूप रस गेहा। मनहुँ धारि तन आयहु नेहा॥

दो०— करत निछाबरि विविध-बिधि बाढ़यौ प्रेम प्रमोद।
बनबारी मन में बस्यौ करत रहीं आमोद॥

धन्य-धन्य सब 'बास' की नारी। जिनकी गोचर श्रीबनबारी॥
बनबारी के चरण मझारी। नमस्कार नित होइ हमारी॥

दो०— श्रीवनमाली के चरित कौ करहि जो नित प्रति गान।
सकल संपदा भोगकर रति पावहिं भगवान॥

बालमुकुन्द नाम बड़ भ्राता। आनंद हू के आनन्द दाता॥
देंहिं अशीष सकल जन आई। चिरजीवी होबहिं दोउ भाई॥
दुर्लभ झाँकी युगल कुमारा। मरुभूमी गंगा की धारा॥
जंजीरी के लक्ष्मण राम। प्राणप्रिय कृष्ण बलराम॥

धन्य धन्य जंजीरी माई। सेवहिं गौरी नित प्रति जाई॥
सुत रक्षा माँगहि नित माता। तुम हो मात जगत की त्राता॥
तव महिमा वेदन में गाई। सुर नर मुनि कोउ पार न पाई॥
शैल सुता शंकर अर्द्धांगिनि। भव निस्तारिनि विपत विदारिनि॥

विनय करहुँ मैं मात भवानी। रक्ष बाल निज सिख सुत जानी॥
पूजा करि गृह गवनी माता। वाम नयन अंग पुलकाता॥
दिव्य बाल लीला सुत करई। मुदित मात अंकहि तेहि भरई॥
जय वनमाली जंजीरी नन्दन। पद पंकज महिं शत शत वंदन॥

श्रीतुलाराम सुत प्यारे जय जय। शिष्य सहित वनमाली जय जय॥
जय जय कृष्ण सखा वनमाली। जय जय प्रिय भक्तन सुख शाली॥
जो तुम्हार चरणहिं नित ध्याये। विपति दूर मंगल उपजाये॥
अघ भव भय संकट कटि जाये। जो वनमाली गुन गन गाये॥

जय जय रामकृष्ण संग नित्य विहारी।
जय जय जग मंगल उपकारी॥

बड़े भये चंचलता आई। सखन संग खेलहिं नित जाई॥
सखन पीठि चढ़ि चढ़ी खावहिं। बाल चलहि तब अति सुख पावहि॥
बैल गाड़ि चढ़ि बहुत सिहाई। गर्दभ पींठ चढ़हिं कभु जाई॥
झूला ऊपर कबहू झूलहिं। जात पथहि कबहू मग भूलहिं॥

सखन संग खेलहिं वनमाली। तरु शाखा चढ़ि हिलबत डाली।
तरु ते कूदि कबहू कित भागत। बड़े सखा हू पकड़ि न पावत॥
जल क्रीडा करते वनमाली। जल उलीचि सखन पर डाली॥
आम्र जम्बु तरु चढ़ि फल खाई। नहिं खावत तब जेब भराई॥

मन भावन बसंत ऋतु आई। सुन्दर सुखद मनोहर ताई॥
नहिं गर्मी नहिं सर्दी लागत। यह ऋतु मन को बड़ी सुहावत॥
बहइ बयार महा सुख दैनी। मानहुँ पाप काटनी छैनी॥
एक हवा सौ दवा बताई। प्यारी लागत तनहिं सुहाई॥

गुंजत मधुप लता कुसुमन पर। शुक-पिक बोलत मधुर मधुर स्वर॥
नव नव पल्लव सुखद सुहाये। मानहु कृष्ण विदुर घर आये॥
गाँव मदारी नट बहु आवहिं। खेल दिखाइ चकित करि जावहिं॥
बन्दर रीछ नाच दिखलाते। वनमाली कहुँ ये सब भाते॥

आइ सपेरा सर्प दिखाये। वनमाली लखि बहुत डराये॥
नुमाइश मेला देखन जाते। सरकस देखि बहुत सुख पाते॥
बरषा ऋतु आई मन प्यारी। घन गरजत बह त्रिविध बयारी॥
पीउ पीउ मधु पपीहा बोले। श्याम घटा मन अमृत घोले॥

बक पाँती नभ लगत सुहाई। पवन वेग घन स्थिर नाईं॥
श्वेत श्याम घन बड़े सुहावत। परम विचित्र आकार बनावत॥
उमड़ि-घुमड़ि निर्मल जल बरषत। मलिन होइ धरती के परसंत॥
नन्हीं फुइयाँ तन कहुँ परसत। सिंहरनि कँप कँपि तन मन सरसत॥

रिमझिम-रिमझिम मेहा बरसे। कामी तिय बिनु अति ही तरसे।
दादुर ध्वनि सुनियत चहुँ ओरा। कलि महिं जिमि आडम्बर घोरा॥

दो०— कबहू बरषत जोर से कबहू मेघ बिलाहिं।
हवा संग फुहियाँ उड़े तन परसत सिंहराहिं॥

सर सरिता जल भरे कषारा। धन संचित जिमि भ्रष्ट अपारा॥
श्याम घटा घिरि सब दिशि आवत। घन बिच दामिनि शोभा पावत॥
जल ही जल पथ दीखत नाहीं। वेद पंथ जिमि कलियुग माहीं॥
इन्द्रबधूटी लागहिं प्यारी। मन महिं मोद बढ़ाबहिं भारी॥

धरा तृप्त शीतल जल पाई। मनहुँ रंक घर संपति आई॥
उमड़ि-घुमड़ि नित बरषा होई। निज पापन ज्यों पापी रोई॥
मौलश्री माधवी मालती। बेला जूही लता भावती॥
चम्पा और चमेली सोहत। सर-सरितन पंकज मन मोहत॥

गेंदा गुलाब अरु हारसिंगार। बाग-बगीचन आई बहार॥
विविध जाति सुमन फल फूले। देखत सुषमा तन मन भूले॥
सखन संग खेलत वनमाली। भाजत कूदत दै दै ताली॥
उड़ते खग के संग संग भागत। भागत-भागत गिरि गिरि जाबत॥

कबहू जल में दौड़ लगाबहि। जल गहराई लखि नहिं पाबहि॥
गहरे गढ्ढा गिर जब जाई। सखा कूदि जल तिनहिं बचाई॥
वन-उपवन वह खेलत डोलहि। पशु-पक्षी स्वर सहज ही बोलहि॥
सखा वृन्द तेहि पींठि चढ़ाई। कबहू काँधे लेत बिठाई॥

कबहू मधुर फल ताहि खबाबत। हवा करहिं कभु चरन दवाबत॥
प्रेम मगन हिय लेत लगाई। अंक भेंटि पुनि-पुनि चिपटाई॥

दो०— मृग मयूर के पाछें धावत हैं वनमाल।
कबहू गाबत नाचते कबहू दे करताल॥

द्वन्द्व युद्ध कुश्ती कर प्यारे। ठोकहिं ताल मस्त मतबारे॥
भिड़हिं परस्पर जोर लगाबहिं। कर पग सिर पर दाव चलाबहिं॥

बिविध भाँति क्रीडा विस्तरहीं। सखन संग रस क्रीडा करहीं॥
'बास ग्राम' के लोग-लुगाई। किये स्वबस मन मतिहि चुराई॥

दो०— श्रीवनमाली के चरित कौं वेद न पावहिं पार।
किमि बरनहुँ मंगल चरित मैं मति मंद गँवार॥

मैं अति अधम कथा अति पावन। केहि बिधि बरनहुँ चरित सुहावन।
मो पर प्रभु कीनी निज दाया। सेई वनमाली चरित लिखाया॥

पाठशाला गमन - विद्या प्राप्ति

माँ सरस्वति को शीश झुकाई। पढ़न गये वनमालि गुसाई॥
गणपति पूजन बिधि करबाई। हाथ खड़ी शिशु दीन गहाई॥
अक्षर पाटी कर पकड़ाई। ओ३म् नमः सिद्धम लिखबाई॥
गुरु गृह पढ़न गये बड़भागी। जिनकी मति पढ़ने में लागी॥

अ आ .... का खा अक्षर बोले। गुरु चकित अति मन मति डोले।
राम कृष्ण मुकुन्द वनमाली। पढ़त लिखत नहिं बैठत ठाली॥
हिन्दी उर्दू गुरु पढ़ाबहिं। वनमाली सब विद्या जानहिं।
सरस्वती कृपा पात्र यह बालक। परमहंस सिद्ध या साधक॥

ध्रुव प्रहलाद मनहुँ शुक नारद। या कपि हैं विज्ञान विशारद॥
गुरु चकित सब शिख समुदाई। सहज ग्यान निधि शिशु ये भाई॥
शिशुपन कीनी चंचल ताई। अब नम्र शांत गंभीर सदाई।
बाल चपलता सबनि दिखाई। सबके मन वनमालि चुराई॥

शैशव काल सों परम विरक्ती। जन्मत ही से शास्त्र स्फूर्ती॥
विद्यालय पढ़ि जब घर आबत। माँ के चरनन शीश झुकावत॥
विद्या व्यसनी शान्त गंभीर। भये वनमाली परम धीर॥
तदपि खेल खेलहिं मनलाई। कभु बाल चपलता देत दिखाई॥

विविध

भोजन करहिं मोद मन मानी। मात जिमाबहि अति हरषानी॥
बिविध भाँति व्यंजन पकवाना। सादर जेंबत सुख बहु माना॥
व्यंजन परसहि पुनि-पुनि माता। मन आनंद न उरहि समाता॥
प्रभु प्रसाद बहु स्वाद बतायें। झोका लेबहिं खाबत जायें॥

माखन मिश्री दूध मलाई। काजू किशमिश खाबत जाई॥
मुख पर लटुरी घिर घिर आबहिं। कनक अँगुरियन तिनहिं हटाबहिं॥
चुचकारत पुचकारत माता। कुन्द दशन किलकत मुसकाता।
वदन मनोहर अमृत बानी। देखि सुनत माता हरषानी॥

चन्द्रकला ज्यों सुषमा बाढ़हि। माँ तृण तोरि तोरि पुनि बारहि॥
श्याम ढिठौना माथे लाबहि। नजर लगेना सबहि कराबहि॥
माँ की ममता सुतहि लुभाये। कौतूहल वनमालहिं भाये॥
दृष्टि बचाइ घर में घुसि आबहिं। माँ के नयन मूँदि बतराबहिं॥

खेलत-खेलत घर छिपि जाबहिं। माँ जंजीरी खोजि न पाबहिं॥
खेल छोड़ि ना निज गृह जाबहि। माँ लालच दे दे कर लाबहि॥
हस्त पाद मुख माँ धुलबाबहि। प्रीति सहित माँ सुतहि जिमाबहि॥
ता पीछे विश्राम कराबहि। कथा कहानी लोरी गावहि॥

बरषा बीति शरद ऋतु आई। नभ निर्मल अब लगत सुहाई॥
खग सुन्दर नव-नव बहु आये। खंजन पक्षी सबहिं लुभाये॥
रंग बिरंगे छोटे मोटे। नाना खग बहु नाहिंन टोटे॥
सब कर स्वर कोलाहल भाये। रंग रूप ध्वनि मनहिं लुभाये॥

ताल-तलैया विकसे सरसिज। शोभा लखि मोहहिं सुर शिव अज॥
झाड़ी ऊपर विविध लतायें। भौंरा तितली बहु मढ़रायें॥
नव नव सुमन बिटप बहु रंगा। बोलत पिक-शुक गुँजत भृंगा॥
सुन्दर बैठक विटपन छाया। सुर रंभादिक मन ललचाया॥

कूप वाटिका बाग बगीचा। लता बिटप सब माली सींचा॥
बेला गुलाब मरुआ बिल्वपत्र। हारसिंगार जुही गेंदा सर्वत्र॥
शीतल मंद सुगन्ध समीरा। सर सरिता निरमल अति नीरा॥
घाट मनोहर अद्भुत सीढ़ी। नहाबहिं युवा वृद्ध नव पीढ़ी॥

लघु दीरघ खग मन अति भावन। मृग शावक कहुँ लगें सुहावन॥
बोलत पक्षी मधुर मधुर स्वर। पुष्पन गुँजत नाना मधुकर॥
जलचर थलचर नभचर आई। सुख बिचरहिं तजि वैर विहाई॥
नर-नारी सदभाव भराई। प्रिय मधु बोलहिं सुखद सुहाई॥

'बास ग्राम' की प्राकृत शोभा। अमरागन मन लागत लोभा॥
यह महिमा कछु ना अधिकाई। कृष्ण सखा जनमे जहँ आई॥
प्रेम भक्ति का पाठ पढ़ाने। आये कृष्ण भक्ति सिखलाने॥
बिविध खेल वनमालि रचाई। राजा मंत्री चोर सिपाई॥

शेर व्याघ्र बनि सबहिं डराबहिं। भेड़ भेड़िया खेल रचावहिं॥
अंधा लंगड़ा कुबड़ा बनहहिं। टेड़े तन चलि छाया निरखहिं॥
कृष्ण सुदामा खेल रचाई। मीतन के मन लेत चुराई॥
ध्रुव प्रहलाद खेल विस्तारी। नव नव मंगल मन चितहारी॥

पर नयन मूँदि पूछत मैं कौन?। नहीं बताओ चड्डी दो न॥
बन्दर बनि डारन पर डोलहि। पिक चातक की बोली बोलहि॥
कभु मेंढ़क जैसी फुदकी मारें। कभु टिट्टिभि के सम स्वर उच्चारें॥
कबहूँ म्याऊँ म्याऊँ करिहहिं। कबहू वक सम ध्यान वे धरिहहिं॥

कभु मोर हंस की बोलत बोली। कभु राम कृष्ण बनि खेलत होली॥
कभु श्वान सियार भयाबनि बानी। कभु मधु बोलत अमृत सानी॥
लौकिक बालक के सम खेलत। लौकिक क्रीडा करहिं लोकबत॥
मन बुद्धी चित सबके जीते। भये वनमाली प्राण पिरीते॥

जीवों के प्रति प्रेम-दया एवं सद्भाव

परम कृपा मूरति वनमाली। शील सनेह सुधाकर माली॥
सौम्य स्वभाव सरल अति भाई। खग मृग जलचर कोहु न डराई॥

दो०— मृग मोरन कहुँ प्यार करि पास बुलाबत बाल।
आबत नहिं जब पास वे कर पीटत दे ताल॥

सब बिचरहिं निज बैर विहाई। मनहुँ मित्र सबके प्रिय भाई॥
अंक भरहिं कबहू पुचकारहिं। हस्त फेरि प्रिय नाम पुकारहिं॥
कबहू हिय सों लेत लगाई। वनमाली मन हरष भराई॥
खग मृग शावक लाड़ लड़ाबहि। राधाकृष्ण कृष्ण बुलबाबहि॥

बोलो कृष्ण नाम अति प्यारा। मात पिता यह मंत्रन सारा॥
तुम सब मेरे प्राणन प्यारे। मेरे तुम्हरे कृष्ण सखारे॥
खग मृग कहुँ हरिनाम सिखाबहि। शावक पुनि-पुनि अंकहिं आबहिं॥
चरन लोटि शिशु नेह दिखाबहिं। फिरि फिरि लौटि निकट चलि आबहिं॥

पुनि आबहिं पुनि फिरहिं बहोरी। करहिं परस्पर प्रीति न थोरी॥
वनमाली निज गोदी लेंहीं। कहौ कृष्ण अस सिखबनि देंहीं॥
कृष्ण कृष्ण कहि अश्रु मोचहिं। खान पान तन की नहिं सोचहिं॥
खग मृग सब अपने बस कीने। जल भोजन उन कहुँ नित दीने॥

उपनयन-संस्कार-महोत्सव

दो०— श्रीजंजीरी लाल कहुँ पुनि-पुनि करहुँ प्रणाम।
जग उद्धारक प्रेम निधि वनमाली तेहि नाम॥

मंगलमय शुभ दिवस सुहाया। अष्ट-बयस उपनयन कराया॥
उपनयन वेद बिधि से कीना। गायत्री मंत्र वनमाली लीना॥
बन्धु वर्ग सब लोग बुलाये। बाजे बाजत गबत बधाये॥
जूथ जूथ मिलि भामिनि आईं। सरस राग बाजहिं शहनाई॥

मंगलगीत सुन्दरी गावत। नृत्य करत मन अति हरषावत॥
चन्द्रमुखी सब कोकिल बयनी। गजगामिनि प्रिय खंजन नयनी॥
सकल सुमंगल अंग बनायें। करहिं गान कलकंठ लजायें॥
सुन्दर तन सब वेष सजायें। रति रंभा कर मान घटायें॥

मधुर मधुर गीतावलि गायें। पिक चातक के स्वरहिं लजायें॥
हँसत मधुर रस अमृत बरषहिं। कामी रूप छटा लखि तरसहिं॥
अति चंचल मानहुँ घन दामिनि। रति छवि निदरहिं मदन विलासिनि॥
अंग अंग श्रृंगार बनायें। रूपामृत छवि सबहिं लुभायें।

वनमाली की आरति करहीं। महामोद मन आनंद भरहीं॥
बालक युवा वृद्ध सब आये। ब्रह्म तेज कहुँ शीश झुकाये॥
'बास ग्राम' के जन अनुमाना। मूर्तिमन्त वामन भगवाना॥
यज्ञसूत्र मनोहर सोहत। दंड कमंडल झोली मोहत॥

चन्द्र मदन वनमाली लागे। प्रेम भाव रस अंग-अंग पागे॥
सुधा सिन्धु स्नान करे मनु। चन्द्र चाँदनी सों पोंछे तनु॥
भिक्षा बोलि-बोलि सब देबहिं। नर नारी गोदी भरि लेबहिं॥
दान मान सब काहू पाबा। 'बास ग्राम' अति आनन्द छाबा॥

माँ द्वारा नैतिक शिक्षा एवं कृष्ण भक्ति उपदेश

माता शिशु की पहली शाला। यशुमति शिक्षा दी नन्दलाला॥
तैसे ही जंजीरी माई। दे शिक्षा वनमालि सदाई॥
सच बोलहिं नहिं चोरी करई। धरम नीति पर नित ही चलई।
साँच बराबर तप कोउ नाहीं। दया धरम की नींव सदाहीं॥

नाम रुचि जीवन पर दाया। करुणा मैत्री भक्ति अमाया॥
मात पिता गुरु आदर करई। आयसु पाइ सदा अनुसरई॥
पर उपकार करहि दिन-राती। वृक्ष नदी धरती की भाँती॥
सहनशील बन तरु सम लाला। मधुर बचन नित बोल रसाला॥

सब कर मान करहि मन लाई। जड़ चेतन कहँ मन न दुःखाई॥
व्यर्थ समय नहिं कबहु बिताये। बुरा न बोले भला लखाये॥
शिव दधीच हरिश्चन्द्र कहानी। मात सुनाबहि सुख अति मानी॥
कृष्ण सुदामा कथा सुनाबहि। वनमाली सुनि अति सुख पाबहि॥

ध्रुव प्रहलाद विदुर अरु शबरी। सुनत कथा सुत पुनि-पुनि सबरी॥
सच्चे नर उर प्रभु बिराजहिं। निज सेवक के सब सुख साजहिं॥
प्रातःकाल करहहिं असनाना। भवन आइ पूजहि भगवाना॥
कृष्ण पूजि तुलसी जल देवहिं। अश्रु नयन भरि प्रभु कहुँ सेवहिं॥

तुलसी गंगा विष्णु भक्ति। महिमा को जानहि का शक्ति॥
भक्ति भागवत तुलसी गंगा। चार रूप ये कृष्ण के अंगा॥
बिन भक्ति नहिं दुक्ख नशाये। संत बिना भक्ति नहिं पाये॥
संत संग शुभ मंगल दाता। धरमादिक तद प्रेम प्रदाता॥
संत बिना भगबंत न पाये। भव की नौका संत बनाये॥
सज्जन संगति अति सुखदाई। दुर्जन संगति सब दुःखदाई॥
कृष्ण भक्ति है सब कर प्राना। संत रसिक कह वेद बखाना॥
प्रेम समेत नाम प्रभु लेबत। ताकहुँ कृष्ण भक्ति निज देवत॥

अस बिचारि जे परम सयाने। कृष्णहिं भजहिं परम प्रभु माने॥
कृष्ण भजन बिनु सुनहु सदाई। सद्गति कबहू काहू न पाई॥
कृष्ण भजन के सब अधिकारी। शूद्र विप्र चाहे नर नारी॥
मनुज जनम कर यह फल होई। तन मन से प्रभु पद रति सोई॥

भोग मुक्ति को जो जन चहई। सपनेहु ते सुख शान्ति न लहई॥
प्रभु कृष्ण मय यह जग सारा। सेवहु सकल जगत आधारा॥
मनुज जनम कर यह फल भाई। कृष्णहि भजिये नर तनु पाई॥
मानसी सेवा लीला चिंतन। रैन दिवस करये प्रभु बन्दन॥

कहहिं वेद इतिहास पुराना। ईश्वर ब्रह्म एक भगवाना॥
ईश्वर परम कृष्ण कहुँ जाना। आदि मूल कारण भगवाना॥
राधाकृष्ण चरण प्राणधन। माने अपना सरबस जीवन॥
राधागोविन्दहि चित मन लाये। प्रेम सहित दिन रैन बिताये॥

क्षण भंगुर है यह जग सारा। कृष्ण बिना नहिं हितू हमारा॥
अस विचारि प्रभु प्रीति बढ़ाई। परम कृपामय लें अपनाई॥
दिन प्रतिदिन माँ शिक्षा देवहि। वनमाली सब चित धरि लेवहि॥
सहस्त्र गुरु नहिं मात समाना। सिखवत शिक्षा नीति बिधाना॥

माँ के सम नहिं कोहु कृपाला। माँ से बड़े न दीन दयाला॥
जानें जो कुछ जहँ कहुँ पाया। वह सब है माता की दाया॥
माँ का ऋण कोई चुका न पाया। माँ के सम नहिं कोई छाया॥
माँ की ममता नेह के आगे। राम कृष्ण हू लघुतर लागे॥

राम-कृष्ण माँ गोद खिलाये। तब जग को प्रकाश दे पाये॥
माँ के चरण नमामि नमामी। देव दनुज माँ सबकी स्वामी॥
माँ कहुँ पुनि-पुनि कीन्ह प्रणामा। पुनि पुनि कीन्ह मात सनमाना॥
कृपा मात मो पर नित कीजै। निज पद छाया कृपा करीजै॥

पाहि पाहि शरणागत जानी। करहुँ प्रणाम जोरि जुग पाणी॥
निज शरणागत मात तुम्हारा। त्राहि त्राहि तव कृपा सहारा॥
माँ के चरण विनय बहु कीन्ही। जंजीरी माँ आशिष दीन्ही॥
मम आशीष काम तोहि आये। ममता मेरी तोहि बढ़ाये॥

विद्या बुद्धि तव सुत बढ़हीं। रामकृष्ण तव उर महिं बसहीं॥
पुनि-पुनि माँ पद वंदन कीना। पाइ अशीष अमित सुख लीना॥
माँ तव ममता कबहुँ न भूलूँ। माँ माँ कहि मैं हर क्षण फूलूँ॥
तुम बिन नहिं कोउ हितू सहाया। अस बिचारि कीजै निज दाया॥

वनमाली माँ के अति प्यारे। करहि दिवस निशि परम कृपा रे॥
निज सुत कूँ प्रभु भक्त बनाया। जंजीरी निज धरम निभाया॥

बालक वनमाली का हरिनाम प्रेम
श्रीराम- कृष्ण लीला अनुकरण

ध्यान धरहि मन्दिर महिं जाई। सेवा पूजा कर मन लाई॥
रामकृष्ण कहि नाचहि गाई। भक्तनाम ठाकुरहि सुनाई॥
नृत्य करहि कभु हरि हरि बोल। रामकृष्ण लेबहु बिनु मोल॥
हरि बोल हरि बोलहि बयना। तन पुलकित अश्रु बहिं नयना॥

हरी हरी ध्वनि बालक बोलहिं। संग ही संग लगे वे डोलहिं॥
ठाकुर चन्दन जो मिलि जाये। माथे पर सब ताहि लगाये॥
मिसिरी पेड़ा प्रसाद सब पाये। लालच करहिं और मिल जाये॥
कबहू वसुदेव विवाह रचायें। कबहू कृष्ण जन्म करबायें॥

अन्य बाल पूतना सजायें। वनमाली को कृष्ण बनायें॥
स्तन पीबहि क्रोधित तन मन। मरी पूतना हरषहिं शिशु गन॥
कबहू अघ बक को संहारे। कबहू गिरि गोवर्द्धन धारे॥
अक्रूर संग कभु मथुरा जाये। सारी गोपीन को तड़फाये॥

कंस हनहिं मथुरा में जाई। रचते लीला अति सुखदाई॥
कबहू राम लखन की लीला। परम मनोहर अति प्रिय शीला॥
वनमाली लक्ष्मण बन जाते। मेघनाद को मार गिराते॥
राम बने रावण को मारहिं। सीता शोक सकल संहारहिं॥

लीला देखहिं सब नर नारी। हरषित तन मन होंइ सुखारी॥
बालक लेबहिं गोद उठाई। प्यार करत अति लाड़ लड़ाई॥
'बास ग्राम' के सब नर नारी। वनमाली कहुँ पास हँकारी॥
वनमाली तुम मम गृह आओ। दूध मलाई रबड़ी खाओ॥

जो मेरे घर कल तुम आयें। खग मृग के प्रिय शावक पायें॥
हाथी घोड़ा अरु गुब्बारे। देखहु पाबहु मम गृह द्वारे॥
प्रातः होत जल्दी चलि आना। माखन मिसिरी पेड़ा खाना॥
दूध मलाई रबड़ी खाओ। मन भावन सब चीजें पाओ॥

जो चाहहु सो सब कुछ पाना। हमरे घर अवश्य तुम आना॥
कृष्ण कथा तुम मोहि सुनाना। नित प्रति राखूँ आना जाना॥
घर बन बाग बिचर जहँ जाई। होंहिं अनन्दित लोग लुगाई॥
वनमाली के चरितहिं देखी। होंइ न्यौछावर परम विशेखी॥

'बासग्राम' की अनुपम शोभा। सुर नर मुनि सबके मन लोभा॥
मानहुँ सारी स्वर्ग सम्पदा। 'बासग्राम' में बसति सरबदा॥
नाना खग मृग नाना जाती। परम विचित्र भेद बहु भाँती॥
वैर भाव तजि रह इक संगा। बिहरत क्रीड़त नाना रंगा॥

चकबा चकबी चातक पिकगन। कूजत हंस चकोर मुदिन मन॥
अलिगन गावत नाचत मोरा। खग कोलाहल दिशि चहुँ ओरा॥
लता बिटप फूले बहु रंगा। बोलत शुक गुँजत बहु भृंगा॥
कूप बापिका अमृत बारी। सर सरिता सरसिज अति भारी॥

हंस बतख चकबी सर तैरहिं। सर तट बैठि सकल जन हेरहिं॥
नाना क्रीड़ा जल खग करहीं। देखि देखि जन हरषहिं भरहीं॥
लता बिटप खग मृग मन भाये। नव पल्लव फल फूल सुहाये॥
बिकसित सुमन गन्ध बहु भाँती। लता बिटप तृन अगनित जाती॥

त्रिबिध समीर बहइ अति पावन। खग मृग नर सबके मन भावन॥
जल खग थल खग बोलत नाना। सुखी होत सबके मन काना॥
बोलत चक बक खग समुदाई। अरुणचूड़ मन लेत चुराई॥
पीउ पीउ चातक ध्वनि करहीं। कुहू कुहू कोयल उच्चरहीं॥

सुन्दर खग बोलहिं बहु भाँती। देखत बनहिं न कछु कहि जाती॥
जहँ तहँ पीबत खग मृग नीरा। पशु ऊपर बैठे पिक कीरा॥
खग मृग शावक नव क्रीड़ा कर। करत किलोल बोल नव मधु स्वर॥
खग शावक मुख चुग्गा लेंहीं। चोंच मिलाय खोलि मुख देंहीं॥

नीलकंठ कलकंठ बतख बक। लघु दीरघ खग रंग शतक चक॥
नाना पंक्षी नाना जाती। मधु रब क्रीड़त नाना भाँती॥
जामुन चम्पक बकुल रसाला। पनस अशोक कदम्ब तमाला॥
बट खिरनी गूलरि बहु जाती। पीपर पात हिलहिं दिन राती॥

पीलू महुआ बाँस खजूर। अरजुन गोंदी धौ मशहूर॥
हींस करील झरकटी छोंकर। शीशम आंवल नीबू पाकर॥
काजू पिश्ता किशमिस प्यारे। लता-बिटप मीठे फल बारे॥
सेव संतरा अरु मौसमी बेर। चीकू पपीता खिरनी केर॥
देवदार सागोंन सुहाये। पाटल तुलसी मरुआ भाये॥
अमलतास समालू भारी। मानहुँ जग से सुषमा न्यारी॥

कहौं कहाँ लगि ग्राम बड़ाई। रिद्धि सिद्धि लोटहिं जहँ आई॥
मानहुँ सारे जग की सुषमा। 'बास ग्राम' छाई नहिं उपमा॥
कृष्ण भक्त जहँ बास कराई। सकल सिद्धि क्रीड़हि तहँ आई॥
कृष्ण मीत बनमाली राई। महिमा अद्भुत बरनि न जाई॥

श्रीवनमाली जी के सहपाठी सखाओं का माँ के पास आगमन

सभी बाल गृह मन्दिर आये। कहत मनोहर बचन सुहाये॥
हम वनमाली मित्र सखागन। हमरा तन मन इसको अरपन॥
वनमाली हम कीन्हे विस्मित। विद्या-बुद्धि सबही अचम्भित॥
विद्या विनय विवेक भलाई। गुरु सहपाठी करहि बड़ाई॥

पढ़ने में यह सबसे आगे। शुक्राचार्य वृहस्पति लागे॥
मम विद्यागुरु भी चकरायें। गूढ़ प्रश्न वे बता न पायें॥
सिद्ध सरस्वती माँ हैं इसको। खेलत में यह जीते सबको॥
तव सुत वनमाली विद्वाना। सब करते भारी सनमाना॥

माँ जंजीरी बहुत सिहाये। सखा संग भोजन करबाये॥
सखन संग नित भोजन करईं। भोजन कौतुक मन कहुँ हरईं॥
बिविध भाँति मेवा पकवाना। वनमाली खाबहि सुखमाना॥
माँ जंजीरी लाड़ लड़ाये। प्रेम समेत प्रसाद खिलाये॥

वनमाली विद्यालय जाबहि। ध्यान मगन सब विद्या पाबहि॥
गुरु सखा सब आदर करहीं। आदर मान देत मन हरहीं॥

विद्यागुरु-गृह आगमन

एकबार गुरु उन गृह आये। आदर करि आसन बैठाये॥
कहत वचन गुरु सहज सुहाये। माँ जंजीरी को समझाये॥
सकल ग्यान निधि पुत्र तुम्हारा। विद्या में मैं यासे हारा॥
जीवन गयहु पढ़ाबत मोही। नहिं पायहु सिख एहि सम कोही॥

काशी भेजो विद्या पावन। विज्ञ शिरोमणि बने सुहावन॥
अब 'बास ग्राम' की पूरण शिक्षा। काशी भेजहु यह मम भिक्षा॥
तहाँ सकल यह शिक्षा पाई। मेंटहि पाप सकल जन माई॥
सुनत लाल गुन मात सिहाई। गुरु आदर कीन्हा बहु माई॥

वनमाली गुरु चरनन डारे। गुरु वंदन करि पाँव पखारे॥
गुरु आशीष दीन्ह उर लाई। बनो कल्पद्रुम काशी जाई॥
विद्या पावन काशी जाओ। वहाँ महापंडित बन आओ॥
सकल ग्यान जन जन को देना। विद्या का कुछ शुल्क न लेना॥

गुरु आयसु तुम काशी जावहु। भली भाँति तुम विद्या पावहु॥
काशी विद्या पढ़ने हेतू। जाऊँआ मैं प्रेम समेतू॥
गुरु आयसु वनमाली माँगी। रोम रोम पुलकावलि जागी॥
गुरुवर मो कहुँ आयसु देवहु। तुम्हरे पद पंकज मैं सेवहु॥

गुरु आज्ञा दीन्ही हरषाई। लीने वनमाली उर चिपटाई॥
बार-बार गुरु वन्दन कीन्हा। बहु प्रकार आशिष गुरु दीन्हा॥

श्रीवनमाली के काशी गमन के समाचार से सब दुःखी

दो०— श्रीवनमाली का गमन सुनि दुःखी भये सब लोग।
बाल वृद्ध नर नारि सब सह नहीं सके वियोग॥

समाचार सब लोगन पावा। हृदय विषाद कंठ भरि आवा॥
का दिखाइ बिधि काह दिखावा। का सुनाइ बिधि काह सुनावा॥
चले जायेंगे अब वनमाली। कैसे मुख देखेंगी आली॥
पापी हृदय न फटे हमारा। सब दुःख सहियै ये बेचारा॥

मूरति मधुर याद जब आये। हृदय हमारा फटि फटि जाये॥
रूप मधुर अरु अमृत बानी। क्रीड़ा कौतुक सब सुख खानी॥
हे बिधि क्रूर तुम्हारी माया। जड़ चेतन सब दुःखी कराया॥
हे बिधि! तो कहुँ लाज न आवहि। क्यों मिलाइ फिर क्यों बिछुड़ावहि?॥

संत संग कभु नाहिं कराये। करहु तो कबहू ना बिछुड़ाये॥
संत संग मुद मंगल दाई। संत वियोग महादुःख दाई॥
नर अरु नारि विषम दुख पाये। नयन अश्रु रोवहिं बिलपाये॥
वनमाली की करि करि यादा। हिय महिं उपजत बिविध विषादा॥

सखाओं का करुण क्रन्दन-वनमाली द्वारा उनको प्रबोध एवं सांत्वना

समाचार सब मित्रन्ह पावा। विषम विषाद हृदय भरि आवा॥
सुनि सहमे मुरझाये ऐसे। बिनु जल तड़फत मछली जैसे।
सखा हमारा काशी जाये। ता बिनु हमको कुछ न सुहाये॥
खान पान खेलन बतराना। प्रेमालाप भायप सनमाना॥

वनमाली बिनु विष सम सारे। जात न पापी प्राण हमारे॥
हे बिधि! क्रूर दया नहिं तुमहीं। सखा विरह क्यों मारहि हमहीं॥
काहे बिधि! तुम इनहिं मिलाये। करि मिलाप अब क्यों बिछुड़ाये?॥
हे बिधि! क्रूर तुम्हारी माया। सखा नेह पर बज्र चलाया॥

अबुध बाल सम करनी तेरी। निष्ठुर निर्मम क्रूर घनेरी
दुःख लज्जा नहिं लागत तो कहुँ। सुख महिं दुःख देबत तू सब कहुँ॥
मूक अन्ध तुम हम सब कीने। हम मनमणि तुम सरबस छीने॥
उलटे काम बिधाता तेरे। सुख सोबत तू बज्जर गेरे॥

नेह कपट कन प्रथम चुगाये। कपट जाल तुम फाँसि मराये॥
क्रूर व्याध इव तू तव माया। यम सम निष्ठुर तू लखि पाया॥
सुख रूप सुमेरू हम बैठाये। दुःख सागर अब आनि डुबाये॥
पहले प्रेमभाव दिखलाया। दुःख दावानल फेरि जलाया॥

जनम-जनम के पुण्य हमारे। मीत मिले वनमाली प्यारे॥
प्रेम मिलाप न कबहु कराये। प्रेमीजन फिर ना बिछुड़ाये॥
आठ चार शुभ बयस सुहाई। रूप मनोहर छवि मुख छाई॥
वदन कान्ति तन झलकत कैसे। ओस के मोती चमकत जैसे॥

सखन्ह निकट वनमाली आई। काशी गमन की खबरि सुनाई॥
विरह विकल क्यों सखा हमारे। हमरे माधव मित्र तुम्हारे॥
सच्चे सखा सनेही श्याम। गुरु पितु मात कृष्ण बलराम॥
उनकी नित प्रति भक्ति करियै। मंगलमय प्रभु सब दुःख हरियैं॥

क्षण भंगुर है यह जग सारा। कृष्ण नाम निज हितू हमारा॥
वेद पुरान संत मत भाई। कृष्णहिं भजियै नर तनु पाई॥

सत्य सत्य सार सार एक कृष्ण नाम।
कृष्ण माता कृष्ण पिता कृष्ण धन धाम॥
सर्व मंत्र सार यही एक कृष्ण नाम।
सेवनीय वन्दनीय कृष्ण बलराम॥

कृष्ण कहौ कृष्ण भजौ लेहु कृष्ण नाम।
अहर्निश कृष्ण चरण करौ प्रेम ध्यान॥
जड़ चेतन जीव जत कृष्णमय मानि।
सर्व जीव दया करौ कृष्ण सम जानि॥

धरम करम हम कछू न जानहिं। वनमाली कूँ सरबस मानहिं॥
कहि न सकहिं कछु बोलि सकहिं ना। जाबहु तुम मुख खोलि सकहि ना॥
कृष्ण भजन हम कैसे करिहहिं। प्रेम विरह हम तुम्हरे गरिहहिं॥
मारौ तौ मरिहहिं तुम मारे। तुम हौ जीवननाथ हमारे॥

तात मात हम कछू न जानहिं। तुम्हरे सुख महिं मंगल मानहिं॥
जिन हाथन तुम प्रेम पियाबा। पीबहिं विष जो तुम मन भाबा॥
प्राण हरण करि काशी जाओ। सुधा सींचि अब विषहि पियाओ॥
फूटे भाग अमंगल आबा। तुम बिनु अब को धीर बँधावा॥

सखन सहित तुम खेल रचाये। प्रेम मगन आनन्द भराये॥
रूप सुधा निज मुख का प्याई। विषम विरह अब दीना आई॥
सुख समुद्र तुम हम तैराये। दुःख बारिधि अब आनि डुबाये॥
पहले सखा भाव दिखलाकर। अब काशी जाओ हमहिं रुलाकर॥

व्यर्थ प्राण अब तुम बिनु धारे। फूटे भाग हाय ! सखा हमारे॥
तुम बिन जीवन व्यर्थ हमारा। तुम बिन सूना सब जग सारा॥
तुम्हरी सुधि जब जब भी आये। हृदय हमारा फटि-फटि जाये॥
जब जब याद तुम्हारी करहीं। नयन अश्रु जल हमरे भरहीं॥

चन्द्र वदन तुम हमहिं दिखाया। बिविध भाँति तुम खेल रचाया॥
ठौर न कोई जहँ हम जावें। केवल पद पंकज लपटावें॥
तुम्हरी संगति अब न मिलेगी। बनी बात अब सब बिगरेगी॥
ऐसा लगता है अब हमको। कभु न मिलोगे तुम हम सबको॥

जहाँ रहो तुम सब सुख पाना। हमरी सुधि तुम कभू न लाना॥
पुण्य हुए अब खतम हमारे। रात-दिना अब रोबहिं प्यारे॥
दशरथ मरण राम वनवासा। ना पुजहहि बिधि सबकी आसा॥
बिधि के करतब कोहु न जानत। का करिहहि कोहु ना पहचानत॥

करुणा गोदी हमहिं बिठाकर। काशी जाबहु हमहिं रुलाकर॥
'बास ग्राम' के तुम भूपाला। माँ जंजीरी के प्रिय लाला॥
रात दिना अब तौ हम रोबहिं। जीवन भरि सुख नींद न सोबहिं॥
हा हा प्राण सखे वनमाली। तुम कैसी रूप मोंहनी डाली॥

मेरे सारे सखा सनेही। मेरी बात सुनहु मन लेही॥
क्षण भंगुर जीवन जग सारा। दुर्लभ मानव जनम हमारा॥
खेले खाये समय बिताया। परमपिता निज याद न आया॥
जीवन व्यर्थ गयहु हम सबका। आशा तृष्णा दीन्हें झटका॥

तन पोषक हम निजकूँ कीन्हे। परमारथ सिख कबहु न लीन्हे॥
पर सेवा उपकार न कीन्हा। निज स्वारथ को सब बिधि चीन्हा॥
आशा तृष्णा मनहिं लुभाया। कृष्ण कल्पतरु याद न आया॥
चिन्तामणि नहिं अच्छी लागत। चमक काँच की मन को भावत॥

सुख संपति बहु भोग विलासा। लोभ मोह तन मन बहु पासा॥
विषय चिन्ति मन विषयाकारा। दीन हीन मन लीन बेचारा॥
कृष्ण नाम लीला गुण चिन्तन। प्रेम मगन होबहु तुम छिन छिन॥
कृष्ण भक्ति संजीवनि भाई। कृष्ण नाम चिन्तामणि गाई॥

हिलमिलि करहु नाम संकीर्तन। कृष्ण मिलहिं अरु पाओ प्रेमधन॥
सब कल्मष हिय के धुलि जावें। प्रेम सहित जो कृष्णहिं गावें॥
क्लेश विघ्न चिन्ता नहिं ब्यापहिं। नेह उपज उर अपने आपहिं॥
कृष्ण शरण में जो जन आये। सकल शोक त्रय ताप नशाये॥

पाय कृष्ण होंइ पूरण कामा। कामधेनु चिन्तामणि नामा॥
मानस रोग सकल मिटि जाबहिं। जो जन कृष्ण की शरणहिं आबहिं॥
कृष्णहिं गाओ कृष्णहिं ध्याओ। कृष्ण चरण में मनहिं डुबाओ॥
सेवा पूजा करहु प्रणामा। होंइ प्रसन्न कृष्ण बलरामा॥

कृष्ण नाम ही कृष्ण कहाये। वेद पुराण संत सब गाये॥
सुरतरु कामधेनु चिन्तामणि। सबका जीवन कृष्ण नाम मणि॥
कृष्ण बिना रक्षक नहिं आना। आरत भय भंजन भगवाना॥
सखा प्रबोधि कर निज गृह आये। माँ जंजीरी से बतराये॥

माता से काशी जाने की अनुमति

काशी जाबहुँ री प्रिय माता। विद्या पाऊँ सबके साथा॥
आयसु तुम देबहु मम माता। मम रक्षक प्यारे यदुनाथा॥
माँ तुमने मोहि बहु सुख दीना। पालन पोषण सब बिधि कीना॥
करि न सकेहु मैं तुम्हरी सेवा। क्षमहु मात मोहि अनुमति देवा॥

माता रोबहि अति अधिकाई। कैसे धीर धरहुँ मनमाई॥
तुझ बिन घर सूनौं है जाई। फेरि कहाँ वनमाली पाई॥
तेरे बिनु यह जग अँधियारा। मो अवला का तू ही सहारा॥
पिता तुम्हारे गोलोक पधारे। जनमत से दुःख भयहु हमारे॥

तेरीं वृद्धा मात अनाथा। विश्वम्भर प्रभु हमरे नाथा॥
काशी जाय भूलि मति जइयो। सुरत मात की करतौ रहियो॥
देह प्राण तू मन का मोती। वृद्ध लाठि तू नयनन ज्योती॥
गज बिनु सूँढ मत्स बिनु पानी। पंखहीन खग सम अकुलानी॥

तोकूँ पाय जगत सुख पावै। मेरे मन हिय सुख उपजावै॥
फूटि भाग अरु मम घर जावै। घर उजारि पर घरनि सिरावै॥
मम नयन फूटि जग अँखियाँ पावै। जग सुभाग सुख मंगल गावै॥
प्रेम भगति पाबहि जग तोते। कौन बात बड़ बेटा मोते॥

कलि के कलिहत जीव दुःखारे। धनी बनहिं सब जीव बिचारे॥
जाओ सुत तुम काशी जाओ। सारे जग हित विद्या पाओ॥
मूर्छित भई विकल महतारी। पड़ी भूमितल सुरति बिसारी॥
वनमाली तेहि होश करायहु। विविध भाँति मात हि समुझायहु॥

जहँ जहँ संत महंत अवतरहीं। तहँ तहँ क्रूर करम बिधि करहीं॥
सकल उजारहि पुर अरु ग्रामू। लये लपेटि कृष्ण अरु रामू॥
कालजयी सब संत महंत जन। काल करे तिन्ह नमन दीन बन॥
का दिखाइ बिधि काह दिखाबा। प्रलय बाद निरमाण छिपाबा॥

देवहुती जस कपिल सुजाना। तैसेहिं मात प्रबोधत ग्याना॥
क्षमहु मात तुम मोर ढिंठाई। परिहरु निज मन की कदराई॥

मेरे सारे सखा सनेही। मेरी बात सुनहु मन लेही॥
क्षण भंगुर जीवन जग सारा। दुर्लभ मानव जनम हमारा॥
खेले खाये समय बिताया। परमपिता निज याद न आया॥
जीवन व्यर्थ गयहु हम सबका। आशा तृष्णा दीन्हें झटका॥

तन पोषक हम निजकूँ कीन्हे। परमारथ सिख कबहु न लीन्हे॥
पर सेवा उपकार न कीन्हा। निज स्वारथ को सब बिधि चीन्हा॥
आशा तृष्णा मनहिं लुभाया। कृष्ण कल्पतरु याद न आया॥
चिन्तामणि नहिं अच्छी लागत। चमक काँच की मन को भावत॥

सुख संपति बहु भोग विलासा। लोभ मोह तन मन बहु पासा॥
विषय चिन्ति मन विषयाकारा। दीन हीन मन लीन बेचारा॥
कृष्ण नाम लीला गुण चिन्तन। प्रेम मगन होबहु तुम छिन छिन॥
कृष्ण भक्ति संजीवनि भाई। कृष्ण नाम चिन्तामणि गाई॥

हिलमिलि करहु नाम संकीर्तन। कृष्ण मिलहिं अरु पाओ प्रेमधन॥
सब कलमष हिय के धुलि जावें। प्रेम सहित जो कृष्णहिं गावें॥
क्लेश विघ्न चिन्ता नहिं ब्यापहिं। नेह उपज उर अपने आपहिं॥
कृष्ण शरण में जो जन आये। सकल शोक त्रय ताप नशाये॥

पाय कृष्ण होंइ पूरण कामा। कामधेनु चिन्तामणि नामा॥
मानस रोग सकल मिटि जाबहिं। जो जन कृष्ण की शरणहिं आबहिं॥
कृष्णहिं गाओ कृष्णहिं ध्याओ। कृष्ण चरण में मनहिं डुबाओ॥
सेवा पूजा करहु प्रणामा। होंइ प्रसन्न कृष्ण बलरामा॥

कृष्ण नाम ही कृष्ण कहाये। वेद पुराण संत सब गाये॥
सुरतरु कामधेनु चिन्तामणि। सबका जीवन कृष्ण नाम मणि॥
कृष्ण बिना रक्षक नहिं आना। आरत भय भंजन भगवाना॥
सखा प्रबोधि कर निज गृह आये। माँ जंजीरी से बतराये॥

माता से काशी जाने की अनुमति

काशी जाबहुँ री प्रिय माता। विद्या पाऊँ सबके साथा॥
आयसु तुम देबहु मम माता। मम रक्षक प्यारे यदुनाथा॥
माँ तुमने मोहि बहु सुख दीना। पालन पोषण सब बिधि कीना॥
करि न सकेहु मैं तुम्हरी सेवा। क्षमहु मात मोहि अनुमति देवा॥

माता रोबहि अति अधिकाई। कैसे धीर धरहुँ मनमाईं॥
तुझ बिन घर सूनों है जाई। फेरि कहाँ वनमाली पाई॥
तेरे बिनु यह जग अँधियारा। मो अवला का तू ही सहारा॥
पिता तुम्हारे गोलोक पधारे। जनमत से दुःख भयहु हमारे॥

तेरीं वृद्धा मात अनाथा। विश्वम्भर प्रभु हमरे नाथा॥
काशी जाय भूलि मति जइयो। सुरत मात की करतौ रहियो॥
देह प्राण तू मन का मोती। वृद्ध लाठि तू नयनन ज्योती॥
गज बिनु सूँढ मत्स बिनु पानी। पंखहीन खग सम अकुलानी॥

तोकूँ पाय जगत सुख पावै। मेरे मन हिय सुख उपजावै॥
फूटि भाग अरु मम घर जावै। घर उजारि पर घरनि सिरावै॥
मम नयन फूटि जग अँखियाँ पावै। जग सुभाग सुख मंगल गावै॥
प्रेम भगति पाबहि जग तोते। कौन बात बड़ बेटा मोते॥

कलि के कलिहत जीव दुःखारे। धनी बनहिं सब जीव बिचारे॥
जाओ सुत तुम काशी जाओ। सारे जग हित विद्या पाओ॥
मूर्छित भई विकल महतारी। पड़ी भूमितल सुरति बिसारी॥
वनमाली तेहि होश करायहु। विविध भाँति मात हि समुझायहु॥

जहँ जहँ संत महंत अवतरहीं। तहँ तहँ क्रूर करम बिधि करहीं॥
सकल उजारहि पुर अरु ग्रामू। लये लपेटि कृष्ण अरु रामू॥
कालजयी सब संत महंत जन। काल करे तिन्ह नमन दीन बन॥
का दिखाइ बिधि काह दिखाबा। प्रलय बाद निरमाण छिपाबा॥

देवहुती जस कपिल सुजाना। तैसेहिं मात प्रबोधत ग्याना॥
क्षमहु मात तुम मोर ढिंठाई। परिहरु निज मन की कदराई॥

माता तुम वनमाली माता। तुम हो जगत जननि सुखदाता॥
पुत्र मोह से पावहु त्राना। गोविन्द चरण सरबसु करि जाना॥

मिथ्या मोह सकल जंजाला। कृष्ण हितू प्रभु परम कृपाला॥
मैं अरु मोर तोर सब माया। एहि कारण सब जन दुःख पाया॥
को सुत तात मात परिवारा। सत्य कहहुँ मिथ्या जग सारा॥
सार तत्त्व गोविन्द हमारा। प्रेम सिन्धु सब कर आधारा॥

कृष्णहिं मात पिता बन्धूजन। कर्त्ता हर्त्ता एकमात्र धन॥
माया बन्धन जीव दुखारी। गोविन्द बिना नहिं कोहु निस्तारी॥
कृपा करहिं गोविन्द कृपाला। माया बन्धन कट ततकाला॥
अस बिचारि कृष्णहिं भजि माई। ममता मोह सकल बिसराई॥

जन्म-मृत्यु दुःख-सुख दिन-राती। मिलन-वियोग सहज सब भाँती॥
हानि-लाभ आना अरु जाना। प्रभु रचि राखे सहज बिधाना॥
अस बिचारि करियै सन्तोषा। प्रभु पर कीजै पूर्ण भरोसा॥
दुःख में दुःख तुम कभी न मानौ। मंगल बिधान प्रभु का नित जानौ॥

प्रभु मंगलमय प्रभु विधान मंगलमय। हित जीवों का परम कृपामय॥
अस दृढ़ करि मन में निसकामा। कृष्ण कल्पतरु भजियै श्यामा॥
कर्मसूत्र बँधि जीव दुःखारी। कृष्ण भजन बिनु नहिं निस्तारी॥
कृष्ण रजायसु सिर धरि माई। कृष्ण कृपा मानहुँ अधिकाई॥

प्रभु आज्ञा तुम सिर धरि मानौ। परम कृपा गोविन्द की जानौ॥
कलि राक्षस प्रति दिन बलि खावै। देखि जीव दुःख हृदय कँपावै॥
नाम भीम से भेंट कराऊँ। जीवन के सब दुक्ख नशाऊँ॥
राधा-गोविन्द हृदय छिपाई। परम प्रीति सेवहु अधिकाई॥

माँ जननी तू धरती माता। जनहित सुत अरपे जगत्राता॥
कौशल्या की आयसु पाये। राम लखन वनवास पठाये॥
मथुरा गये युगल प्रिय भाई। अनुमति दीनी यशुदा माई॥
कुन्ती मां की आयसु पाये। विप्र पुत्र हित भीम पठाये॥

कलि राक्षस दिन-दिन बलि खावै। देखि जीव दुःख हृदय कँपावे॥
नाम भीम से भेंट कराऊँ। जग के सारे दुक्ख मिटाऊँ॥
भाँति अनेक मात समझाई। आयसु लीन्ह परम सुख पाई॥
संत हृदय नवनीत बताये। बज्र हृदय कबहू बनि जाये॥

संत की महिमा समझ न आये। का करिहहिं कोउ सोच न पाये॥
दुःख सागर महँ सबनि डुबाई। काशी गमन कीन्ह सिर नाई॥
जड़ चेतन शोकाकुल भयऊ। शुभ आशीष बृद्ध सब दयऊ।
चिरजीवी होयहु गुणवाना। कृष्ण प्रेम रति ज्ञान निधाना॥

सब जग में प्रकाश फैलाओ। सोये जन तुम जाइ जगाओ॥
'बास ग्राम' के सब जन आये। भये विकल रोबहिं बिलपाये॥
'बास ग्राम' के खग मृग नाना। लता-विटप वर बेलि बिताना॥
बाल वृद्ध नर नारी सारे। करि विलाप रोबहिं अति भारे॥

'बासग्राम' के बासी खग सम। सुख में डारेहु दुःख कठोरतम॥
'बासग्राम' अब भयहु अनाथा। मन मणि तुम लै जाबहु साथा॥
कल्पवृक्ष चिन्तामणि जाये। तन तजि मानहुँ प्राण पलाये॥
महा विपद नहिं जाइ बखानी। दारुण दुःख की मनु रजधानी।

पथ के गाँववासी

काशी जाबत लागत ऐसे। ध्रुव नारद सनकादिक जैसे॥
तेजबन्त वामन भगवाना। जाबत लोग करहिं सनमाना॥
परम प्रेम युत रसमय देहा। सुधा सार कर मानहुँ गेहा॥
शुभ्र दंत मुख कान्ति सुहाई। अंग-अंग सुषमा दिव्य भराई॥

नयन अधर नाशिका सुहाये। श्रवण वक्ष शोभा मन भाये॥
अंग-अंग शोभा गठन मनोहर। मनहुँ गन्ध प्रकटत इन्दीवर॥
देखि सखी यह बाल कुमारा। दरशन से मन हरत हमारा॥
यह झाँकी दुरलभ सखि मानों। मरुभूमि गंगा सम जानों॥

हमरे भाग्य उदित अब आली। बाल दरश दीन्हा वनमाली॥
मधुर सुखद प्रिय अमृत बानी। मृदु मुसकानि अमिय जनु सानी॥
रूप राशि द्युति सदगुन सागर। परम निपुण सब रस सुख आगर॥
वनमाली की अति प्रिय बाणी। प्रिया-पियूष तुल्य कल्याणी॥

कोटिन होबहिं जीभ हमारी। कहि न सकहिं कीरति वर सारी॥
शारद शेष कल्प शत गावें। इनकी महिमा पार न पावें॥
पावन भये भवन कुल सारे। सन्तुष्टे सब पितर हमारे॥
पूरब पुण्य पुंज हम कीना। हमरे मग इन दरशन दीना॥

हरि पद प्रिय का दरशन जोई। संसारी को दुरलभ होई॥
बाल वृद्ध नर नारी आये। सुन्दर तनु मन नयन बसाये॥
तुम्हरे पाद प्रणाम हमारा। अमर पूज्य पद पदम तुम्हारा।
दौरि दौरि मगवासी आबहिं। कोउ कोउ वृद्ध हृदय चिपटाबहिं॥

सिर कपोल मुख हाथ फिराबहिं। बहु प्रकार निज नेह दिखाबहिं।
जल भोजन विश्राम कराबहिं। विविध भाँति तेहि लाड़ लड़ाबहिं॥
पूछत बहुत भाँति कुशलाई। मात पिता परिजन निज भाई॥
मधुर बचन सब कहुँ परितोषहिं। विविध भाँति तिनकहुँ उपदेशहिं॥

कृष्णनाम चिन्तामणि सारा। कृष्ण प्रेम प्रेमामृत धारा॥
कृष्ण पाद प्रेमामृत झरना। सकल सुमंगल सुखप्रद चरना॥
कृष्ण प्राणधन सबके जीवन। कृष्ण बिना सब जन हैं निरधन॥
कृष्ण बिना कोहु न रखबारा। स्वारथ मीत सकल संसारा॥

कृष्ण भजहु दुःख चिन्ता नाईं। सकल ताप तृष्णा मिट जाईं॥
ग्यानी मानी कृष्ण न पाबहिं। कृष्ण प्रेम भक्तिवश आबहिं॥
जप तीरथ नाना व्रत नेंमा। कृष्ण मिलहिं नहिं बिनु पद प्रेंमा॥
सांख्य योग तप सों नहिं पाये। वेद पुरान उपनिषद गाये॥

निरमल सहज भाव सों पाई। दीनबन्धु हैं कृष्ण सदाई॥
जीवन मुक्त भजन नित करहीं। कृष्ण-भक्ति पथ ही अनुसरहीं॥
दीन-हीन सच्चे बन जाओ। राधाकृष्ण प्रेम पद पाओ॥
छिन-छिन पल-पल गोविन्द गाओ। संकीर्तन करि गोविन्द पाओ॥

गौ खर शूकर द्विज चाण्डाला। मान करहु बहु करुण दयाला॥
नित्य बनो तुम कृष्ण प्रणामी। जड़-चेतन पद कमल नमामी॥
इच्छा पूरण होंइ तुम्हारी। मिलहिं प्रेमधन कृष्ण मुरारी॥
अस सब भाँति सकल समझाये। करि प्रसन्न सब घर लौटाये॥

काशी पंथ चलत वे जाहीं। देह गेह कछु की सुधि नाहीं॥
वनमाली के चरित सुहावन। संत रसिक सबके मन भावन॥
मैं अति अधम कथा अति पावन। केहि विधि बरनहुँ चरित सुहावन॥
मो पर प्रभु कीन्हीं निज दाया। सेई वनमाली चरित लिखाया॥

श्रीगंगा महारानी

एहि बिधि काशी पहुँचे आई। देवनदी पुनि दीन्ह दिखाई॥
सुरसरि देखी परम सुहाबनि। सकल लोक त्रय ताप नशाबनि॥
देखि गंग कर निरमल बारी। प्रेम मगन तन दशा बिसारी॥
करत दण्डवत विनय सुनाई। परम प्रेम मन हरष भराई॥

करहिं दण्डवत बारहिं बारा। प्रेम विवश बह नयनन धारा॥
भूप भगीरथ तुमकों लाये। सकल लोक सुख-संपति छाये॥
देवि सुरेश्वरि भगवति गंगे। सकल सुखद तव तरल तरंगे॥
शंकरमौलि निवासिनि विमले। सब सुख-संपति तव पद कमले॥

दूरी कृत अघ बन्धन त्रासा। मेंटि मात यम के भव पाशा॥
निरमल जल तुमरो जो पीता। पाब परम पद नहिं यम भीता॥
नाम लेत तव गंगा माई। पाप ताप दुःख शोक नशाई॥
पाप भार धरि मैं सिर लाया। पाहि-पाहि तव शरणहिं आया॥

ब्रह्म बारि तव जग विख्याता। मंगलमूल रेनु तव माता॥
शुभ्र कान्ति तव निरमल बारी। सुधा स्वाद सम शीतलकारी॥
सुर नर मुनि सब महिमा गाबहिं। सकल फन्द यम के कटि जाबहिं॥
चार पदारथ करतल आबहिं। वेद पुरान सन्त सब गाबहिं॥

तव पद पंकज जो नित ध्यावत। मुक्त होइ सोइ भक्ति पावत॥
भव भय बश मैं शरणहिं आया। हरहु पाप दुःख काटहु माया॥
बहइ ब्रह्म द्रव जग बिख्याता। सकल ताप हर जग जन त्राता॥
तुम हो मंगलमूल निधाना। सब बिधि मात करहु कल्याना॥

त्यागि सबहि तव शरणहिं आया। सरबस मोर तोर पद छाया॥
पुनि-पुनि अस्तुति कीन्ह बहोरी। सब बिधि गंग शरण मैं तोरी॥

श्लोक— हे गंगे त्वं धन्याऽसि सर्व ब्रह्माण्ड पावनी।
कृष्ण पादाब्ज संभूता सर्वलोकै वन्दिता॥

काशीपुरी में श्रीविश्वनाथ भगवान के दर्शन

काशी विद्या ग्यान की नगरी। श्रीविश्वनाथ की मुक्ति पुरी॥
काशी में वनमाली आये। विश्वनाथ कहुँ शीश झुकाये॥
करहिं दंडवत श्रीबनवारी। पाहि-पाहि मैं शरण तिहारी॥
मो पर कृपा करहु दिन राती। अग्य अबोध बाल सब भाँती॥

आशुतोष प्रभु शरणहिं आया। करहु कृपा करुणा अरु दाया॥
हे भूतनाथ हे नाथ पुरारी। सब बिधि मैं अब शरण तिहारी॥
काशी विश्वनाथ भज प्यारे। हरि सेवक प्रभु स्वामि सखारे॥
हरि हर एक ही तत्त्व बखाना। काशी विश्वनाथ भगवाना॥

बाम भाग तव उमा सुहाये। कोटि काम छवि चित्त चुराये॥
माथे पर शशि शोभा पाये। जटा जूट गंगा लहराये॥
कर डमरू त्रिरशूल सुहाये। सकल पाप त्रय ताप नशाये॥
भूतनाथ बाघाम्बर धारे। चिता भस्म साँप गहनारे॥

कामदेव मद गंजन कीन्हा। सुर हित विषम गरल पी लीन्हा॥
आशुतोष प्रभु परम कृपाला। शिव सम कोउ न दीनदयाला॥
आगा पीछा कछु न बिचारहिं। भक्तन को सब कुछ दे डारहिं॥
काल काल महाकाल कहाबत। ब्रह्मादिक सुर पद आराधत॥

महाकाल कालं परमं कृपालं। सर्वनाथ नाथं नीलकंठं दयालं॥
ओंकार मूलं संताप नाशं। मुक्ति स्वरूपं कृपा निवासं॥
करे शूल पाणिं गले मुण्डमालं। भज विश्वनाथं बालेन्दु भालं॥
प्रसन्न वदनं कल्याण रूपं। भज विश्वनाथं प्रेम स्वरूपं॥

जप तप पूजा योग न जानहुँ। परम कृपालु शिव कहुँ मानहुँ॥
पुनि-पुनि पाद सरोज प्रणामा। पाहि-पाहि प्रभु पूरण कामा॥
सब बिधि नाथ मोहि अपनाओ। रामकृष्ण के दरश कराओ॥
गोविन्द पद रति देहु पुरारी। जनम-जनम रति बढ़हि हमारी॥

गोपेश्वर बनि तुमने प्रभु संग रास रचाया।
प्रभु कौ मैं हूँ दास दास पर करिहौ दाया॥
जरत सकल सुर वृन्द विषम विष पान कराया।
कृपा करी शिव बहुत लोक सब जरत बचाया॥

आशुतोष प्रभु अवढर दानी। सेवहुँ शिव मंगलमय जानी॥
निरमल मन जो शिव कूँ सेवहिं। हरि समेत सुख सम्पति देवहिं॥
शिव सेवा गोविन्द मिलाये। हरि सेवा श्रीराधा पाये॥
भक्तन हित शिव सरबस दाता। भज विश्वनाथ प्रभु जग जन त्राता॥

काशी में विद्या प्राप्ति

नितप्रति वे गंगा में नहाबहिं। विश्वनाथ के दरशन पाबहिं॥
पूजा कर गोविन्द मनाबहिं। पढ़न हेतु विद्यालय जाबहिं॥
काग चेष्टा बक सम ध्याना। स्वान नींद कम भोजन खाना॥
गृह त्यागी ममता कछु नाहीं। पंचशूत्र वह विद्या पाहीं॥

काशी पढ़त सकल तेहि जाना। पंडित विज्ञ अचम्भव माना॥
वेदान्त सांख्य वैशेषिक न्याय। योग मीमांसा मन को भाय॥
वेद शास्त्र इतिहास पुराना। अल्प समय वनमाली जाना॥
विद्या-बुद्धि करहिं बड़ाई। वनमाली सम पटु कोउ नाईं॥
विद्या कौशल सब मनभाये। वनमाली मन चित्त चुराये॥
गुरु सेवा वनमाली कीन्हे। विद्या गुरु बहु आशिष दीन्हे॥

स्वप्न एवं लीला - दर्शन

काशी पढ़त नहीं मन माना। वृन्दावन कहँु मन ललचाना॥
काशी विश्वनाथ भगवाना। स्वप्न दीन प्रभु कृपा निधाना॥
मम आशीष जाहु वृन्दावन। पावहु रामकृष्ण यदुनन्दन॥
रामकृष्ण प्रिय दोनों भाई। कृपा करहिं करुणा अधिकाई॥

पूरण सकल कामना होंई। करहु मनोरथ मन जोइ जोई॥
गौर-श्याम सुन्दर दोउ भाई। परम कृपा मूरति बहुताई॥
सेवहु जाइ सकल सुख सारा। माधुर्य-सिन्धु वे नन्द कुमारा॥
वृन्दावन उनकी रजधानी। प्रेम भूमि रस सब सुख-खानी॥

गोपेश्वर बनि वहाँ बिराजूँ। सकल काज भक्तन के साजूँ॥
जे गोपेश्वर दरशन करहहिं। सकल सिद्धि पावहिं भव तरहहिं॥
औरहु कृपा अनेकन कीन्ही। आशिष प्रेम भक्ति की दीन्ही॥
जावहु वृन्दावन आयसु मानी। अदृश भये शिव अवढर दानी॥

विश्वनाथ प्रभु परम कृपाला। सेवत रीझहिं दीन दयाला॥
शिव सम कोउ न सर्बस दाता। सुख-सम्पत्ति गोविन्द प्रदाता॥
तेहि निशि सोवहि श्रीबनबारी। देखेहु सपना विस्मयकारी॥
रामकृष्ण दोउ भ्रात विराजे। ब्रज के सखा संग सब साजे॥

गैया बछड़ा वन-वन फिरहीं। प्रमुदित जमुन कूल तृण चरहीं॥
खेलत विविध भाँति सब ग्वाला। उछलत कूदत हास्य विशाला॥
वृन्दावन के तरु सब फूले। फल फूलन के भारन झूले॥
बोलत खग बहु मधुर सुहाये। रामकृष्ण मन लेत चुराये॥

मंगल मूल जमुन जल बहई। सकल लोक जन पावन करई॥
शीतल मधुर जमुन जल भाई। गोविन्द प्रीति देवहि सुखदाई॥
सरसिज बिकसे नाना रंगा। बिहरत गुंजत बहु बिधि भृंगा॥
सखन संग न्हाये दोउ भैया। सखा लेत बहु प्रेम बलैयाँ॥

मूरति मधुर मनोहर भाई। अधर हँसनि मन लेत चुराई॥
प्रेम मगन पशु-पक्षी ग्वाला। प्रेम मगन बट कदम तमाला॥
प्रेम मगन जड़ चेतन हरषित। अनुपम छवि बलात मन करषित॥
श्याम गौर सुन्दर दोउ भाई। चलहिं दोऊँ गलबाहिं भराई॥

दो०— देखत शोभा सपन में प्रेम मगन वनमालि।
हुलसि हुलसि निरखत छवि अदृश भई हिय शालि॥

जागि परेहु बालक वनमाली। मनहुँ नीर ते मीन निकाली॥
रोबत बहु बिधि नयनन नीरा। रामकृष्ण रति पुलक शरीरा॥
हा गोविन्द कहाँ तोहि पाऊँ। हा बलराम कहाँ कित जाऊँ॥
दरशन देबहु दोनों भैया। कहाँ सखा बहु प्यारी गैया॥

हा हा प्राणनाथ कहँ पाऊँ। दरशन देवहु बलि बलि जाऊँ॥
कहँ यमुना अरु कहँ वृन्दावन। कहँ मधुवन प्रिय गिरि गोवर्द्धन॥
कहँ ब्रजवासी प्यारे भैया। कहाँ नन्द प्रिय यशुदा मैया।
हा ब्रज वृन्दावन कब देखौं। जीवन सफल धन्य करि लेखौं॥

हिलकि-हिलकि रोबत अति भारी। प्राणनाथ! हा नाथ! पुकारी॥
काह कहूँ अरु किनहिं सुनाऊँ। तुम दरशन बिनु मैं दुःख पाऊँ॥
हिय गर गर अरु आँखें झर झर। तन रोमांचित मुख गद् गद् स्वर॥
विरह ज्वाल हिय तन मन भीतर। तन मन पुलकित अश्रु झर झर॥

हिंकरि-हिंकरि रोबहि जंजीरी नन्दन।
तेहि कोटि अनंत बार पद वन्दन॥

खान-पान की सुरति बिसारी। रोबत करि बिलाप अति भारी॥
रामकृष्ण के मीत हैं प्यारे। वनमाली प्रिय प्राण सखारे॥
जनम जनम के सखा सनेही। कृपासिन्धु करुणा वैदेही॥
बिहरहिं वृन्दावन सब सुख देंही। मात पिता गुरु बन्धु सनेही॥

पद पंकज गोविन्द के ध्याये। मानसी सेवा में मन लाये॥
बिविध भाँति कर सेवा पूजा। प्रभु पद प्रीति उपाय न दूजा॥

विविध - मनोरथ

शिव आयसु अरु गोविन्द दरशन। परम कृपा मानी जिन मन मन॥
अबतो मैं वृन्दावन जाऊँ। गोविन्द चरण में प्रीति बढ़ाऊँ॥
वृन्दावन रसिकन रजधानी। महिमा याकी काहु न जानी॥
वृन्दावन परम रसीला धाम। विहरत निश-दिन श्यामा-श्याम॥

ललितादिक सब सेवा करहैं। प्रेम मगन मन मुदित बिचरहैं॥
जहँ राधे-राधे कण-कण बोले। बिटप-बेलि जहँ मधु रस घोले॥
शुक-शारी पिक राधे गाये। यमुन कूल बक पाँति सुहाये॥
वृन्दावन की शोभा न्यारी। कुँजन बिहरत कुँज विहारी॥

कुँजन बैठि भजन मैं करिहों। अनायास भव से मैं तरिहों॥
मंगल मूरति देखहुँ नयना। काशी में नहिं मो कहुँ रहना॥
प्रेम पूरि राधे मैं गाऊँ। राधा पद पंकज लपटाऊँ॥
राधा चरण में ध्यान लगाऊँ। मन मन राधा कृपा मनाऊँ॥

प्रातः होत यमुना में न्हाऊँ। बैठि बालुका ध्यान लगाऊँ॥
प्रतिपल गोविन्द गोविन्द गाऊँ। सब कहुँ पुनि-पुनि शीश नबाऊँ॥
सेवा कुँज निधिवन में जाऊँ। राधारमण छवि नयन बसाऊँ॥
राधारमण पद पंकज ध्याऊँ। राधारमण से प्रीति बढ़ाऊँ॥

तीनों ठाकुर की मधुराई। एक ही ठाकुर माहिं समाई॥
राधारमण अतीव मनोहर। भाग्यवान जन होयहिं गोचर॥
गोपाल भट्ट के जीवन धन। राधारमण पद तन मन अरपन॥
गोपाल भट्ट जब विनय सुनाई। शालग्राम से प्रकटे आई॥

श्रीगौर ही राधारमण भये हैं। प्रकटत नव नव नेह नये हैं॥
ब्रजमणि राधा प्रेम पगे हैं। भक्तन के तो मनहुँ सगे हैं॥
सेवा करते सबहिं गुसाईं। प्रेम चाव नित लाड़-लड़ाईं॥
राधा दामोदर थल मैं जाऊँ। प्रेमभाव से नाचूँ गाऊँ॥

गोपेश्वर बंशीवट जाबहुँ। यमुना पुलिन रज शीश लगाबहुँ॥
महारास थल देखहुँ जाई। रति रस रज में लौट लगाई॥
केशीघाट यमुना छवि निरखहुँ। शोभा लखि तन मन हिय हरषहुँ॥
शीतल यमुना जल में नहाऊँ। अंजलि भरि–भरि प्यास बुझाऊँ॥

इमलीतला श्रृंगार बट जाऊँ। मदनमोहन के दरशन पाऊँ॥
राधाकुण्ड में जाइ नहाऊँ। कृष्णकुण्ड में डुबकी लगाऊँ॥
युगल प्रेमरस भरेहु अपारा। राधाकुण्ड सब ब्रज कर सारा॥
गिरि गोवर्द्धन नयन लखाऊँ। परिक्रमा करि अति सुख पाऊँ॥

द्वादश वन में देखहुँ जाई। सखन संग हरि गाय चराई॥
संकेत वन बरसाने जाऊँ। नन्दगाँव में दरशन पाऊँ॥
जावट अरु कोकिल वन पेखहुँ। अष्ट सखीन के गाँवनि देखहुँ॥
गोकुल और महावन जाऊँ। दाऊजी के दशरन पाऊँ।

सब लीला थल देखहुँ जाई। करहुँ दण्डवत लोट लगाई॥
ब्रज वृन्दावन रज–रज छानी। प्रेम नयन देखहुँ मनमानी।
बिविध मनोरथ करि हुलसाये। प्रेम के लक्षन तन मन छाये॥

श्रीविश्वनाथ एवं श्रीगंगाजी से अनुमति

श्री विश्वनाथ के मन्दिर आये। पुनि–पुनि चरन कमल सिर नाये॥
वृन्दावन जाऊँ नाथ पुरारी। आयसु पाबहुँ कृपा तुम्हारी॥
आइ पुजारी माला दीन्ही। विश्वनाथ की आयसु चीन्ही॥
माला को आयसु ही माना। वनमाली मन अति सुख जाना॥

पुनि पहुँचे गंगा तट आई। परम प्रेम गंगहि सिर नाई॥
देखि गंग कर निरमल वारी। बाणी गद्‌गद् गिरा उचारी॥
माँ गंगे वृन्दावन जाऊँ। तव आयसु माता मैं पाऊँ॥
तव वियोग माँ बहु दुःख पाऊँ। गोविन्द हेतु वृन्दावन जाऊँ॥

बाल अबोध भूलि मत जइयो। दोष हमारे चित मत लइयो॥
हे जननी वृन्दावन जाऊँ। तुम्हरे दर्शन अब कब पाऊँ॥
वृन्दावन मोकूँ कृष्ण बुलाबै। कृष्ण बिना मोहि कछु न सुहावै॥
मेरे विरह वेदना भारी। छिन–छिन पल–पल होहुँ दुःखारी॥

याद कृष्ण की जब मोहि आबै। हिय गर गर मन फटि-फटि जाबै॥
हरि-हलधर प्रिय दोनों भाई। दरशन पाबहुँ मीत बनाई।
तव आयसु पाबहुँ मैं माई। सब बिधि कृपा करहु अधिकाई॥
तुम्हरे चरण-शरण सुख पाया। कृपा करहु निज सुत पर दाया॥

कृष्ण भक्त वनमालिहि चीनी। उच्छल तरंग माँ आयसु दीनी॥
मानहुँ रोबति गंगा माई। लहर रूप मनु अश्रु बहाई॥
कृष्ण विरह वेदना भराई। आयसु लीनि सबनि सिर नाई॥
गुरु सहपाठी नयन भराये। वनमाली कूँ विदा कराये॥

काशी से वृन्दावन आगमन

विविध भाव मन बुद्धि भराई। कब देखहुँ वृन्दावन जाई॥
करत मनोरथ बहु मन माहीं। तन रोमांचित अश्रु भराहीं॥
वृन्दावन भूमि दिव्य मनोहर। देखन तरसत ग्यानी सुर नर॥
अहो भाग्य जो दरशन पाबहिं। धन्य-धन्य नित बास कराबहिं॥

बहु विधि करत मनोरथ आये। वृन्दावन लखि अति हरषाये॥
शोभा निरखि नयन जल छाये। भई गति अटपटि बरनि न जाये॥
प्रेम विभोर भयहु वनमाली। वृन्दावन रज अंग-अंग मली॥
कीन्हेहु बहु बिधि दण्ड प्रणामा। भयहु आजु मैं पूरण कामा॥

श्रीरामकृष्ण की लीला भूमी। अति पावन बिहरे यहाँ झूमी॥
प्रेमसार मधुमय वृन्दावन। युगल प्रीति रस बरषत कन कन॥
यह भूमि चिन्तामणि सारा। रसिक जनन जीवन आधारा॥
तरु यहाँ कल्पवृक्ष बनि सोहहिं। लता कल्पलता बनि मोहहिं॥

श्री वृन्दावन रसमय चिन्तामणि। रज-रज कण-कण रत्न महामणि॥
कामधेनु सब धेनु सुहाईं। वन तृण चरहिं मुदित हरषाईं॥
ऋषी-मूनी बनि खग मृग आये। रामकृष्ण लखि तृप्ति न पाये॥
रूप-माधुरी कृपा बिलोकहिं। खग-मृग नयन अश्रुजल मोचहिं॥

बिटप डार बैठे खग जाई। तन रोमांचित अश्रु भराई॥
भूले खान-पान सुधि सारी। प्रेम विवश सब खग मृग झारी॥
यमुना बहइ परम सुखदाई। कृष्ण प्रेम में डूबी जाई॥
रवि तनया गोविन्द पटरानी। यम भगिनी शोभा गुन खानी॥

यमुना जल शीतल अति पावन। सकल लोक त्रय ताप नशावन॥
राधागोविन्द युगल बिहारी। वृन्दावन बिहरहिं प्रेम पुजारी॥
माधुर्य-रूप-लावण्य बसायें। निभृत निकुँज यमुना तट जायें॥
कुँजन मधुप करहिं गुंजारा। वनमाली हिय तन मन बारा॥

रूप सिन्धु माधुर्य डुबाये। प्रेम पुलक लोचन जल छाये॥
वृन्दावन महिमा को जन गाये। नव-नव रस तरंग छलकाये॥

श्रीवृन्दावन में पुनः पठन-पाठन

कीन्ह बास वृन्दावन आई। वृन्दावन पुनि कीन्ह पढ़ाई॥
शिक्षा गुरू अनेक बनाई। सकल शास्त्र तिन्ह समझे जाई॥
विद्या गुरु वनमालि पढ़ाये। जिनकी कृपा ग्रंथ प्रकटाये॥
श्रीजगन्नाथ श्री सीताराम। श्रीरासविहारी श्री राधेश्याम॥

साहित्य न्याय वेदान्त पढ़ाबहिं। व्याकरण आदि सब ग्रंथ जनाबहिं॥
गौड़ीय ग्रंथ आलोडन कीन्हा। सार सार सब कर गहि लीन्हा॥
व्याकरण विषय तेहि सहज ही जाना। पण्डित विज्ञ अचम्भव माना॥
भक्तिशास्त्र रस ग्रंथ पढ़े सब। आगम निगम पुराण पढ़े सब॥

वेद शास्त्र इतिहास पुराना। सकल मरम वनमाली जाना॥
श्रीमद्‌भागवत पढ़ते जाई। अक्षर-अक्षर कृष्ण लखाई॥
श्रीधर विश्वनाथ की टीका। वृंहद भागवत और चूर्णिका॥
सबही टीका समझीं जाई। श्रीरासविहारी गुरु बनाई॥

षट् संदर्भ पढ़े तिन जाई। भागवत चाबी तिनहिं बताई॥
श्रीगोपालचम्पू मनको भाये। आनन्द वृन्दावन चम्पू चित्त चुराये॥
सर्व संवादिनी जीव गुसाईं। वनमालि पढ़ी अति कठिन बताई॥
विद्या व्यसनी सो अति भारी। शास्त्र सकल तेहि बुद्धि विहारी॥

सरस्वति सिद्ध भई मन चीन्हा। हस्तामलक ग्यान सब कीन्हा॥
महा-विभूती जग की न्यारी। विद्या-बुद्धि अनुपम भारी॥
सकल ज्ञाननिधि शास्त्र विशारद। प्रेम-भक्ति मानहुँ मुनि नारद॥
आशुकवि घटिका शतकेन। काव्यकला रसिकन सुख देन॥

अल्प-वयस महाकाव्य रचाया। विमल चरित निज गुरु का गाया॥
बिधि ब्रह्मा जग एक बनाया। महाकवि कालीदास कहाया॥
शिक्षा गुरु मन मनहिं सिहाई। एहि सम छात्र न दृष्टि आई॥
वनमाली हम कीन्हें विस्मित। विद्या-बुद्धि सकल अचम्भित॥

शत-श्लोक प्रति घण्टा रचहीं। विलक्षण प्रतिभा सब उर बसहीं॥
पूर्व जन्म यह विद्या पाई। हमहिं मान देता अब आई॥
विद्या विनय विवेक भलाई। गुरु सहपाठी करहिं बड़ाई॥
गुरु सबही सेवा वश कीन्हे। आशीर्वाद बहुत बिधि दीन्हे॥

कठिन विषय जब गुरू पढ़ाबहिं। सहपाठी कछु समझि न पाबहिं॥
वनमाली ढिंग पूछत आई। सहज सरल बिधि देत बताई॥
सहपाठी सब बहु सुख मानहिं। वनमाली कहु मीत बनाबहिं॥
श्रीवनमाली वृन्दावन छाये। प्रतिभा लखि सब जन हरषाये॥
पढ़हि-पढ़ाबहिं बहु सुख पाबहिं। सेवा विनय भक्ति मन भावहिं॥

महान विरक्त संत श्रीकृष्णानन्ददासजी महाराज

सिद्ध संत कृष्णानन्द दास। ब्रज-वृन्दावन में करते बास॥
धीर धुरन्धर पंडित ग्यानी। विद्या बारिधि कवि विग्यानी॥
षड् दर्शन केशरि कहलाये। मानहुँ व्यास धरा पर आये॥
परम तेजस्वी चतुर सुजान। शिष्य जनों के जीवन प्रान॥

महा मण्डलेश्वर की ख्याती। संत-महंत जुरहिं दिन राती॥
संत-महंत करहिं सनमाना। आसन उच्च देहिं करि माना॥
प्रेम भक्ति विद्या गुण सागर। शिष्य एक से एक उजागर॥
सदगुरु शिष्य अनेक बनाये। विज्ञ एक से एक सुहाये॥

निज सदगुरु की आयसु पाई। कृष्ण भक्ति जग ज्योति जलाई॥
वनमाली रामहरी गुरु भाई। गुरु कृपा ख्याति जग पाई॥
कृष्णानन्द सख्य अवतारा। ब्रज गौरव अवनी निस्तारा॥
कृष्णानन्द जग ज्योति जलाई। भये अनेक शिष्य समुदाई॥

गाँव नगर जन पावन कीने। हरि अज्ञान नामधन दीने॥
तार्किक नास्तिक आस्तिक भये। नम्र भये गुरु शरणहिं लये॥
गाँव नगर उपदेशहिं जाई। प्रेम मगन किये जन बहुताई॥
कीर्तन मंडल बहुत बनाये। हरे कृष्ण महामंत्र है गाये॥

घूमि-घूमि तेहि सब थल जाई। कृष्ण भक्ति की धूम मचाई॥
खण्डन मण्डन परम प्रवीना। विद्या फल हरि भक्ति दीना॥
पाखण्ड निरत मत खंडन कीन्हा। वेद शास्त्र मत मंडन चीन्हा॥
कृष्णानन्द की ख्याति भारी। श्रवण करी वनमाली सारी॥

वनमाली गुरु दरशन आये। गुरु सिख राम हरी संग लाये।
गुरुसन कीन्हेहु दण्ड प्रणामा। गुरु आशीष दीन्ह अभिरामा॥
प्रेम पुलकि निज गले लगाया। सहित सनेह निकट बैठाया।
गौर बरण सुन्दर सुकुमारा। मुख मंडल आभा विस्तारा॥

ध्रुव प्रहलाद मनहुँ शुक आये। रूपामृत छवि गुरुहिं लुभाये।
गुरु सर्वज्ञ देखि मुख जाना। एहि सन जग होयहि कल्याना॥
गुरु उपदेश भाँति बहु दीना। सादर गुरु पद बंदन कीना।
रामहरी संग बापस आये। मनहुँ सुमन गुरु पाद चढ़ाये॥

श्रीवनमालिदास जी की गुरु दीक्षा

एक बार सदगुरु ढिंग आये। हिय की तड़फन गुरुहि सुनाये॥
श्रीचरण कृपा करि करुणा कीजे। जाते भव बन्धन मम छीजे॥
हे सद्गुरु! मोकहुँ अपनाओ। दीन जानि निज दास बनाओ॥
गुरु कृपा मेरा अवलम्बन। बिनु गुरु कृपा न गोविन्द दर्शन॥

कोटि अनन्त बार पद वन्दन। गुरु कृपा नहिं गोविन्द दर्शन॥
जे गुरुपद विश्वास जगाबहिं। रिद्धि-सिद्धि सबही चलि आबहिं॥
गुरु पद रज सिर उर जे लाबहिं। ते जन प्रेम पदारथ पाबहिं॥
महत पाद रज बिना नहाये। ईश्वर तत्त्व न अनुभव पाये॥

गुरु कृपा गोविन्द मिलाबै। जनम-जनम प्रभु पद रति पाबै॥
जे गुरु पद रज नहिं विश्वासा। तिनकी बिनसहिं सब सिधि आसा॥
लोक वेद ते जन बड़भागी। जे गुरु पद अम्बुज अनुरागी॥
गुरु पद पंकज सब सुख खानी। परम तत्त्व गोविन्द हि जानी॥

हे सदगुरु अब किरपा कीजै। मोकहुँ चरण-शरण में लीजै॥
श्रीरामकृष्ण मुख बिना लखाये। जिय की तड़फन कबहु न जाये॥
कृपा कीन्ह गुरु दीक्षा दीनी। वेद बिधि गुरु सब ही कीनी॥
पृथक-पृथक मंत्र सब दीने। मंत्रराज गोपाल हु लीने॥

'हरे कृष्ण०' महामंत्र है गाया। राम कृष्ण का रूप बताया॥
बत्तीस अक्षर सोलह हरिनामा। पूर्णचन्द्र पुजबहि मन कामा॥
जोगपीठ नवद्वीप वृन्दावन। बीज सहित काम गायत्री मंत्रन॥
नवद्वीप के मंत्र बताये। पंचतत्त्व पुनि-पुनि समझाये॥

वृन्दावन के मंत्र हु दीने। बीज सहित गायत्री लीने॥
वृन्दावन जोगपीठ परिवारा। वनमाली मन मति उर धारा॥
गुरु प्रणाली सबही बताई। सिद्ध प्रणाली मनहिं दृढ़ाई॥
मानसी सेवा रामकृष्ण की। सेवा दीनी सखा भाव की॥

सखा भाव की प्रीति दृढ़ाई। मंत्र जपन की रीति बताई॥
रामकृष्ण दोउ सखा हमारे। जनम जनम के मीत हैं प्यारे॥
साधक देह कृष्ण कीर्तन। सिद्ध देह राधागोविन्द सेवन॥
चन्दन तुलसी माल्य समर्पण। प्रेम सहित कर भोगहि अर्पण॥

पद चापन ताम्बूल बिजन। कर श्रृंगार प्रभु अरपहु तन मन॥
जल फल रस आदिक सब सेवा। समयोचित प्रभु इच्छित सेवा॥
परम प्रेम उपजै उर आई। देबें दरशन दोनों भाई॥
कलि में कृष्ण नाम अवतारा। नाम ही कलि करहहि निस्तारा॥

श्रद्धा सहित जपत मन लाई। रामकृष्ण प्रकटें दोउ भाई॥
निष्ठा करि हरि नामहि गाओ। प्रेमरूप गोविन्दहि पाओ॥
कृष्णहि गाओ कृष्णहि ध्याओ। कृष्णनाम ते हेत लगाओ॥
नाम प्रभु जब कृपा करावै। कृष्णनाम तब ही मुख आवै॥

कृष्ण नाम में निष्ठा जाही। करन योग्य कछु शेष न ताही॥
वेद पाठ जप तप व्रत भाई। सब कर फल हरि निष्ठा गाई॥
सोबत-जागत कृष्णहिं भजियै। खाबत-पीवत कृष्णहिं रटियै॥
कृष्ण भक्त की संगति कीजै। नाम रूप लीला चित दीजै॥

दश अपराध नाम के गाये। बचहु नाम प्रभु कृपा कराये॥
वनमालिदास अब नाम तुम्हारा। करिहौ ब्रज लीला विस्तारा॥
कृष्ण विमुख जीव अपनाई। करिहौ सम्मुख कृष्ण सदाई।
रामकृष्ण पद प्रेम तुम्हारा। नित नव बढ़हि अशीष हमारा॥

रामकृष्ण तुम पर नित हरषहिं। परम कृपा उनकी नित बरषहिं।
होयहि लोक ख्याति वनमाली। अच्युत गोत्र कुल के तुम माली॥
दरशन देवहिं प्रिय दोउ भाई। नित नव प्रीति बढ़हि सुखदाई।
आशीर्वाद दीन्ह बहु भाँती। हरि-हलधर के तुम प्रिय साथी॥

गुरु के चरन गहे अकुलाई। मन भावती अशीषें पाई।
प्रेम सहित गुरु वंदन कीना। वनमाली लगाइ उर लीना॥
नयन अश्रु दोउ गुरु सिख झर झर। तन रोमांचित मन हिय गर गर।
गुरु शिष्य गति अटपटि भई। श्रद्धा भक्ति रति उपजत नई॥

अकथ अगाध नेह सिख गुर को। जहँ न जाइ मन नर मुनि सुर को।
एहि प्रकार गुरु दीक्षा गाई। क्षमहहिं सज्जन मोर ढिठाई॥

श्रीवनमालिदासजी की प्रभु दर्शन लालसा

गुरु कृपा सब विद्या पाई। कृष्ण प्रेम उपज्यौ उर आई॥
रहते कृष्ण प्रेम में भूले। विरह वेदना में मन झूले॥
व्याकुल विरह वेदना भारी। प्राणनाथ ! हा नाथ ! पुकारी॥
कहँ मुरलीधर ! कहँ हलधारी। कहँ राधा वृषभानु दुलारी॥

कहँ ललितादिक सखियाँ सारी। कहाँ छिपे हरि कुँजबिहारी॥
कहँ श्रीदामा सखा हैं प्यारे। कहँ मधुमंगल मीत हमारे॥
हा वृन्दावन ! प्रिय वृन्दावन ! तव पद पंकज पुनि-पुनि वन्दन !!
गोविन्द प्रीति तुम उर में धारे। तुमहो रामकृष्ण के प्यारे॥

प्रेम भरा तुम्हरे रज कन कन। महिमा जानहि परम रसिक जन॥
बिविध भाँति प्रभु सेवा करते। सेवा करि प्रभु का मन हरते॥
सहज प्रीतिं तुम्हरी गोविन्द सन। भरी प्रीति तुम्हरे रज कन कन॥
तुम्हरे वन गोविन्द सुख पाये। बलराम प्रभु का चित्त चुराये॥

प्राकृत सुषमा कही न जाये। लता विटप फल फूल सुहाये॥
हा मेरे प्यारे वृन्दावन। कहाँ छिपे हैं मम नन्द नन्दन॥
हा हा मीत मेरे वृन्दावन। कहाँ छिपाये प्रिय जीवन धन॥
हे तुलसी तुम गोविन्द प्यारी। कहाँ मिलहिं मोहि श्री गिरधारी॥

हे लता विटप हे सखियन कुँज। गोविन्द छिपे कहाँ शोभा पुँज॥
हे कालिन्दी गिरि गोवर्द्धन। कहाँ छिपे प्यारे मनमोहन॥
हे द्वादश वन हे निधि वृन्दावन। कहाँ छिपाये मम यदुनन्दन॥
आन मिलो मो कहुँ तुम प्यारे। रामकृष्ण मम प्राण सखारे॥

रामकृष्ण कहँ खोजहुँ जाई। वृषभान कुँवरि श्यामा कहँ पाई॥
हा हा कृष्ण मोर जीवन धन। कहाँ ढूँढू मैं वन अरु उपवन॥
हे जड़ चेतन तरू लता। कहो कृष्ण बलराम पता॥

हा हा प्रभु राधागोविन्द हा हा राधा गोपी नाथ।
हा हा राधा मदनमोहन हा हा श्री श्री नाथ॥
हा हा कृष्ण प्राणनाथ हा हा प्रिया प्राणधन।
हा हा प्रेम सुधानिधि हा हा सर्बस भक्तजन॥

हा प्राणसखा प्राणमणि हा हा प्राणधन।
कहाँ पाऊँ कहाँ पाऊँ मुरली वदन॥
हा प्रेम रूप प्रेममणि हा हा प्रेम सुधा सिन्धु।
कहाँ पाऊँ कहाँ पाऊँ हा हा दीनबन्धु॥

अपनी रूप छटा दिखलाओ। प्रेमामृत प्रभु आन पिलाओ॥
हे खग मृग हे मधुकर सेना। तुम देखे हरि पंकज नयना॥
हा हा कृष्ण दिव्य रस सागर। हा गोविन्द प्रेम नट सागर॥
कृष्ण कृष्ण हे अन्तरयामी। पूरण साध करहु अब स्वामी॥

दीन जानि मो कहुँ अपनाओ। रामकृष्ण प्रभु दरश कराओ॥
तुम बिनु प्राण मेरे अकुलायें। आकर हे प्रभु दरश दिखायें॥
हे भक्त कल्पतरु जन प्रति पालक। हे दयाधाम हे अघ कुल घालक॥
हे कृपासिन्धु हे करुणा सागर। देहु निज प्रेम भक्ति नट नागर॥

राधा दामोदर कुँजविहारी। हा चन्द्रवदन वृषभानु दुलारी॥
हा प्रेममयी रस मूरति प्यारी। हा अलबेली प्रिय गिरिधारी॥
हा रस सागरि आगरि श्यामा। कृष्ण मुख चन्द्र चकोरी भामा॥
तव दरशन बिनु हम अकुलायें। गोविन्द संग फिर क्यों ना आयें॥

हा हा राधे रास मुकुट मणि। मम जीवन निधि तुम चिन्तामणि॥
हा लाड़-लड़ेंती राधा प्यारी। कृपा करहु बरसाने बारी॥
हा हा रसिक प्राणधन जीवन। रास रसिकनी भामिनि मोहन॥
हा हा नवल किशोरी श्यामा। रूप छटा सुकुमारी रामा॥

हा कुँज विलासिनि श्यामा प्यारी। तव बाट जोहते कुँज विहारी॥
हा कुँज स्वामिनी कुँज विलासिनि। हृदयहार गोविन्द निवासिनि॥
गोविन्द प्राणधन राधारानी। दरशन पाबहुँ ब्रज महारानी॥
दया कृपा करुणा तुम करियै। दरशन दे मम ताप हि हरियै॥

हा हा कृष्ण दिव्य गुण सागर। कमल नयन कृष्ण नट नागर॥
तप्त बालुका खग शिशु जैसे। तड़फत हूँ मैं तुम बिनु ऐसे॥
हे राधा गोविन्द कृपा कराओ। मम प्राणन की आँच बुझाओ॥
तुम दरशन बिनु तड़फत ऐसे। बिनु पानी मछली गति जैसे॥

प्रेम बिकलता तन मन छाई। करत प्रलाप भाँति बहु भाई॥
करहिं बिलाप अनेक प्रकारा। नयनन बह अश्रू की धारा॥
पुलकगात वनमाली राई। नयनन नीर चुचाबत जाई॥
बिलपत नयना अश्रु भारी। खग मृग के उर मनहुँ विदारी॥

हिंकरि हिंकरि रोबहि वनमाली। रामकृष्ण मन मोहनी डाली॥
अजातपक्ष जिमि तप्त बालुका। तिमि तड़फहि वनमालि बालका॥
प्रिया सहित वनमाली आये। वनमाली कूँ दरश दिखाये॥
रामकृष्ण प्रिय दोनों भाई। वनमाली लये उर लपटाई॥

सखा-सखी भेंटे पुलकाये। वनमाली उर तपन बुझाये॥
वनमाली सम को बड़भागी। रामकृष्ण पद अति अनुरागी॥

यार नहीं ब्रजराज कुमार सौं,
प्यार नहीं ब्रजबासिन को सौं,
हेत नहीं हरि भक्ति बरोबर,
देश नहीं ब्रज मण्डल जैसौं।

नाम रटैं जहँ राधिका कृष्ण
निर्मल जल यमुना जल कैसौं,
नाम नहीं मनमोहन कौसो
गाँव नहीं नन्दगाँव है जैसौं॥

प्रेम तथा काम

कालकूट विष ज्वाल जराबत। अमृत मधुर स्वाद मधु आबत॥
अमिय विषम विष फीका लागत। परम प्रेम जेहि तन उपजाबत॥
कालकूट विष दिव्यामृत मिलि। प्रेम कहाबत दोनों हिलि मिलि॥
विष अमृत जब मिल इक ठांई। ताहि संत अनुराग बताई॥

निज इच्छा सुख काम बताई। हरि इच्छा सुख प्रेम कहाई॥
काम लोह अरु प्रेम हेम सम। तम प्रकाश विष अमिय जान हम॥
काम प्रेम में भारी अन्तर। काम अन्धतम प्रेम भास्कर॥
केवल कृष्ण प्रेम वस आये। ग्यान योग तप हरी न पाये॥

श्रीबाँकेविहारी जी के दर्शन

बाँकेविहारी दरशन गये। प्रेम मगन तन पुलकित भये॥
कीन्हेहु बहुविधि दण्ड-प्रणामा। आजु भयहु मैं पूरण कामा॥
हरिदास के ठाकुर प्यारे। निधिवन प्रकटे सौभाग्य हमारे॥
परम प्रेम मूरति तव ठाकुर। करहिं विविध सेवा तव अनुचर॥

वृन्दावन निधि तुमहिं बतावत। वेद पुरान संत सब गावत॥
मो पर कृपा करहु सब भाँती। करहुँ दण्डवत मैं दिन राती॥
राधा के संग सदा विराजत। करहिं विहार महल सुख साजत।
विविध भाँति तिन्ह विनय सुनाई। छवि बरनत मन अति हरषाई॥

हमकों लगत विहारी प्यारे।
जाके मुख मण्डल की शोभा सब मिलि निरखत साँझ सकारे॥
अधर धरी वंशी कर राजत नयन मद भरे अरु रतनारे।
ललित त्रिभंगी रस बरषावत चकित चित्त मन मधुप हमारे॥
नीलकान्ति द्युति छिटकत तन सों निरखि छटा तन मन सब बारे।
प्राणनाथ सिर चरण धरहु प्रभु हृदय बसहु मोरे नन्द दुलारे॥

जय निधिवन जय बाँके विहारी। हृदय बसहु मम कुँज बिहारी॥
कीन्हे दरशन जहँ तहँ जाई। प्रेम विनय बहु भाँति सुनाई॥

श्रीयमुना महारानी

कबहू यमुना तट बैठहिं जाई। पद पंकज बिनबहिं हरषाई॥
यमुना बहइ परम सुखदाई। लेत सबन मन चित्त चुराई॥
दरशन करि पुनि-पुनि सिर नाबहिं। युमना के पद कमल मनाबहिं॥
परम प्रेम रोमाबलि छाई। करत दण्डवत विनय सुनाई॥

प्रेमरूप यमुना महारानी। रवि तनया गोविन्द पटरानी॥
यम भगिनी शोभा गुण खानी। हरि वाम अंश प्रकटीं सब जानी॥

हे कृष्णे त्वं धन्याऽसि सर्व ब्रह्माण्ड पावनी।
कृष्ण वामांससंभूता परमानन्दरुपिणी॥

परिपूर्णतमा साक्षात्सर्वलोकै वन्दिता।
परिपूर्णतमस्यापि श्रीकृष्णस्य महात्मनः॥

अहो अभाग्यं लोकस्य न पीतं यमुना जलं।
गो गोपिका संगे यत्र क्रीडति कंसहा॥

मंगलमूल सकल सुख करनी। दारिद दोष पाप दुःख हरनी॥
पावन परम रेनु तव यमुना। प्रेमामृत जल आनन्द अयना॥
यमुना जल शीतल अति पावन। सकल शोक त्रय ताप नशावन॥
बिटप बेलि मंजुल तट नाना। कुँज कूल मधुर खग गाना॥

यमुनोपरि खग पंक्ति उड़ाईं। तट बैठे खग बहुत सुहाईं॥
यमुन परस खग बहुत उड़ाईं। उड़त-उड़त खग जलचर खाईं॥
नाना बिटप बेलि वर जाती। फल अरु फूल सोह दिन राती॥
खग मृग बोलहिं मधुर सुहाये। चलत पथिक मन लेत चुराये॥

ऋषी-मुनी तट बास कराईं। तपसी योगी ध्यान धराईं॥
आश्रम बने मनोहर नाना। गुँजहिं मधुप करहिं कल गाना॥
परम रम्य बालुका सुहाई। सुखद सुशीतल कोमलताई॥
बैठि बालुका ध्यान जो धरते। मुक्तिदाता को बस करते॥

सुर नर मुनि सब महिमा गाये। दरशन करि भव सिन्धु तराये॥
भक्ति मुक्ति दोनों ही देतीं। तन मन ताप सकल हरि लेतीं॥
यमुना पुलिन प्रभु रास रचाये। राधा सखी बहुत सुख पाये॥
राधा भावसिन्धु में खोबहि। चन्द्र किरण रज झलमल होबहि॥

राम-कृष्ण नित लीला करते। सखन संग तट नित्य बिचरते॥
यमुना तट गौ वत्स चराते। सखन संग बहत सुख पाते॥
राम कृष्ण गौ वत्स चराबहिं। सखन संग बहु खेल रचाबहिं॥
यमुना तट जल क्रीड़ा करहीं। बिविध भाँति गोविन्द मन हरहीं॥

चार तरह के सखा बताये। जो गोविन्द मन चित्त चुराये॥
रामकृष्ण सेवहिं बहु भाँती। वन गृह संग रहहिं दिन राती॥
रक्तक पत्रक अरु मधुकंठा। रसाल बिसाल बेध कलकंठा॥
प्रेमकन्द मकरन्द कलिन्दा। भीम बकुल पुण्डरीक मिलिन्दा॥

भद्रसैन मधुवर्त्त श्रीदामा। मधु मंगल अरु सुबल सुदामा॥
दाम सुरेश सुमन सुभद्र। गन्ध बन्ध हंस बलभद्र॥
मंगल कपिल पल्लव कुलवीर। कोकिल बसंत भंगुर रणधीर॥
बरूथप किंकिणी अर्जुन गोभट। गृहल कडार पत्रि इन्द्रभट॥

विजय विलासी सन्धिक मणिबंध। उज्ज्वल बिटंक भारती विदग्ध॥
देवप्रस्थ ओजस्वी बसुदामा। पुष्पहास कलबिंक सनन्दन नामा॥
भट सुकंठ शिव तोष प्रभुकन्दा। वीरभद्र तेजस्वि मरिन्दा॥
आनन्द पयद अंशु चन्द्र हासा। रसदान सारदा बुद्धि प्रकासा॥

सुबाहक भद्रबर्द्धनहि गाये। वृषभेन्द्र भोज सुयक्ष सुहाये॥
ये सब क्रीड़ा कौतुक करहीं। रामकृष्ण सेवहिं मन हरहीं॥
कोई अपनी गोद सुबाई। पद पंकज चापत कोउ आई॥
कोई मृदु-मृदु पंखा झलई। कोई करता हास बतकई॥

शीतल निरमल जल कोहु लाबहि। मधुजल से प्रभु प्यास बुझाबहि॥
कोहू गुँजमाला आनहि। सहित सनेह गले पहनाबहि॥
पान-इलायची कोउ खबाबहिं। पंखा झलि श्रम बूँद मिटाबहिं॥
विविध भाँति सेवा मन लाये। चारु चतुर चित सखा चुराये॥

युमना तट सब सखा सिहाबहिं। कूदि-कूदि यमुना जल नहाबहिं॥
को बरणहिं यमुना की महिमा। सब बन्दहिं पद पंकज प्रेमा॥
भाग्यबन्त यमुना सम नाहीं। सब लीला देखीं प्रभु पाहीं॥
कृपा करहु यमुना पटरानी। गोविन्द प्रिया तुम सब सुख खानी॥

श्रीगिरिराज - गोवर्द्धन

कबहुँक गिरि गोवर्द्धन जाई। परिक्रमा करि अति हरषाई॥
गिर सम तीरथ त्रिभुवन नाहीं। दरशन कर पावन बनि जाहीं॥
गिरि गंगा जब लगि धरती पर। कलि प्रभाव नहीं अवनी पर॥
हरि हिय सन प्रकटेहु गिरि जानी। मुनि पुलस्त्य गिरि ब्रज में आनी॥

परम रम्य प्रभु गिरि गोबर्द्धन। ब्रह्मादिक सब करते वन्दन॥
मानसी गंगा निकलीं प्यारी। झरना झरहिं सुधा सम बारी॥
मानस ताप सकल हरि लेई। गोविन्द प्रेम पद भक्ति देई॥
चक्रेश्वर प्रभु तटहिं बिराजे। सकल सिद्धि तहँ नव सुख साजे॥

राधा को गिरि बहुत ही प्यारा। जहँ पाँव पलोटत नन्दकुमारा॥
सुषमा कुँज गुफन की न्यारी। मन हरषित बृषभानु दुलारी॥
त्रिबिध ताप हर बहति बयारी। पिक शुक बोलत अति मन हारी॥
सखिन्ह कुँज गिरि बास सुहाबहिं। राधागोविन्द मिलन कराबहिं॥
रासोत्वस नित-नित ही मनाबहिं। सखिन संग युगल सुख पाबहिं॥

गिरिराज हृदय गोविन्द का देता परमानन्द है।
गिरि के निभृत निकुँज में पाते सर्वानिन्द है॥

ललिता-विशाखा चित्रा रंगदेवी। तुंगविद्या इन्दुलेखा सुदेवी॥
चम्पकलता अनंग मंजरी। बृन्दादेवी रूप मंजरी॥
शुभांगदा हिरण्यांगी शिखावती। फुल्लकलिका रत्नरेखा कलावती॥
मैना मूरला कन्दर्प मंजरी। वृन्दारिका गुण रति रस मंजरी॥

मंजुलाली अरु विलास मंजरी। कस्तूरी अरु लवंग मंजरी॥
राधहिं सेवहिं बिविध प्रकारा। लाड़ लड़ाबहिं तन मन वारा॥
कोटिन सखि उपसखी मंजरी। कोटिन अनुचरि प्रिय सहचरी॥
कृष्ण बलरामहिं सेवहिं आई। बिविध भाँति करहहिं पहुनाई॥

श्रीविग्रह गोविन्द का राधा को सुख देत।
कुँज-कुँज सखियाँ बसत गोविन्द मन हरि लेत॥

गिरि सम वैष्णव नाहिं जगत में कोई भाई।
सबकौ पोषण करहि कृपालु एहि सम नाईं॥
रामकृष्ण पद परसि सदा रोमांचित रहते।
सेवा बिविध प्रकार सदा गोविन्द मन हरते॥

गिरि ऊपर विश्राम करहिं अरु खेल रचावें।
श्रीकृष्ण-बलराम सखन संग भोजन पावें॥
सुखद शिलन पर बैठि सुखद आनन्द मनावें।
करहिं हास परिहास फिसलि मन हर्ष भरावें॥

गिरि गोवर्द्धन कल्पवृक्ष चढ़ि मनहिं सिहावें।
अमृतरस से मधुर मधुर फल कबहू खावें॥
सुखद शिलन कौ परस पाइ दोउ मोद मनावें।
डारि गले में हाथ नृत्य कर गान सुनावें॥

तरु पर मरकट चढ़े बहुत उतपात मचावें।
नीचे ऊपर चढ़े कबहु तरु डार हिलावें॥
रामकृष्ण लखि हँसत सखन संग बहुत सिहावें।
परम रम्य गिरराज तलहटी नित प्रति आवें॥

शीतल मन्द सुगन्ध ताप हर बहति बयारी।
शुक-शारी पिक-पपिहा मोर बोलत सुखकारी॥
काली पीली धौरी धूमरि धेनु चरत मतवारी।
नाना खग मृग बिहरत रामकृष्ण मनहारी॥

रामकृष्ण पादाम्बुज से गिरि पुलकित रहते।
कोमल परस पद पाइ सदा मन हरषित करते॥
हरि मन की अभिलाष कामना पूरण करते।
फल रस आदि समर्पि प्रभु मन चित अति हरते॥

दो०— गिरराज शिला चिन्तामणि वृक्ष कल्पतरु जान।
कामधेनु सब धेनु हैं गिरि गोविन्द समान॥

गिरि महिमा नहिं बरणी जाई। प्रभु सन प्रिया कहति मुसकाई॥

यत्र वृन्दावनं नास्ति यत्र नो यमुना नदी।
यत्र गोवर्द्धनो नास्ति तत्र न मे मनः सुखम्॥

नाना चिह्न बने गिरि माहीं। पूजा करि जन मन हरषाहीं॥
गोविन्द पद हय गज पद प्यारा। कामधेनु पद पय की धारा॥
सिन्दूरि शिला प्रिया माँग भराये। निताई गौर परिकर मन भाये॥
इनका दरशन कर जो कोई। मुक्त होइ प्रभु पद रति होई॥

गिरि परिसर बहु संत बिराजहिं। संत दरश सब मंगल साजहिं॥
गिरि परिक्रमा जो जन करई। पूर्ण मनोरथ हरि मन हरई॥
करहुँ निहोर द्रोणगिरि नन्दन। कोटि अनन्त बार पद वंदन॥
हरि-हलधर प्रिय दोऊ भाई। दरशन दें उर गल लपटाई॥

नमो वृन्दावनांकाय तुभ्यं गोलोक मौलिने।
पूर्णब्रह्मातपत्राय नमो गोवर्द्धनाय च॥

श्रीमती राधारानी

कबहू प्रिय बरसाने जावहिं। राधा के पद कमलहिं ध्यावहिं॥
प्रेमसार महाभावहि जानी। महाभाव रूप श्रीराधारानी॥
कीरति कुँवरि वृषभानु नन्दिनी। भक्त हृदय आनन्द बर्द्धिनी॥
प्रेमरूप करुणा की मूरति। सखी मंजरी बहु बिधि सेवति॥

महारास रस ज्योति चन्द्र की। दीपावलि वृषभानु मन्द्र की।
चूड़ामणि गोलोक धाम की। कण्ठा भूषण प्रिया श्याम की॥
कान्ति की कुलदेवी राधा। तरुणाई की लक्ष्मी राधा॥
मधुराई की सम्पद राधा। लावण्य बाढ़ तरंगिनि राधा॥

अमृत का झरना है राधा। अधरामृत सुख सिन्धु राधा॥
कृष्ण इन्द्रिय सुख सम्पद राधा। कृष्ण प्राणधन सर्बस राधा॥
मुख सुधा सार नित बर्द्धनकारी। अंग-अंग कान्ति शोभा भारी॥
अधर बिम्ब नव विद्रुम शोभा। स्तन मुकुल नव अमृत लोभा।

फुल्लेन्दीवर नयन सुहाये। कुँज केलि गोविन्द लुभाये॥
जग मधुर सार लै प्रिया बनाई। शेष रहेहु जग सुन्दरताई॥
प्रेम रूप करुणा की मूरति। जन चिन्तामणि परम कृष्ण रति॥
वृन्दा विपिन स्वामिनी राधा। माधुर्य सिन्धु रस भरी अगाधा॥

राधा नाम सकल सुख सारा। रसिक कृष्ण जीवन आधारा॥
प्रेम स्वरुपिणि अति सुकुमारी। गोविन्द प्रिया वृषभानु दुलारी॥

हाव-भाव भ्रूविलास सकल अंग मण्डिता।
नव-नव कुँज केलि कामकेलि पण्डिता॥
मदोन्मत्त यौवने प्रियानुराग रंजिता।
नव स्तन मुकुल रस कुँजराज मोहिता॥

गोविन्द माधुरी देखि चकित वृषभानु दुलारी।
अचरज भरि सोचत है मन-मन कीर्ति कुमारी॥

क्या कामदेव मन मोर लुभाये। नहिं अनंग तनु वे नहीं आये॥
क्या अमृत सिन्धु यहाँ पधारे?। नहीं नहीं विस्तीर्ण वे भारे॥
क्या प्राणसखा गोविन्द पधारे। नहिं सखि मम सौभाग्य न भारे॥
सौन्दर्य नदी की अमृत धारा। सार रूप प्रिय नन्द कुमारा॥

यदि प्यारे गोविन्द ही आये। धन्य भाग्य सखि प्राण लुभाये॥
सौन्दर्य सिन्धु तन मनहिं डुबाऊँ। तन मन इन्द्रिय प्राण भराऊँ॥
निभृत निकुँज प्रभु कूँ ले जाऊँ। सुधा सिन्धु मन केलि डुबाऊँ॥
पूर्ण तृप्त तन मनहिं कराऊँ। गोविन्द संग मैं सब सुख पाऊँ॥

नव यौवन लावण्य मधुरिमा प्रभु कूँ अर्पित।
नवग्रह पूजा नव अंगन की कृष्ण समर्पित॥
रूपामृत तारुण्यामृत बिलसे सब अंग-अंगा।
लावण्य कान्ति सुषमा सुख की नव उठत तरंगा॥

प्रेम सुधा मुख निरखि कान्ह तन मन सब वारे।
बनि कृपा भिखारी खड़े रहत नित राधा द्वारे॥
हे प्रेमरूप गोविन्द मोहिनी श्यामा प्यारी।
पुनि-पुनि पद चापत तुम्हरे नित कुँज विहारी॥

तव पद पंकज चापि परम सुख गोविन्द पावें।
वक्ष नयन सिर लाइ काम की तपन बुझावें॥
हे कुँज स्वामिनी कुँज देवि तुम्हरी बलि जाऊँ।
हे श्याम प्रिया सुख खानि कृपा तुम्हरी नित पाऊँ॥

अरे कृष्ण प्रेम उत्पत्ति कहाँ?। राधा के पद कमल जहाँ॥
कृष्ण प्रिया कहौ कौन बताई?। अनुपम गुण गण श्रीराधा गाई॥
केश कुटिलता दृष्टि तरलता। नवरस मूरति कुच निष्ठुरता॥
कुँज केलि नव रस बरषाये। गोविन्द प्राण तन मन तरसाये॥

गोविन्द मनोरथ पूरण करहीं। कृष्ण सिन्धु नव मधु रस भरहीं॥
अद्भुत माधुरी पूर्ण अनन्ता। त्रिभुवन कोई न पाबहिं अन्ता॥
राधा प्रेम गुरू कहलाये। गोविन्द शिष्य नट शिक्षा पाये॥
राधा कृष्ण गुरू कहलाबत। नाना बिधि तेहि नाच नचाबत॥

प्रिया मान करि करये भर्त्सन। वेद स्तुति सम हरे कृष्ण मन॥
गोविन्द मधुरिमा राधा पीबहि। प्रिया माधुरी गोविन्द जीबहि॥
राधा संग जब कृष्ण सुहावत। तबहि मदन मोहन कहलावत॥
राधा संग जब कृष्ण न आवत। स्वयं मदन मोहित है जावत॥

राधा राधा रटत रहत नित कुँजविहारी।
रूप गुणों की खान सदा गोविन्द मन प्यारी॥
कृष्ण ह्लादिनी शक्ति सदा गोविन्द आराधहि।
पूर्ण मनोरथ करहि कृष्ण के सब सुख साधहि॥

गोविन्द प्रिया हे कुँज स्वामिनी राधारानी।
तव पद रज रति चाहूँ मैं हे महारानी॥
तुम करुणा की मूर्ति कृपा निज जन पर करियै।
वरद हस्त सिर धरौ सकल ब्याधा मम हरियै॥

रासेश्वरि कुँजेश्वरी गोपीजन सिर म्हौर।
जन्म जन्म गोविन्द रति नहिं मांगत कछु और॥
निभृत निकुँज सजाइ प्रेम सेवा मैं पाऊँ।
बहु बिधि लाड़लड़ाइ कुँज में भोग लगाऊँ॥

कृपा कीन्ह बरसाने बारी। दरशन दीन्हे कीर्तिकुमारी॥
वनमाली मन अति हरषाये। पुनः लौटि वृन्दावन आये॥

श्रीकृष्ण - बलदेव

कबहुँक नन्दगाँव में जाई। राम-कृष्ण के दरशन पाई॥
ब्रजमण्डल भूषण दोउ भाई। शोभा पुँज अधिक अधिकाई॥
मोर पंख सिर मुकुट सुहाये। कर मुरली प्रिय मधुर बजाये॥
कदम पुष्प प्रभु कुंडल धारे। नख शिख पहने वन गहनारे॥

गौर-श्याम सुन्दर दोउ भाई। परम मनोहर जन सुखदाई॥
मंदहास मन चित्त चुराबत। गोपी मन-मन बहुत सिहाबत॥
दिव्य अलौकिक रूप सजाये। नव गोपवधू मन दोउ समाये॥
नव नव शोभा मधुर सुहाई। गोपीजन बल्लभ दोऊ भाई॥

करुणामय प्रभु परम कृपाला। भक्तन हित अति दीन दयाला॥
गोपी वक्ष हार दोउ भाई। सबके लिए मन चित्त चुराई॥
ब्रज नव मणि उर नयन बसाये। भई गति अटपटि कही न जाये॥
सकल लोक भूषण दोउ भ्राता। आनन्द हू के आनन्द दाता॥

अहो भाग्य जो दरशन पाये। ब्रज तरुणी मन चित्त लुभाये॥
युगल रूप छवि जाय न बरना। प्रेम सिन्धु अमृत का झरना॥
गौर श्याम दोउ सुभग शरीरा। परम मनोहर अति बलबीरा॥
परम विलक्षण वेष सजाये। कोटि मदन छवि चित्त चुराये॥

परम कृपा मूरति दोउ भाई। भक्तन हित प्रभु धर करुणाई॥
गौर श्याम अब करुणा कीजै। वनमाली को दरशन दीजै॥
हे बलराम कृष्ण के प्यारे। कृपा करहु करुणा उर धारे॥
प्राण प्रिय गोविन्द हमारे। दरशन देबहु ताप मिटारे॥

कृष्ण राम प्रिय यशुदा प्यारे। सखी प्राण प्रिय नन्द दुलारे॥
धेनु चराबत देखहुँ भाई। कर मुरली प्रिय लकुटि सुहाई॥
यमुना कूल कदम्ब सुहाये। नव ब्रज गोपी चीर चुराये॥
निष्ठुर कुच तकिया तुम कीने। ब्रज तरुणी तन मन हरि लीने॥

महारास करि उनहिं रिझाया। फिर अधरामृत पान कराया॥
भोली गोपी बस करि लीना। फिर उनको दारुण दुःख दीना॥
गोपिन के मन चित्त चुराई। मथुरा गये युगल प्रिय भाई॥
को निष्ठुर तुम सम जग जाया। सुखी कीन्ह फिर दुःखी कराया॥

सरल गोपि तुम सब सुख लीना। जो चाहा सो सब कुछ छीना॥
नव गोपबधू मन तुमही चुराये। अब दर्शन देबत क्यों सकुचाये?॥
रसमय विग्रह तन अति प्यारा। रूपराशि माधुर्य कुमारा॥
सुन्दरता कहुँ सुन्दर करई। लावण्य राशि सुषमा मन हरई॥

मैं वनमाली सखा तुम्हारा। कीना न्यौछावर ये जग सारा॥
कब भुजभरि भेंटहुँ तुम पाहीं। कब तुम्हरे उर गल लपटाहीं॥
यमुना जल में क्रीड़ा करते। कोमल जल प्रपात तन भरते॥
कब पिचकारी जल में डारहुँ। होउँ सुखी मैं तन मन बारहुँ॥

वृन्दावन के पुष्पहिं लाई। पहनाबहुँ गल हार बनाई॥
प्यास लगे यमुना जल लाबहुँ। भूख लगे फल मधुर खबाबहुँ॥
पद चापहुँ तन मन हरषाई। परम नेह ताम्बूल खबाई॥
वनमाला तुम गल में डारूँ। करूँ आरती तन मन बारूँ॥

मधुर हास परिहास कराई। कबहू लेबहु उर चिपटाई॥
श्रम बिन्दु हर बिजन ढलाई। सब बिधि करूँ नाथ सेवकाई॥
कृपा कीन्ह गृह बन्धन काटी। युगल चरण देखहुँ दिनराती॥
तव पादाम्बुज दरशन पाबहुँ। दरशन करि मन हियहि सिराबहुँ॥

कृपा करहिं तब उर में आबत। बिनु हरि कृपा न ऋषि-मुनि पावत॥
सौन्दर्य सार दोऊ बलवीरा। बंशी बादक हलधर बीरा॥
हे प्राणसखे मुख दरश कराओ। युगल मधुर मधु सुधा पियाओ॥
तुम दरशन बिनु जीवन जाये। हा धिक धिक तन मन दुःख पाये॥

हे इन्द्र नीलमणि गोविन्द प्यारे। बलराम सहित अब दरश दिखारे॥
हे रोहिणी नन्दन कृपा कराओ। गोविन्द हि लाकर खेल रचाओ॥
राम कृष्ण कब दरशन पाबहुँ। दरशन करि हिय तपन बुझाबहुँ॥
कृपा सिन्धु प्रभु दीनदयाला। शील सनेह भगत प्रतिपाला॥

यदि सर्वशक्ति धर ईश कहाओ। तो दोनों भैया दरश कराओ॥
दरशन यदि ना प्रभु तुम देवहु। तो सर्वेश्वरता बापस लेबहु॥
हरि हलधर प्रिय दोनों भाई। कृपा करहु मन चित्त चुराई॥
तव किरपा मम बहुत सहारा। तुम सम कोउ न हितू हमारा॥

रामकृष्ण प्रिय सखा हमारे। नन्द यशोदा रोहिणी प्यारे॥
मम नयनन गोचर कब आओ। कृपा करहु मोहि गले लगाओ॥
कोटि काम छवि सुभग शरीरा। परम कृपा मूरति बलबीरा।
सखा-सखीन के प्राणन प्यारे। रूप सुधा मन मधुप हमारे॥

राम कृष्ण प्रिय दोनों भाई। नख शिख एक ही रूप बनाई॥
केवल रंग पहचान बताई। गौर श्याम छवि अद्भुत छाई॥
हा हा प्राणनाथ दोऊ भाई। मो पर कृपा करहु अधिकाई॥
छिन छिन पल पल युग सम जाई। नयनन में पावस ऋतु आई॥

मुख सूख गया यदि रोते हुए,
तब अमृत ही बरषाया तो क्या?।
भव सागर में जब डूब चुके ,
तब नाविक नाव को लाया तो क्या?॥
युग लोचन बन्द हमारे हुए,
तब निष्ठुर है मुसिकाया तो क्या?।
जब जीवन ही न रहा जग में,
तब दरशन आके दिखाया तो क्या?॥

आरत विनय करुणता लाई। निरमल मन जन प्रभुहि सुहाई॥
कोमल चित अति दीनदयाला। निज भक्तन प्रति परम कृपाला॥
रामकृष्ण प्रभु दरशन दीने। हिय लगाइ वनमाली लीने॥
बहु प्रकार तेहि प्रीति दृढ़ाई। सुख आनन्द न मनहिं समाई॥

अनुपम शोभा परम मनोहर। गौर-नील प्रकटे इन्दीवर॥
गौर श्याम सुन्दर दोउ भाई। वनमाली उर गये समाई॥
अस प्रभु प्रीति बढ़ी उर माही। बिविध रूप धरि दरश कराहीं॥
बहुत बार प्रभु दरशन दीने। बनि आबत प्रभु नित्य नवीने॥

निज जन दोष न प्रभु चित लाबहिं। निज सेवक गुण शत-शत गाबहिं।
पुनि-पुनि परम प्रेम प्रभु ध्याबहिं। कमठ अंड जिमि ध्यान धराबहिं॥
राम कृष्ण शरणहिं जो आये। योगक्षेम सब भाँति निभाये॥
सब बिधि प्रभु सेवक रुचि राखी। वेद पुरान संत सुर साखी॥

ब्रह्मा सुर मुनि वंदन करहीं। सकल बिपति निज जन की हरहीं॥
वनमाली प्रभु के अति प्यारे। निज परिकर अति प्रिय सखारे॥
रामकृष्ण प्रिय दोनों भाई। कीन्हीं कृपा अधिक अधिकाई॥
मैं गरीब कछु लायक नाहीं। करुणा कृपा करहु मो पाहीं॥

श्रीदाऊजी के दर्शन

दाऊ दरशन कीन्हे जाई। प्राणसखा से भेंटेहु आई।
करत दण्डवत विनय सुनाबत। नयनन अश्रू धार बहाबत॥

जय जय बलराम श्री रेवती रमण।
जय जय बलभद्र सहस्त्र शेष फण॥
जय जय बलदेव अनन्त जगदाधार।
तव पद पंकज कोटि कोटि नमस्कार॥

जयति श्रीबलदेवः सर्वधर्म प्रवर्त्तकः।
भक्तानां पालको नित्यं शरणागत वत्सलः॥
देवादिदेव भगवन कामपाल नमोऽस्तुते।
नमोऽनन्ताय शेषाय साक्षात् रामाय ते नमः॥

बलाय बलभद्राय तालंकाय नमो नमः।
नीलाम्बराय गौराय रोहिणेयाय ते नमः॥
बलाय बलभद्राय हरये परमात्मने।
प्रणत क्लेश नाशाय रेवती पतये नमः॥

जय जय अच्युत देव परात्पर,
स्वयमनन्तदिगन्तगत श्रुत।
सुर मुनीन्द्र फणीन्द्र वराय
ते मुसलिने बलिने हलिने नमः॥

तुमको शत-शत बार प्रणाम।
हे बलदाऊ भैया॥

भक्तजनों के प्राण तुम्हीं हो। सबके पालक हे बलराम॥
मृदुल चित्त करुणामय स्वामी रीझहु बेगि दया के धाम।
सुर नर मुनि वन्दित पद सेवित भाजत पाप लेत तव नाम॥
गौर वदन छवि रूप माधुरी लाजहिं कोटि-कोटि शत काम।
अनुज सहित बहु लीला कीन्हीं मम हिय बसहु गौर घनश्याम॥

श्रीधाम वृन्दावन एवं ब्रजमण्डल दर्शन

परम रम्य वृन्दावन धाम। कल्पवृक्ष शोभित अभिराम॥
राधागोविन्द गोपीजन नन्दित। परम मधुर ब्रह्मादिक वंदित॥
नाना पुष्प गन्ध परिपूरित। सखा सखी सुर नर सब पूजित॥
वृन्दा देवी तहाँ विराजत। महिमा शोभा कहि नहिं जाबत॥

कलिन्द नन्दिनी छवि अति पावत। सरसिज बिकसे बहु बिधि राजत॥
मुरली रव जहँ पड़हि सुनाई। कदम्ब कुँज शोभित अधिकाई॥

ध्वनित वंशी काकली रसज्ञ मृग मंडला।
खग रति चातुरी कुँज पुञ्जोज्वला॥
प्रेम रस माधुरी बसी कुञ्ज-कुँज है।
लक्ष्मी सरस्वती उमा भ्रमति पुँज पुँज है॥

कल्पलता सुरतरु अति छाये। कामधेनु बहु गोप चराये॥
गंगा गोदावरि बास कराये। पुष्कर-प्रयाग फल पग-पग पाये॥
रज कण कण मधु रस बरसाये। प्रेम माधुरी सब दिशि छाये॥
कुँजन की शोभा अति प्यारी। युगल प्रीति रस बहता भारी॥

वृन्दावन गिरि जहँ न विराजत। यमुना सरिता जहँ न बहाबत॥
मम मन तहँ लागत कभु नाईं। प्रिया दई गोविन्द बताई॥
राधे राधे सब कर गाना। वृन्दावन महिमा कोई न जाना॥
लौकिक नयनन गोचर नाईं। प्रेम नयन तेहि रूप लखाई॥

दो०— संत शिरोमणि कवि मुकुट सखा कृष्ण बलराम।
कहों चरित गद् गद् हिये सुनहु संत सुखधाम॥

कीन्ह बास वृन्दावन आई। देखहिं नित प्रति वनहिं सुहाई॥
बाँके विहारी दरशन जाबहिं। राधाबल्लभ दरशन भावहिं॥
सेवा कुँज अरु निधिवन देखहिं। कुँज बैठि 'श्री' कृपा बिलोकहिं॥
सेवा कुँज करि दण्ड प्रणामा। भजन करहिं पाबहिं विश्रामा॥

सेवा कुँज रज लोट लगाबहिं। नयनन अश्रू धार बहाबहिं॥
वनखण्डी प्रभु गोकुलानन्द। श्यामसुन्दर प्रभु श्यामानन्द॥
करहिं दण्डवत तन पुलकाये। सवा मन शालग्राम लखाये॥
राधा दामोदर मन्दिर जाई। ठाकुर सबहिं प्रणाम कराई॥

श्रीरूप गोसाईं भजन समाधि। भूगर्भ गोसाईं सब वैष्णव आदि॥
जीव गुसाईं कृष्ण कविराज। करि प्रणाम सब गौर समाज॥
करहिं दण्डवत भावुक होबहिं। कृपा करहु सब कहि-कहि रोबहिं॥
बार-बार तहँ रज में लोटहिं। रूप गुसाईं के पाँव पलोटहिं॥

श्यामसुन्दर के मन्दिर जाई। राधा हिय विग्रह सिर नाईं॥
राधा माधव लोटन कुँज। मीरा मन्दिर टोपी कुँज॥
करहिं दण्डवत पुनि-पुनि जाई। तन पुलकित अश्रु झरि लाई॥
चीर घाट अरु भ्रमर घाट। सूर्य घाट गोपाल घाट॥

इमलीतला अरु केशी घाट। श्रृंगारवट अरु युगलघाट॥
अद्वैतवट अरु बिहार घाट। गोविन्द कुण्ड गोविन्द घाट॥
मदनमोहन के मन्दिर गये। प्रेम मगन मन हर्षित भये॥
सनातन भजन कुटीर समाधी। कालीदह सब देखे आदी॥

रास पुलिन लखि धीर समीर। मन उर जागी करुण पीर॥
यमुना पुलिन अरु रास पुलिन रज। वंदत शुक सनकादिक शिव अज॥
वंदत लोटत भाग्य सराहत। अहो भाग्य मम कहि कहि गावत॥
राधारमण के दरशन कीने। श्रीविग्रह मन-मति-चित दीने॥

राधारमण अतीव मनोहर। स्वयं कृपा वश होबहिं गोचर॥
परम करुण प्रभु लाड़ लड़ाये। प्रेम के लक्षण तन-मन छाये॥
गोपाल भट्ट को प्रभु अति प्यारे। तन मन धन अर्पण करि डारे॥
परम प्रेम युत विग्रह प्यारा। अंग-अंग छिटकत कान्ति धारा॥

गोपाल भट्ट के हृदय रमण। भक्तन के त्रय ताप हरण॥
बाढ़त प्रभु लखि परम सनेहा। अति सुकुमार रूप रस गेहा॥
जद्यपि हैं छोटे से ठाकुर। महिमा अपार ईश्वर के ईश्वर॥
आर्त्त विनय गोपाल सुनाई। सालग्राम से प्रकटे आई॥

तीनों ठाकुर की मधुराई। राधारमण प्रभु माहिं समाई॥
गोपाल भट्ट के जीवन धन। गौरांग भये प्रभु राधारमण॥
पुनि-पुनि कीन्हे दण्ड-प्रणामा। अहो भाग्य मैं पूरण कामा॥
गोपीनाथ मन्दिर में जाई। प्रेम विनय बहु भाँति सुनाई॥

गोविन्द मन्दिर देखेहु जाई। गिरेहु लकुटि इव धरनी भाई॥
करहिं दण्डवत बारहिं बारा। प्रेम मगन बहे अश्रू धारा॥
परम विचित्र मन्दिरहि देखी। भयहु उर आनन्द विशेखी॥
वृन्दावन जोगपीठ सब गाये। योगमाया लखि अति हरषाये॥

राधा गोविन्द रास रचाये। यहाँ रात्रि शयन विश्राम कराये॥
वृन्दादेवी कर पहुनाई। नाना भाँति करहि सिवकाई॥
बिविध भाँति भोजन पकवाना। मधुरस मधुफल देवहि नाना॥
वंशीवट गोपेश्वर जाई। करी दण्डवत विनय सुनाई॥

समाजबाड़ी देखन गये। उर आनन्द मगन मन भये॥
गौर सभा लखि वे हरषाये। तन पुलकित लोचन जल छाये॥

दो०— बन्दहुँ सबके पद कमल पुजबहु मन हिय काम।
कृपा करहु मो दास पर मिलहिं कृष्ण बलराम॥

करहिं दंडवत बारहिं बारा। गौर भक्त मम प्राण अधारा॥
रंगनाथ के दरशन गये। कात्यायिनी लखि हरषित भये॥
महायोगिन तुम ही महामाया। मैं वनमाली शरणहिं आया॥
नमो नमः पद कमल तुम्हारे। कृपा करहु करुणा उर धारे॥

नन्द गोप सुत दोनों भाई। कृपा करहिं मोहि लें अपनाई॥
सर्वत्र जगह वृन्दावन जाई। सब थल देखेहु शीश झुकाई॥
जन्मभूमि भूतेश्वर जाई। विश्राम घाट पुनि देखेहु आई॥
द्वारिकाधीश मन्दिर में आये। परम प्रभु कूँ शीश झुकाये॥

औरहु तीर्थ अनेक लखाये। वनमाली मन अति हरषाये॥
मथुरा के लीला थल देखी। भयहु उर आनन्द विशेखी॥
कोयला बाद बसई अरु मधुवन। धनगाँव ताड़सी और कुमुदवन॥
भाण्डीर भद्रवन और बेलवन। मानसरोवर पानीगाँव लोहवन॥

रावल देखी अति हरसाई। वृषभानु सुता जहँ जन्मी आई॥
कीर्ति कुमारी राधा प्यारी। नमो नमः बरसाने बारी॥
गोकुल और महावन आये। मुख्य मुख्य थल दरशन पाये॥
चौरासी खम्भा नन्द भवन। मन हरषित भये प्रेम मगन॥

ब्रह्माण्ड घाट रसखान समाधी। पाताल देवी योगमाया आदी॥
रमणरेति प्रभु रमणविहारी। महिमा देखी इनकी न्यारी॥
संतन कुटिया मनहिं लुभाये। दरशन करि तन-मन हरषाये॥
सब थल देखेहु जहँ तहँ जाई। प्रेम सहित सब कहुँ सिर नाई॥

दाऊजी के दरशन पाये। करी दण्डवत विनय सुनाये।
छिपीं रेबती कोंने जाई। ऐसे दरशन दुरलभ पाई॥
सौभरि वंशज कर सेवकाई। सेवा पूजा भोग धराई॥
यमुना कूल खड़ैरा गये। गर्ग मुनी थल देखत भये॥

चिन्ताहरण घाट पुनि आये। चिन्तेश्वर के दरशन पाये।
अड़ींग माधुरी कुण्ड बिहारवन। जैंत जौनई और बहुल वन॥
राधाकुण्ड कहुँ शीश झुकाई। कृष्णकुण्ड आनन्द मनाई॥
राधाकुण्ड परम वैष्णव धन। करहिं दण्डवत पुलकित तन मन॥

युगल कुण्ड स्नान कराई। परम प्रीति मन हरष भराई॥
कुसुम सरोवर उद्धव कुण्ड। ग्वाल पोखरा नारद कुण्ड॥
गिरि गोवर्द्धन मानसी गंगा। करि परिक्रमा भक्तन संगा॥
आन्यौर पूँछरी गोविन्द कुण्ड। किलोल कुण्ड अरु सुरभी कुण्ड॥

गिरि लीला थल मनहि समाये। वनमाली तन मन हरषाये॥
जतीपुरा संकर्षण कुण्ड। कदमखण्डी ऐरावत कुण्ड॥
दानघाटी अरु गौरी कुण्ड। नीपकुण्ड पाप मोचन कुण्ड॥
चन्द्र सरोवर पैठा गाँव। सोंख गांठौली अरु बछगाँव॥

नीमगाँव कुँजेरा गाँव। सींह पलसों महरौली गाँव॥
सूर्य कुण्ड रहेणा सहार। पाली भरना अरु ततार॥
साँखी अलबाई अरु उमराया। रनबारी खानपुर खायरा भाया॥
पिशाबा आजनोंख कमई करहला। हाथिया चिकसौली अरु डाभाला॥

बरसाने वृषभानु दुलारी। परम प्रेममय कीर्ति कुमारी॥
ब्रह्मांचल श्री मन्दिर जाई। आर्त्त विनय बहु भाँति सुनाई॥
कृपा करहु हे राधा रानी। पावहुँ राम-कृष्ण मम स्वामी॥
सखीन संग मोहि दरशन दीजै। मेरी सकल व्यथा हरि लीजै॥

पीली पोखर भानू कुण्ड। साँखरी खोर अरु कीर्ति कुण्ड॥
दान मानगढ़ मोर कुटी। प्रेम सरोवर प्रेम कुटी॥
ललिता का गाँव है ऊँचा गाँव। अलता पहाड़ी संकेत गाँव॥
रीठौरा चन्द्राबलि जाई। नन्दगाँव वनमाली आई॥

दरशन कीने मन्दिर आई। रामकृष्ण लखि अति हरषाई॥
प्रेम पुलक लोचन जल छाये। विनय कीन्ह बहु शीश झुकाये॥
नन्देश्वर के दरशन पाई। विश्वनाथ की कृपा मनाई॥
आशेश्वर अरु पावन कुण्ड। महाप्रभु बैठक धोयनि कुण्ड॥

रूप-सनातन भजन कुटीर। दरशन करि मन भयहु अधीर॥
नन्दीश्वर तड़ाग अरु मत्ति कुण्ड। पौर्णमासी ललिता-विशाखा कुण्ड॥
सप्त वृक्ष मंडली नारद कुण्ड। टेर कदम्ब अरु सूरज कुण्ड॥
वृन्दा-गुप्त कुंड पर जाई। हिय आनन्द न मनहि समाई॥

पिलोली चिल्ली जावट आये। राधाकान्त प्रभु दरशन पाये॥
किशोरी कुण्ड कहुँ कीन्ह प्रनामा। भयहु आज मैं पूरण कामा॥
धनसींगा कोसीकला कोटवन। चरण पहाड़ी बठैन कोकिल वन॥
चौमुहाँ पसौली बसई बत्सवन। श्री अक्षयवट तपोवन खेलन वन॥

नरी सेंमरी और छत्र वन। पैगाँव उझानी नन्द भवन॥
बहज बरौली श्याम ढाक किशनपुर। नगला मोती मालीपुरा मालपुर॥
डीग लठावन अरु दिदाबली। परमदरा सेऊ सखियाँ कृष्ण मिली॥
आदि बद्री अरु केदार नाथ। दरशन करि मन भयहु सनाथ॥

नगला महारानियाँ जाइ देखेहु। गुहाना खोह विराटहु पेखेहु॥
भयारी कायरी अलीपुर गाँव। पसोपा मोरौली पल्ला गाँव॥
बादली करमूका चरण पहाड़ी। बासरा इन्द्रौली छिछर बाड़ी॥
कदमखण्डी प्रभु रास रचाये। वनमाली मन अति हरषाये॥

अष्ट सखीन के गाँवनि देखी। भयहु उर आनन्द विशेषी॥
कनबाड़ा मुरार काम्यवन। बृन्दा देवी विष्णु सिंहासन॥
राधागोविन्द पदहि मनाई। बृन्दा मन्दिर बैठेहु जाई॥

वृन्दा देवी समेताय गोविन्दाय नमो नमः।
मुक्ति रूपाय कृष्णाय वासुदेवाय केलिने॥

मदनमोहन गोकुल चन्द्रमा। तहँ वनमाली मन बहुत रमा।
विमल कुंड रामेश्वर जाई। चरण पहाड़ी कहूँ सिर नाई॥
कामेश्वर प्रभु विश्वनाथ। गया कुण्ड राधा गोपीनाथ॥
सेतुबन्ध अरु पाण्डव कुण्ड। सिद्ध भजन कुटी लुक छिप कुण्ड॥

चौरासी खम्भा अति मन भाया। परम विचित्र सो मनहि समाया॥
कामा है आदी वृन्दावन। पग-पग तीरथ मन्दिर सर वन॥

सुनहरा राधा नगरी पास। कलाबटा पापड़ी अरु सतबास॥
अकाता वनचारिका पथराली। बझेरा नन्दोला भोजनथाली॥
प्रयाग पुष्कर अलता पहाड़ी। ललिता-विशाखा चरण पहाड़ी॥
श्रृंगार बिच्छौर वनचारी। वंशीवादक कृष्ण मुरारी॥

सौंध होडल अरु भुलबाना। खाम्बी हसनपुर अरु बंसाना॥
नौहझील बाजना दौलतपुर। छिन पहाड़ी बधारी बैकुण्डपुर॥
माँट नसीटी छाँहरी बेलवन। जाबरा देखि आयहु वृन्दावन॥
परम प्रेम आनन्द भराई। सब थल देखेहु जहँ-तहँ जाई॥

ब्रजभूमी की रज-रज छानी। परमकृपा गोविन्द की मानी॥
सबसे माँगी एक ही बात। रामकृष्ण रति देवहु तात॥
रामकृष्ण मोहि मीत बनावें। होइ प्रसन्न उर गल लपटावें॥
सखा भाव की प्रीति सदाई। बिविध भाव उर उपजें आई॥

करुण विलाप करहिं दुःख पाई। पुलकित तन अश्रु झर लाई॥
रामकृष्ण कब दरशन पावहुँ। दरशन करि हिय तपन बुझावहुँ॥
हा हा कृष्ण प्राणधन जीवन। हा बलराम तुमहि सर्बस धन॥
प्रभु वियोग दुःख पावत ऐसे। तप्त बालुका खग शिशु जैसे॥

दो०— प्रेमानन्द मगन मन कबहुँक लीला गान।
युगल प्रेम में निश दिन भूलहिं तन मन भान॥

ब्रज रज कन पारस चिन्तामनि। माधुर्य सिन्धु जहँ उमड़त पुनि-पुनि॥
श्रीवनमाली के चरित सुहाये। कोटि कल्प लगि जाहिं न गाये॥
वनमाली के चरित सुहावन। संत भक्त रसिकन मन भावन॥
दिव्य चरित मैं निज मति गावा। महा मन्द मति का लिखि पावा॥

प्रभु प्रेरित सोई मैं गाया। लिखेहु वही गोविन्द लिखाया॥
क्षमा करहिं मोहि सज्जन ग्यानी। परम रंक मति मूरख मानी॥
पद पंकज की रज कन जानी। कृपा करहु संत मुनि ज्ञानी॥
सबही भाँति करहुँ पद वंदन। पाहि-पाहि सज्जन उर चन्दन॥

क्षम अपराध कृपा तव पावहुँ। सकल दोष-अपराध भुलावहुँ॥
निज किंकर मोहि पद रज जानी। कृपा करहु कलि जीवहिं मानी॥
वनमाली के चरित सुहावन। रसिकन के मन सुख उपजावन॥
तुम पद रज मैं शक्ति पाये। श्रीवनमाली के चरित मैं गाये॥

सब मिलि कृपा करहु अब आई। आगिल चरित लिखहुँ मैं गाई॥
मैं मूरख खल का लिखि पावहुँ। संत कृपा वश ही मैं गावहुँ॥
मोर सुधारहिं तुम सब भाँती। करुणा कृपा करहु दिन-राती॥
वैष्णव पद रज सिर धरि भाई। पावन चरित कहहुँ मैं गाई॥
वनमाली सबके हितकारी। जड़-चेतन सबके सुखकारी॥

श्रीमद् भागवत - कथा

वनमाली जब कथा सुनाबहिं। प्रेम अमिय रस धार बहाबहिं॥
पावन कीन्ह धरा सब भाई। पाप ताप हारक सुखदाई॥
भागवत कहहिं परम सुखदाई। नगर-गाँव रस नदी बहाई॥
भाँति अनेक श्लोक सुनाबहिं। मधुर कंठ नव मधु बरषाबहिं॥

महाकवी पंडित गंभीरा। भक्ति ज्ञान वैराग्य शरीरा॥
जगत पूज्य भागवत विद्वाना। शास्त्र विचारक जग तेहि जाना॥
बिविध भाँति कह कथा प्रसंगा। श्रवण सुखद बहती रस गंगा॥
दूर-दूर के जन बहु आबहिं। कथा श्रवण करि अति सुख पाबहिं॥

श्री भागौत बखानि प्रेम-पियूष पियाबहिं।
भक्ति-ज्ञान-वैराग्य मधुर-मधु-सुधा बहाबहिं॥
बिविध भक्ति दृष्टान्त अमृतमय नदी बहाई।
भये रसिक उन्मत्त मधुप मनु पंकज पाई॥

पियहिं प्रेम मकरन्द मनहुँ तन मन सुधि नाईं।
प्रेम छके से रहहिं मनहुँ निधि रस की पाई॥
करहिं श्रवण रस पान भक्ति पद के अधिकारी।
प्रेम बाढ़ में बहे जात सब नर अरु नारी॥

कथा सुनन असंख्य जन आबहिं। भाव विभोर होंइ हरषाबहिं॥
जग सुगन्ध फैली सुखदाई। एहि सम कथा सुनी हम नाईं॥

श्रीवनमाली - ग्रन्थावली

श्रीकृष्णानन्द-महाकाव्य बनाया। विमल चरित सदगुरु का गाया॥
हरि प्रेष्ठ महाकाव्य रचाया। गुरु भाई का चरित जु गाया॥
रचि महाकाव्य महाकवि कहाये। कालीदास पुरस्कार हु पाये।
सख्य सुधाकर भाव रस सागर। प्रकटेहु सखा भाव निधि नागर॥

सखा भाव की अद्भुत रचना। वेदादिक बहु भाँति कल्पना॥
संख्य भाव वनमाली गाया। गागर में सागर लहराया॥

'संख्य सुधाकर' के दर्शन कर शीतल हृदय हुआ मेरा।
'भक्तनाम-मालिका' पहनकर मिटा भेद मेरा-तेरा॥
'श्रीवनमालिदास' वन पहले पुनः सखा का पद पाया।
भव से तप्त प्राणियों के हित 'संख्य-सुधाकर' प्रकटाया॥

'भक्तनाम-मालिका' भक्तन कण्ठाहार।
भक्तन की माला गुथी रामकृष्ण गलहार॥

राधारमण-शतक रचाया। दिव्य चरित ठाकुर का गाया॥
कवि कोविद विज्ञ समुदाई। घटिका शतक उपाधि पाई॥
वनमालि प्रार्थना शतक जु गाये। बिविध विनय ठाकुरहिं सुनाये॥
गोपालचम्पू जीव गोसाईं। टीका दिव्य रची सुखदाई॥

आनन्द वृन्दावनचम्पू टीका गाये। महाकवि कर्णपूर हरषाये॥
भक्ति रसामृत सिन्धु विन्दु टीका। माधुर्य कादम्बिनी की मधु टीका॥
भागवतामृत कणिका टीका। मध्व सिद्धान्त कणिका टीका॥
भक्ति ग्रन्थ माला हू गाई। वृन्दावन त्रय शतक सुहाई॥

बाल्मीकीय सूक्ति संग्रह। महाभारत सूक्ति संग्रह॥
हरिवंश पुराणीय सूक्ति संग्रह। जैमिनीयाश्वमेधपर्वीय सूक्ति संग्रह॥
श्रीगुरुदेव स्मरणाष्टकम्। श्रीराधा-वृन्दावनाष्टकम्॥
श्रीगोवर्द्धन-यमुनाष्टकम्। श्रीराधाकृष्ण अष्टकम्॥

अनंतदास-सत्यनारायणाष्टकम्। सागरधर्मपत्न्य-अमोलकरामाष्टकम्॥
राधिका प्रातः स्मरण स्तोत्रम्। रामकृष्ण प्रातः स्मरण स्तोत्रम्॥
धन्वन्तरि अनेकविध स्तोत्रम्। राधाकृष्ण रामकृष्ण स्तोत्रम्॥
स्तव कल्पद्रुम संशोधनम्। रामभद्र दशकम् विश्वनाथ पंचकम्॥

सूक्ष्मं श्रीचैतन्य लीलामृतम्। शुभ सन्देश त्रयं अभिनन्दन पत्रम्॥
पद्यावलि की टीका कीन्ही। स्तवरत्ननिधि संग लीन्ही॥
गौर प्रेमोल्लास की टीका गाये। विधि स्तोत्र अनेक बनाये॥
सम्मति प्रशस्ति बहु ग्रन्थन दीनी। स्फुट कविता बहु विधि कीनी॥

औरहु काव्य अनेक रचाये। अष्टक नाना भाँति बनाये॥
प्रेम नदी वनमालि बहाई। हरषे रसिक संत समुदाई॥
बहु प्रकार बहु ग्रन्थ रचाये। बहु ग्रन्थन की टीका गाये॥
महाकवी घटिका शतकेन। काव्यकला रसिकन सुखदेन॥

आशुकवी अरु कालीदास। कवि चूड़ामणि सरस्वति बास॥
वृन्दा अटबी यह सब पाया। वनमालिदास निज मुख से गाया॥

श्रीवनमालिदास जी का महान व्यक्तित्व

जगहित कहुँ बहु ग्रन्थ रचाये। महाकवि कालीदास कहाये॥
घटिका शतक उपाधि पाई। दीना मान लोक समुदाई॥
पण्डित मूरख ज्ञानी ध्यानी। धरम निरत तपसी विज्ञानी॥
संत मुनीश्वर अरु ब्रह्मचारी। गृहस्थ विरक्त परम आचारी॥

सबके मन वनमाली जीते। भये वनमाली प्राण पिरीते॥
परम तेजस्वी सदगुन खान। संत विरक्त लोक बहु मान॥
बोलत चकित होंइ सब ज्ञानी। पण्डित योगी अरु विज्ञानी॥
गिरा गंभीर रसिक सुख पावहिं। प्रेम पियूष रसधार बहाबहिं॥

गूढ़ प्रश्न सहजहि समझाबहिं । अज्ञ विज्ञ बहु मोद मनाबहिं॥
पाखण्ड निरत मत खंडेहू भाई। शुद्ध सनातन धरम बताई॥
आत्म-विश्वास मनोबल भारी। साहस धीरज विस्मयकारी॥
दृढ़ इच्छा शक्ति अपनाये। विषम परिस्थिति नहिं घबराये॥

दुःख-सुख मान प्रशंसा गारी। उदासीन सम सह दुःख भारी॥
विज्ञ महोत्सव सबहि बुलाबहिं। करहिं मान बहु सेवा लाबहिं॥
सरल सुबोध गाँव की भाषा। करहिं विनोद हास-परिहासा॥
जद्यपि प्रकाण्ड उद्भट विद्वाना। वेद तत्त्व विज्ञान निधाना॥

सरस्वति जिह्वा कंठ में शोभित। विद्या-बुद्धि सब जन मोहित॥
तदपि सादा जीवन उच्च विचार। परम अकिंचन नम्र उदार॥
गोविन्द भजन सार कौ सार। जीवन में यह लीनौं धार॥
मंगलमय प्रभु नामहि गाये। सुख शान्ति सन्तोष भराये॥

कहौ कौन समता करै श्रीवनमाली दास की॥
परम शांत गंभीर धीर गुन राशि बिलक्षन।
महाकवि विख्यात रसिक सब कहत सुलक्षन॥
दीनन सों अति नेह मेघ ज्यों पर उपकारी।
करत भक्ति रसदान सदा संतन हितकारी॥
कृष्णानन्द सदगुरु कृपा अदभुत कीरति जासुकी।
कहौ कौन समता करै श्रीवनमाली दास की॥

नख-शिख मधुर मनोहर गाता। वदन देखि तन मन पुलकाता।
जग जन लोचन सुधा अनूप। मधुर-मधुर मृदु नव नव रूप॥

श्रीवनमालिदासजी का विलक्षण शिष्य परिकर

गुरु कृष्ण रूप हय शास्त्रेर प्रमाणे।
गुरु रूपे कृष्ण कृपा करे भक्तगणे॥(चै.च.)

ख्याती भई सकल जग माहीं। वनमाली सम गुरु कोउ नाहीं॥
भये अनेक शिष्य समुदाई। चरण-शरण गुरु की सब पाई॥
नगर गाँव ढाँड़ी से आई। सबने मंत्र दीक्षा पाई॥
सबको सदगुरु गले लगाया। सब पर कृपा कीन सम दाया॥

शिष्य एक ते एक सुजाना। परम सुशील परम विद्वाना॥
कोउ गुरु पद पंकज अनुरागी। सेवा करहिं दंभ मद त्यागी॥
कोउ जग विरत भक्ति आगारा। कोउ दानी कोउ नम्र उदारा॥
कोहू संकीर्तन का अनुरागी। करहि नृत्य लज्जा सब त्यागी॥

कोउ साधक कोउ परम उदासी। कोउ विरक्त कोहू सन्यासी॥
कोउ धरम रत कोउ विज्ञानी। सहनशील कोउ ज्ञानी ध्यानी॥
कोउ करहिं जीवन पर दाया। पर उपकार वचन मन काया॥
कोउ सत्य अहिंसा व्रत अपनाया। कोउ जग विरत मोह मद माया॥

परम विवेकी कोई विरागी। प्रभु पद रति कर सो बड़भागी॥
महामंत्र जप का कोई प्रेमी। कोउ सदाचार संयम व्रत नेमी॥
कोउ तपसी कवि कोविद ज्ञाता। कोउ गोविन्द पद पंकज ध्याता॥
कोई मानसी सेवा करई। सेवा कर प्रभु का मन हरई॥

कोउ भजन रत कोउ विद्वाना। कोउ हरि भक्त कोउ गुणवाना॥
कोउ-कोउ लीला चिंतन करई। मन हरषित उर आनन्द भरई॥
कोऊ भागवत तत्त्व बखानी। कोउ संयमी कोउ गुन खानी॥
कोउ मंत्र जाप कर दृढ़ विश्वासा। बहुतन कथा भागवत आसा॥

श्रवण भक्ति कर कोउ मन लाये। अर्चन वंदन कोउ मन भाये॥
कोउ सखा भाव में ही लवलीना। कोऊ आत्म निवेदन कीना॥
कोउ रामकृष्ण पद पंकज ध्याये। नाम जपन कोई मन लाये॥
कोहू तीरथ बास कराये। परिक्रमा करि कोउ हरषाये॥

कोई प्रेम-भक्ति की खानी। रामकृष्ण मय जग कोउ जानी॥
ईश्वर ब्रह्म और भगवाना। परम आतमा कोऊ जाना॥
कोउ मान प्रद आप अमानी। कोऊ तृण सम निज को जानी॥
कोउ दीनन हित अति दीनदयाला। कोउ शान्ति शील संतोष कृपाला॥

करुणा मैत्री कोउ उर धारे। सब जीवन पर करहि दया रे॥
बहुतन संतन संग सुहाई। बहुतन कथा लगहि सुखदाई॥
कोउ सिख हरि के गुन गन गाई। सब प्रकार विश्वास कराई॥
काहू के हरि भजन ही प्यारा। नाम प्रभु के कोई अधारा॥

परम सरल कोई छलहीना। प्रभु पद पंकज कोउ मन दीना॥
शिष्य एकते एक उजागर। प्रेम-भक्ति विद्या गुन सागर॥
कोउ वीर कोउ शिव सम दानी। सत्यशील कोउ परम अमानी॥
कोउ दयाल कोउ परम कृपाला। कोउ कठोर अनुशासन वाला॥

मितभाषी मौनी कोउ त्यागी। कोउ उपदेश करहि वैरागी॥
कोउ नैतिक चरित्र प्रतिपाला। कोउ खग-मृग हित दीन दयाला॥
पर सेवा हित कोई बड़भागी। कोई संत चरन अनुरागी॥
परहित हेतु बचन मन काया। कोई करहि जीवन पर दाया॥

कोई काम क्रोध गत माया। करहि भजन दिन-रैन सदाया॥
परमारथ पथ कोउ सुजाना। कोउ उदार करहि बहु माना॥
सबसे प्रेम करहि कोउ भाई। उदासीन कोउ रहहि सदाई॥
कोहू भजन करहि छल त्यागी। निष्काम भक्त कोई अनुरागी॥

कोउ वन उपवन विटप लगाये। लखि हरियाली अति हरषाये॥
कोउ भूखे की भूख मिटाये। नंगे को कपड़ा पहनाये॥
कोई वृद्ध की सेवा लाये। प्यासे को जलपान कराये॥
कोई मरीज को दवा खिलाये। कोई असहाय हित मन में लाये॥

कोउ चंचल कोउ हँसमुख भारी। कोउ सज्जन कोउ बड़ आचारी॥
परमारथ पथ हित अनुसरईं। निज-निज गुण स्वभाव भल करईं॥
अगनित गुन अगनित प्रिय गाथा। जग हित जन सदगति के ज्ञाता॥
शिष्य एक ते एक सुजाना। सब कर करहि मान सम्माना॥

निज-निज गुण स्वभाव मन लाई। पर हित पंथ चलहिं गुरु भाई॥
शिष्य एक ते एक गुनाकर। शील नेह विद्या गुन आगर॥
करहिं परस्पर कीर्तन गान। भूलहिं जगत देह का भान॥
भयहु हृदय प्रेम विस्तारा। बाणी गद्‌गद्‌ अश्रू धारा॥

तन रोमांचित नाम उचारहिं। करहिं उच्च स्वर गोविन्द गानहिं॥
परम अकिंचन दीन हीन सब। पीबहिं नाम रूप लीला गुन आसव॥
परम अकिंचन नम्र उदार। पर हित मान मनहुँ व्यापार॥
दीन अकिंचन निजकूँ मानहिं। जदपि शिष्य सब सदगुन खानहिं॥
सकल परस्पर प्रेम दृढ़ाई। आदर भाव करहिं मन लाई॥

एहि मिस गोविन्द प्रीति दृढ़ाई। प्रेम मणि मनु सबने पाई॥
रंक अमीर मूरख अरु ज्ञानी। लीन शरण सदगुरु की आनी॥
सदगुरु कृपा मानि मन लीनी। जगत ख्याति सदगुरु की कीनी॥
वनमाली की किरपा धारे। शोक विहीन भये सिख सारे॥

शिष्य सकल अमानी कीने। षद्‌ विकार तिनते मनु छीने॥
सबके गुन-गन सकहुँ न गाई। मैं मति मन्द रंक मति पाई॥
कहौं कहाँ लगि शिष्य बड़ाई। शेष न सकहिं सकल गुन गाई॥
शिष्य नाम गुन जाहिं न गाई। कछु जानहुँ बहु जानत नाईं॥

नाम कछुन के कहहुँ बखानी। अपराध होइ मन लाग गलानी॥
तेहि ते मैं नहिं नाम बखानी। क्षम अपराध शिष्य अस जानी॥
सबके प्रति समदृष्टि लाई। एहि कारन मैं नाम न गाई॥
कृपा करहु सब शिष्य सुजाना। मो कहुँ देहु कृपा कर दाना॥
गुरु की कृपा सबन पर दाया। सम दृष्टी निष्कपट अमाया॥
मन अभिलाष यही अति भारी। एहि गुरु मिलहिं जहाँ तनु धारी॥
जनम अनेक मिलहि गुरु दाया। पावहिं गुरु पद पंकज छाया॥
मनहुँ युधिष्ठिर बनि गुरु आये। सब कर हित करते मन लाये॥
परम कृपा मूरति वनमाली। जग मंगल हित करुणा शाली॥
वनमाली गुरु दीन दयाला। निज शिष्यन हित गुरु प्रतिपाला॥
कृपा करहु वनमाली भारी। तुम हो मंगल मूल अघारी॥
वनमाली भय भंजनहारी। नाम लेत होयहि सुख भारी॥
भये मगन सिख अस गुरु पाये। आइ शरण त्रय ताप नशाये॥
भाँति अनेक पाइ उपदेशा। मेंटे जीवन केर कलेशा॥
वन्दि चरन सब शिष्य समाजा। पुजवहि मोर सकल हित काजा॥
सब परिकर कहुँ शीश झुकाई। कृपा करहु सब सिख समुदाई॥
आगिल चरित कहहुँ मैं गाई। गुरु-शिष्यन की कृपा मनाई॥
वनमाली प्रभु के अति प्यारे। नाम जपत मिट संकट भारे॥

श्रीगुरु पूर्णिमा - महोत्सव

शिष्य सकल समुदाय व्यास पूजा पै आये।
गुरु पूजा करि शिष्य हरष मन मोद भराये॥
पूछत शिष्य सुजान गुरु हमको उपदेशौ।
भव सों होवें पार हमें तव कृपा भरोसौ॥

सरल-भाव के प्रश्न सुनि सदगुरु हरषाये।
परम रहस्य की बात सुनहु मम मन मति लाये॥
सब ईशन के परम-ईश गोविन्दहि जानौ।
सत-चित-आनन्द रूप परम रसमय तनु मानौ॥

हरि समान नहिं कोई सच्चा हितु हमारा।
सब स्वारथ के मीत सकल छल कपट पसारा॥
अस बिचारि मन माहिं सदा गोविन्द पद ध्याई।
श्रीकृष्ण–बलदेव मीत हम सबके भाई॥
अनन्त ब्रह्माण्ड स्वामी सब कुछ करे।
परम गोविन्द आज्ञा सब सिर धरे॥

प्राणपति आत्मपति गोविन्द सर्वस्व प्राणधन।
सर्व काम त्यागि करये गोविन्द सेवन॥
गोविन्द चरणारविन्द परम प्रेम रूप।
ध्यान करे जोई जन होइ प्रेम भक्ति कूप॥

गोविन्द चरन प्रेमामृत झरना। सकल शोक दुःख दारिद हरना॥
प्रेम सुधा बहता दिन राती। परम तृप्ति होयहि सब भाँती॥

प्रेम करौ प्रभु मूरति सों, मंगलमय प्रभु पद नित ध्यावहि।
सेवहु प्रभु पद रस मंगलमय, मंगलमय प्रभु नामहि गावहि॥
प्रभु मंगलमय प्रभु विधान मंगलमय।
प्रभु करुणामय हित जीवों का परम कृपामय॥

अति कोमल गोविन्द कृपाला। निज सेवक पन सब विधि पाला॥
हित करहहिं हरि नाहिं जनाबहिं। जन अवगुन प्रभु चित्त न लाबहिं॥
राधाकृष्ण प्राण के प्राण। जीवन जीवन भव भय त्राण॥
रामकृष्ण दोउ सखा हमारे। परम प्रेम मय प्राणन प्यारे॥

पालहिं पोषहिं सब विधि भाई। मात–पिता–बन्धु की नाईं॥
अस बिचारि नित रामहि गाओ। सब प्रकार गोविन्दहि ध्याओ॥
गोविन्द कहौ दुःख चिन्ता नाईं। मंगलमय हरि सदा सहाई॥
और उपाय न कलि में भाई। नाम जपत गोविन्दहि पाई॥

दो०— कुशलक्षेम या जीव कहँ तब लगि नहिं विश्राम।
जब लगि भजत न कृष्ण कहुँ शोक धाम तजि काम॥

शास्त्र मरम अरु मंत्रन सार। श्रीहरि नाम कृष्ण अवतार॥
चार वेद षट् शास्त्रन सारा। श्रीहरि नाम प्रेम अवतारा॥
कृष्ण मंत्र गोविन्दहि पावै। कृष्ण नाम संसार नसावै॥
चाण्डाल हू यदि कृष्ण हि गाई। होइ परम पावन जग माईं॥

उच्च संकीर्तन पर उपकारी। जड़ चेतन सब होंइ सुखारी॥
शत गुन पुण्य शास्त्र सब कहईं। जड़ चेतन सब सदगति लहईं॥
नाम प्रभु की शरण जो आये। परम प्रेम सदगति सब पाये॥
साधु संग होयहु अनुरागी। होहु तरन तारन बड़भागी॥

परम अकिंचन सरल स्वभाव। गोविन्द कृपा तब सहजहि पाव॥
कलियुग केवल नामहि गाई। नाम जपत भव सिन्धु तराई॥

परम अनुराग भाव सदा कृष्ण कीर्तन करे।
नाम रूप लीला गुण नित्य गायन करे॥
रसिक कृष्ण प्रेमीजन श्रद्धा सेवा अनुराग।
कृष्ण नाम निष्ठा रुचि लोक वैराग॥

तृण से भी छोटा बने करे ना अभिमान।
सम्मान सब जीव मात्र जान कृष्ण अधिष्ठान॥
नाम निष्ठा इष्ट ध्यान सेवा मानसी करे।
तन-मन वृन्दावन बास सदा चिन्ते हरे॥

निज अपमान सुधा सम जानी। विष समान सनमानहिं मानी॥
रामकृष्ण हा नाथ पुकारी। प्रेम मगन मन हरषित भारी॥
एहि प्रकार निज समय बिताई। सकल मरम मैं दीन बताई॥
बिविध पक्ष लीला गुन खानी। ग्यान भक्ति वैराग्य बखानी॥

भाँति अनेक शिष्य समझाये। तन मन के त्रय ताप नशाये॥
देश-विदेश के शिष्य सुजाना। पियहिं प्रेम रस अति सुख माना॥
नव जीवन नव शक्ती पाई। प्रमुदित भये सबही गुरु भाई॥
वनमाली भय भंजन हारी। मेंटि कुसंकट करहिं सुखारी॥

पुनः महोत्सव जब जब आवत। वनमाली शिष्यन समझावत॥
पुनः महोत्सव जब-जब आये। शिष्य प्रबोधे अस समझाये॥
पर निन्दा-पर दोष न गाये। उदासीन रहि हरिः रिझाये॥
निज यश कालकूट विष जानहिं। निज निन्दा को अमृत मानहिं॥

ग्राम्यकथा ना कभु चित लाये। व्यर्थ समय ना कबहु बिताये॥
परमारथ पथ कबहु न तजई। सब जीवों का हित नित सजई॥
प्रभु मंगलमय करुणा भारी। अति कोमल हरि सब दुःखहारी॥
मंगलमय प्रभु परम कृपाला। सब विधि पोषहिं दीन दयाला॥

मंगल विधान हरि का नित मानी। परम प्रसन्न रहहु अस जानी॥
प्रभु मेरे मैं प्रभु का दासा। सुखी रहहु अस करि विश्वासा॥
जो कछु होयहि अच्छा होयहि। इससे अच्छा कछु न होयहि॥
मंगल विधान प्रभु का सब भाँती। मुसिकाओ तुम दिन अरु राती॥

मंगलमय हरि को नित ध्याओ। हँसी खुशी सब समय बिताओ॥
प्रभु मंगलमय नामहि गाई। भव तरिहहु कछु संशय नाईं॥
मंगलमय महामंत्रहि गाई। भाल कुअंक सकल मिटि जाईं॥
मुसकाते दिन-रैन बिताओ। प्रभु की मंगल कृपा मनाओ॥

छिन-छिन पल-पल नामहि गाओ। रामकृष्ण पद पंकज ध्याओ॥
करहु सुखद मानस सेवकाई। राधा-गोविन्द प्रीति जगाई॥
महा विपद महा संकट भारी। जेहि क्षण प्रभु का नाम बिसारी॥
मंगलमय क्षण सुखद सुहाई। जेहि क्षण प्रभु का नाम हि गाई॥

मात-पिता-बन्धु सब कृष्णहि। कर्त्ता हर्त्ता पालक सब कृष्णहि॥
रामकृष्ण पद पंकज ध्याई। नित सेवहु हरि लाड़-लड़ाई॥
मानसी सेवा लीला चिन्तन। रैन-दिवस कर गोविन्द वन्दन॥
वेद शास्त्र इतिहास-पुराना। सब कर मत मैं सूत्र बखाना॥

मंगलमय जब उत्सव आवहिं। गुरु उपदेश करहिं समझावहिं॥
शिष्य सकल आनन्द मनाई। गुरु कृपा मानहिं अधिकाई॥
सकल शिष्य गुरु वंदन कीना। आशीर्वाद सबहि गुरु दीना॥
एहि प्रकार सब शिष्य सुजाना। गूढ़ तत्त्व सदगुरु से जाना॥

श्रीवनमालिदासजी के सदगुण–स्वभाव–महिमा

ख्याति भई सकल जग माहीं। वनमाली की उपमा नाहीं॥
धरम निरत पंडित विज्ञानी। परम रसिक अरु बलि समदानी॥
महाकवी पंडित गंभीरा। दीन दुःखी प्रति करुणा पीरा॥
आशुकवि घटिका शतकेन। विज्ञ शिरोमणि हरि रस देन॥

परम विद्वता सरल स्वभाव। कृष्ण प्रेम जन समता भाव॥
अजातशत्रु निर्बैर अमानी। सहनशील ग्यानी मृदुबानी॥
अहं रहित विनयी गत कामा। सरल स्वभाव संत सुखधामा॥
शील–सनेह युक्त व्यवहार। परम संयमी नम्र उदार॥

सबके प्रिय सबके हितकारी। कृष्ण निष्ठ तपसी सदाचारी॥
अति भोलापन सबहि लुभाये। सहज सरलता सबको भाये॥
अति कोमल मृदु करुण कृपाला। पर दुःख देखि द्रवित ततकाला॥
हानि–लाभ यश–अपयश निन्दा। जीवन–मृत्यु नहीं भय चिन्ता॥

धीरज–निश्चय अति उत्साही। सहज शान्त गंभीर सदाई॥
सतोवृत्ति अरु प्रभु अनुरक्ति। पंच विषय से परम विरक्ति॥
विद्या–विनय विवेक–भलाई। सत्यशील संतोष सदाई॥
सकल सुहृद अरु परम उदारा। करुणा मैत्री पर उपकारा॥

बालकपन सों परम विरक्ति। भोग पदारथ नहिं आसक्ति॥
सौम्य सरल सब भाँति भलाई। छल अरु कपट न तिनहिं सुहाई॥
परम विवेकी चतुर सुजान। संत–महंत करते बहुमान॥
मननशील अरु कवि आचारी। भक्त रसिक कोविद ब्रह्मचारी॥

परम विरक्त सेवा सुख राशी। मितभाषी सर्वत्र उदासी॥
सत्य–शान्ति संतोष कृपाला। त्याग दया सम दीन दयाला॥
परम तेजस्वी सदगुन खान। विद्या–बुद्धी प्रेम महान॥
सकल वेद इतिहास पुराना। गूढ़ तत्त्व वनमाली जाना॥

हास्य विनोद गाँव की भाषा। सरल स्वभाव नहीं छल पासा॥
आवहिं संत महंत विद्वाना। पूरण करहिं मनोरथ नाना॥
कवि-कोविद सन्यासी आवहिं। करि सतसंग महासुख पावहिं॥
गूढ़ प्रश्न सहजहि समझावहिं। सकल भ्रान्ति सन्देह मिटावहिं॥

लौटहि करहिं प्रशंसा भारी। नहिं देखा अस जगत मझारी॥
सदगुन उदधि कहे नहिं जाईं। शेष-शारदा मन सकुचाहीं॥
केहि बिधि सब गुन कहौं बखानी। महा मंद मति महा अग्यानी॥
कृष्ण-सखा लीना अवतारा। जग मंगल अवनी निस्तारा॥

सदगुरु चरित मैं निज मति गाये। बरनत चरित शेष शरमाये॥
सो केहि भाँति कहौं मैं गाई। अति मति रंक विवेक पलाई॥
पावन करन हेतु निज बानी। विमल चरित गायहु अस जानी॥
गुरु-कृपा हरि-वैष्णव गन सब। अमिय चरित्त लिखेहु यह जन तब॥

दीन-दुखियों की सेवा एवं सद्भाव

संत दया का रूप कहावत। दुःखी जनन प्रति करुणा लावत॥
सब जीवन को सुख पहुँचावहिं। भोग-मुक्ति तिनको नहिं भावहिं॥
देखि जीव दुःख द्रवहिं सो भाई। सब जीवन हित करहिं भलाई॥
करहिं दूरि दुःख कृपा कराये। वनमाली अस संत कहाये॥

वनमाली मन करुणा भारी। दीन-दुःखी बहु किये सुखारी॥
दीन-दुःखी सब गले लगाये। करहिं मान मन अति सुख पाये॥
परमारथ पथ परम सुजाना। दीन-दुःखी कहुँ देयहिं दाना॥
दीन-दुःखी निर्बल सब आवहिं। तिन कर दुःख संताप मिटावहिं॥

भोजन-वस्त्र तिनहिं सब देईं। पाइ अशीष परम सुख लेईं॥
रोगीन को वे दवा दिलावहिं। प्यासे को जल-पान करावहिं॥
सब विधि उनको पालहि-पोषहिं। दूरि करहिं दुःख मन परितोषहिं॥
निज हाथन सों सेवा करहीं। सेवा करि हरि का मन हरहीं॥

दुःख के आँसू देखि सकहिं ना। अपने को वे रोक सकहिं ना॥
जब प्राणी दुःख से आह भराये। वनमाली तहँ दौड़े आये॥
जप-तप-तीरथ हरिहि न पाये। योग-समाधि प्रभुहि न भाये॥
वन-उपवन प्रभु खोजि न जाई। दुःखियन दुःख नारायण पाई॥

दुःखी आह गोविन्द छिपाये। खोजहु सब गोविन्दहि पाये॥
दीन-दुःखी का दुक्ख मिटाई। सहज-सरल नारायण पाई॥
हर उत्सव पर तिनहिं बुलाबत। नारायण सम सेवा मानत॥
दीन-दुःखी बहु भीड़ लगाबहिं। जय वनमाली मोद मनाबहिं॥

जय-जय ध्वनि कर लौटत जाईं। वनमाली सम प्रिय कोई नाईं॥
धन्य-धन्य वनमाली राई। दीन-दयालू इन सम नाईं॥
दीनन हित करुणा उर धारे। दर्शन भये सौभाग्य हमारे॥
जय जय कृष्ण सखा वनमाली। दीनन हित अति करुणाशाली॥

छात्र-विद्यादान

श्रीमध्व-गौरांग नाम विद्यालय। छात्र पढ़हिं मानहुँ निज आलय॥
श्रीकृष्णानन्द स्वर्गाश्रम नामा। सकल छात्र पाबहिं विश्रामा॥
देश-विदेश के छात्र जु आये। वनमाली पद शीश झुकाये॥
निःशुल्क निरपेक्ष संस्कृत सेवा। भोजन वस्त्र बास सब देवा॥

संस्कृत वांगमय पठन पाठने। महाव्यसनी वनमालि आपने॥
विद्या पढ़हिं छात्र समुदाई। परम हर्ष मन मोद भराई॥
मधुर हास-परिहास कराबहिं। हास्य-विनोद सूत्र समझाबहिं॥
रात-दिवस ते करहिं पढ़ाई। गुरु सेवा में तन-मन लाई॥

व्याकरण साहित्य बहु ग्रंथ पढ़ाबहिं। भागवत निगूढ़ रहस्य समझाबहिं॥
प्राचीन निगूढ़ ग्रंथ समझाये। परम विज्ञ मन अति सुख पाये॥
भोजन-बस्त्र-बास सब दीने। विद्या का कछु शुल्क न लीने॥
प्रातः सायं ठाकुर सेवा। मन प्रसन्न ते सब सुख लेवा॥

हँसमुख रहहिं छात्र समुदाई। करहिं काज गुरु आयसु पाई॥
अनुशासन तन-मनहिं समाया। सहज भाव संतोष भराया॥
बहु-बिधि गुरु तिन्ह लाड़ लड़ाबहिं। परम मोद आनन्द मनाबहिं॥
ठाकुर प्रसाद पाबहिं मिलि भाई। करहिं हास-परिहास सुहाई॥

सदगुरु कर आनन्द प्रकाशा। सुख बरषहिं चहुँ दिशि चहुँ पासा॥
सब हरषित सब मोद भराई। क्रीड़ा-कौतुक नव-नव भाई॥
सदाचार की शिक्षा पाये। शिष्ट नम्र सब शिष्य बनाये॥
शिक्षा पूरण करि गृह जाबहिं। रोबहिं-बिलपहिं अश्रु बहाबहिं॥

गुरु-आश्रम हम जो सुख पाये। सो न मिलहि अब निज घर जाये॥
गुरु का प्यार न भूला जाई। कब देखहिं फिर गुरु पद आई॥
अहो विधाता अस गुरु पाये। केहि कारन अब क्यों बिछुड़ाये॥
सिर धुनि-धुनि रोबत गृह जाबहिं। जन्म-जन्म हम एहि गुरु पाबहिं॥

निज सदगुरु की करि-करि यादा। उपजहिं मन-हिय परम विषादा॥
जहँ-तहँ देश-विदेश में जाबहिं। गुरु कर यश-सौरभ तहँ गावहिं॥
रोशन नाम करहिं ते जाई। सकल लोक सब ख्याति पाई॥
करहिं लोग वनमालि बड़ाई। दरशन हम अब केहि बिधि पाई॥

दरशन को वृन्दावन आबहिं। बड़े भाग जो दरशन पाबहिं॥
छात्र सकल दिशन ते आये। दरशन करि सौभाग्य जगाये॥
विद्या पढ़हिं छात्र समुदाई। अहो भाग्य हम सद्गुरु पाई॥
छात्र-शिष्य-जन आबहिं जाबहिं। अति दुर्लभ दरशन सब पाबहिं॥

दरशन करि सौभाग्य मनाये। रामकृष्ण पद प्रीति पाये॥
परम कृपा मूरति वनमाली। जग मंगल हित करुणाशाली॥
जय जय-जय जंजीरी नन्दन। कृपा धाम भक्तन उर चन्दन॥
जीह जशोमति हरि बलराम। जंजीरी के प्यारे श्याम॥

श्रीराधा-गोविन्ददेवजी के दर्शन

जयपुर दर्शन हेतु पधारे। पायहु दर्शन गोविन्द प्यारे॥
रत्न-सिंहासन गोविन्द विराजे। बाम भाग श्रीराधा साजे॥
ललिता-विशाखा दाँये-बाँये। युगल रूप छवि नयनन भाये॥
मृदु-मुसकान बंक अवलोकनि। अधर धरी बंशी मन मोहनि॥

साक्षात मदन गल गुँजमाला। मुख अम्बुज उर नयन विशाला॥
बस्त्राभूषण दिव्य मनोहर। प्रेममय सेवा होयहि गोचर॥
बार-बार पद वंदन कीना। श्री विग्रह उतारि उर लीना॥
नयन बसी प्रभु मोहनी मूरति। पलकन गिरहि दिव्य प्रभु सूरति॥

स्तुति करत मोद मन भारी। स्त्रवहिं नयन जल करुण पुकारी॥
तन रोमांचित वाणी गद्-गद्। अष्ट विकार भये सब तन मन॥

ॐ नमो ब्रह्मण्य देवाय गो ब्राह्मण हिताय च।
जगद्धिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः॥

कृष्णाय वासुदेवाय देवकी नन्दनाय च।
नन्द गोप कुमाराय गोविन्दाय नमो नमः॥

कृष्णाय वासुदेवाय हरये परमात्मने।
प्रणत क्लेश नाशाय गोविन्दाय नमो नमः॥

ॐ नमो विश्वरूपाय विश्वस्थित्यन्त हेतवे।
विश्वेश्वराय विश्वाय गोविन्दाय नमो नमः॥

नमो विज्ञानरूपाय परमानन्द रूपिणे।
कृष्णाय गोपीनाथाय गोविन्दाय नमो नमः॥

दीव्यद् वृन्दारण्य कल्पद्रुमाधः
श्रीमद् रत्नागार सिंहासनस्थौ।
श्रीमद्राधा - श्रीलगोविन्द देवौ
प्रेष्ठालीभिः सेव्यमानौ स्मरामि॥

ईश्वरः परमः कृष्णः सच्चिदानन्द विग्रहः।
अनादिरादिर्गोविन्दः सर्वकारण कारणम्॥

नमो नलिन नेत्राय वेणुवाद्य विनोदिने।
राधाधर सुधापान शालिने वनमालिने॥

राधा अधर पान रसशाली। नव मधुरस पीबत वनमाली।
गोपी पीन पयोधर मर्दन। निष्ठुर कुच मुख अम्बुज दर्शन॥
बार-बार श्यामा पद वंदन। कर मनुहार यशोदा नन्दन॥
धन्य राधिका चरन सुहाये। वक्ष नयन सिर हरि लगाये॥

लाल लाल प्रभु पंकज चरना। बहु भूषण पहने मन हरना॥
विविध श्रृंगार कीन्ह बहु भाँती। कोटि काम छवि मनहुँ लजाती॥
अधर-बिम्बफल मृदु-मुसकान। मंगलमय प्रत्यक्ष भगवान॥
नव-बपु धरि आयहु मनु कामा। मोहत सकल लोक अभिरामा॥
सखि मंजरी कुँज में सेवत। राधागोविन्दहि सब बिधि मोहत॥

श्रीवृन्दावन के राजा प्यारे। कृपा प्रेम करुणा उर धारे॥
वृन्दावन से जयपुर आये। लीला तुम्हरी समझ न पाये॥
जयपुर हू वृन्दावन कीना। सब कर मन चुराय प्रभु लीना॥
नख-शिख दिव्य मनोहर गाता। लखि श्री विग्रह तन पुलकाता॥

बाम-भाग वृषभानु दुलारी। संग सोहत प्रिय सखियाँ सारी॥
शुभग-श्याम तन अंग-अंग शोभा। गल बैजन्ती तन-मन लोभा॥
कहौं कहाँ लगि तुमरी शोभा। कोटि काम छवि सब मन लोभा॥
रूप गोसाईं के ठाकुर प्यारे। तन मन प्राण सकल उन वारे॥

विनय करत बहु-भाँति सुहाई। तन रोमांचित अश्रु बहाई॥
हे गोविन्द मैं सखा तुम्हारा। ब्रज से दर्शन हेतु पधारा॥
हे गोविन्द शरण तेरी आया। करिहौ निज पद पंकज छाया॥
मो पर कृपा करहु यदु नन्दन। पुनि-पुनि करहुँ नाथ पद वंदन॥

उत्तरा को प्रिय गोविन्द भाये। भूप परीक्षित आप बचाये॥
जिनकी कृपा भागवत पाये। ताहि श्रवण कर भव तर जाये॥

पाण्डव डूबत वंश बचाया। कुन्ती पर कीन्ही अति दाया॥
सब बिधि नाथ मोहि अपनाओ। सखा जानि मोहि उर लपटाओ॥

वाणी गद्-गद् विनय सुनाई। धरनि परे तन मूरछा आई॥
कोलाहल सब मन्दिर छाई। दर्शन करि सौभाग्य मनाई॥
प्रभु प्रेमी अस संत न आया। करि उपचार तन होश कराया॥
तत्क्षण दिव्य बाल इक आया। हरि प्रसाद निज हाथ खिलाया॥

गोविन्द कृपा महत तब कीनी। भाँति अनेक सान्त्वना दीनी॥
महंत पुजारी माला लाये। वनमाली कहुँ गल पहनाये॥
अति समीप हरि दरश कराये। करि दर्शन अंग-अंग पुलकाये॥
अति समीप करि गोविन्द दर्शन। वनमाली कीने तन-मन अर्पन॥

गोविन्द-छवि हिय नयन बसाये। लौटि शिष्य सेवक गृह आये॥
नन्दपुरी कीनेहु गुरु बासा। तन मन पुलकित उर उल्लासा॥
नर-नारी दरशन को आये। परम रंक मनु पारस पाये॥
सतसंग करि कीनेहु उपदेशा। मेंटे सबके दुक्ख कलेशा॥

भरे मोद मन सब नर नारी। आदर मान कीन अति भारी॥
राधा विनोद राधा दामोदर। गोपीनाथ प्रभु परम रसिक वर॥
जयपुर सबका दर्शन पाया। दर्शन करि निज हृदय जुड़ाया॥
महत कृपा सब ठाकुर कीनी। वनमाली मन उर भरि लीनी॥

श्रीराधा-मदनमोहन जी के दर्शन

दर्शन करन करौली आये। मदनमोहन छवि लखि हरषाये॥
रूपामृत छवि नयन बसाये। लखि सुषमा तन-मन सरसाये॥
कामदेव प्रभु मोहित कीना। मदनमोहन धारि बपु लीना॥
परम मधुर रसमय बपु प्यारा। राधा के हरि प्राण अधारा॥

प्यारी मूरति मनहि लुभाये। देखि छवि हिय नयन जुड़ाये।
कोटि काम छवि उपमा धारे। मधु शीतल पद कमल तुम्हारे॥
सखी-मंजरी बहु बिधि सेवित। प्राण सखा सब तन-मन अर्पित॥
पुनि-पुनि करि पद पंकज वंदन। मम उर बसहु भक्त हिय चन्दन॥

राजभोग पाबहु प्रभु प्यारे। हम ब्रज के सखा गरीब तुम्हारे॥
तुम कहुँ केहि बिधि भोग लगाऊँ। सोचि यही मैं अति सकुचाऊँ॥
चींटी का पद स्वर भी सुनता। भक्त-कामना पूरी करता॥
ब्रजवासी का रूप बनाई। दर्शन दीना हरि प्रभु आई॥

दरशन दीन कृपा विस्तारी। बोले मधु मय बचन उचारी॥
हम हैं ब्रज के सखा तुम्हारे। लेहु जलेबा अरपहु प्यारे॥
हम जानहिं तुम हमहिं न जानो। हम पहचानहिं तुम ना पहचानो॥
वनमालिदास प्रभु भोग लगाया। प्रेम सहित भोग प्रभु पाया॥

वनमाली मन अति हरषाये। कृपा निरखि नयन जल छाये॥
मदनमोहन की कृपा मनाई। पुनि-पुनि पद बन्दहिं सिरनाई॥
कोहु न प्रभु सम परम कृपाला। मात पिता गुरु बन्धु साला॥
प्रभु आश्रय में जो जन रहई। परम कृपा निधि रक्षा करई॥

प्रभु निज जन के गुन गन ध्यावहिं। दोष त्रुटि अघ चित्त न लाबहिं॥
प्रभु भरोस दृढ़ मन चित लाई। नहिं लाबहु कभु मन कदराई॥
प्रभु आस विश्वास जगाई। सब बिधि करहु कृष्ण सेवकाई॥
जग की सब आशा बिसराबहु। कृपा मदनमोहन की पाबहु॥

मदनमोहन की किरपा धारे। वृन्दावन वनमालि पधारे॥
साधक नाम वनमालि कहाये। सिद्ध नाम मधुकंठहि गाये॥
वनमाली हरि के अति प्यारे। शील सनेही प्राण सखारे॥
वनमाली गुरु दीन दयाला। परम रसिक अरु परम कृपाला॥

श्रीकृष्ण-बलदेव मन्दिर-श्रीकृष्णानन्द स्वर्गाश्रम

श्रीधाम-वृन्दावन

वनमाली ठाकुर के आगे। करन दण्डवत पुनि-पुनि लागे॥
हे रामकृष्ण का व्यथा सुनाऊँ। तुम बिन अब मैं बहु दुःख पाऊँ॥
दुसह विरह अब नहिं सह जाई। आन मिलो प्रिय दोनों भाई॥
मोकहुँ अपने पास बुलाबौ। आलिंगन करि धीर बँधाबौ॥

नाथ कृपा करि दर्शन दीजै। बहुरि-बहुरि बंदहुँ सुधि लीजै॥
करत विलाप अनेक प्रकारा। हाय-हाय गोविन्द पुकारा॥
हरे कृष्ण० महामंत्र उचारहिं। नयन अश्रु जलधार बहावहिं॥
तन रोमांचित गद्गद् बानी। प्रेम दशा नहिं जाइ बखानी॥

भक्तमाल का छप्पय गावहिं। आह भरे ठाकुरहिं सुनावहिं॥
"अभिलाष भक्त अंगद कौ पुरुषोत्तम पूरन कर्यौ।"

भक्तमाल के पदहि सुनावहिं। पुनि-पुनि नयन अश्रु जल लावहिं॥
राम-कृष्ण कहुँ विनय सुनाई। पुनि-पुनि पद पंकज लपटाई॥

प्रेम-भक्ति बस दोनों भाई। निज जन दुःख प्रभु नहिं सहजाई॥
परम करुण प्रभु परम कृपाला। अति कोमल हरि जन प्रतिपाला॥
प्रकटे हृदय आइ दोउ भाई। कोटि काम छवि बरनि न जाई॥
मन्द हास्य करुणा उर लाये। हिलकी भरि रोवहिं बतराये॥

गूढ़ सनेह कहा कहि जाई। मन-बुद्धि जहँ फटकत नांई॥
कहा कही अरु का बतराये। गूँगा क्या गुड़ स्वाद बताये॥
मिलहिं परस्पर अति सुख पाये। बतरावहि पुनि गल लपटाये॥
पुनि-पुनि भेंटहिं पुनि बतराई। परम प्रेम मय दोनों भाई॥

बहुत काल प्रेमी बिछुड़ाये। विरह सकल अब शमन कराये॥
प्रेम की भाषा नहिं कहि जाये। प्रेम पथिक ही अनुभव पाये॥
अदृश भये दोउ प्राणन प्यारे। वनमाली तब नयन उघारे॥
परम विकल रोवहि वनमाली। विषम दशा भई अति दुःखशाली॥

रोते वनमाली दिन अरु राती। विरह विह्वलता बरनि न जाती॥
नाम जीह जपि लोचन नीरा। राम-कृष्ण रट पुलक शरीरा॥
नित्यानन्द गौरांग मनावहिं। अद्वैत सहित सब कहुँ सिर नावहिं॥
गौर-गदाधर अरु श्रीवास। गौर भक्त मोहि सबकी आस॥

षड् गोस्वामी पद युग ध्यावत। बार-बार पद कमल मनावत॥
करहु कृपा मो पर गोस्वामी। क्रीतदास मैं तुम मम स्वामी॥
हा वृन्दावन प्रभु के प्यारे। कहाँ गये मन मीत हमारे॥
रामकृष्ण बिनु कछु न सुहाये। क्षण-क्षण पल पल युग सम जाये॥

हा रामकृष्ण मोहि पास बुलाओ। अब ना मो कहुँ तुम तरसाओ॥
रामकृष्ण बिनु कछु न सुझाई। विरह विकलता तन मन छाई॥
भाव विह्वल रहते दिन राती। रामकृष्ण जप नाना भाँती॥
कृष्ण कथा नाम संकीर्तन। पुनि-पुनि करहिं संत पद वंदन।
एहि प्रकार सब समय बितायें। भूख प्यास निशि नींद न लायें॥
विरह ज्वाल तन मनहिं समाई। हरि बिन कछु सुहाबत नाईं॥

श्रीगोलोकधाम में श्रीकृष्ण-बलदेव सपरिकर

गोलोक धाम में एक दिन भाई। जुरे सखा गोविन्द ढिंग आई॥
हास-विनोद करहिं बहु नाना। खेलत नाचत गाबत गाना॥
गोविन्द बोले सबहि सुनाई। मधुकंठ सखा मोहि दीखत नाहीं॥
वनमालिदास एक सखा हमारा। जाय धरा लीना अवतारा॥

मधुकंठ सखा की सुधि मोहि आबे। समयोचित मोहि गान सुनाबे॥
सब मिलि तुम वृन्दावन जाओ। प्रिय सखाते मोहि मिलबाओ॥
धीर धरहि मेरौ मन नाईं। तुम सब बाकूँ लाओ बुलाई॥
गान सुनहुँ पाबहुँ विश्रामा। मिलि होयहुँ मैं पूरण कामा॥

जौ ना बाते मोहि मिलाओ। तुम सब हू ना मो ढ़िंग आओ॥
जौ मोते तुम बाहि मिलाओ। मम चुम्बन आलिंगन पाओ॥
धन्य सखा मधुकंठ मिताई। सुधि गोविन्द करत मनलाई॥
बलदेवहु तिन आयसु दीनी। वनमालि बुलाबन की जिद कीनी॥

हरि-हलधर की आयसु पाई। हरषे सकल सखा समुदाई॥
जुरि मिलि हम वृन्दावन जाई। वनमालि सखा कूँ लांइ बुलाई॥
हरि-हलधर से भेंट कराई। हमहू लखि हिय नयन जुड़ाई॥
सखा चले प्रभु आयसु पाई। परम हरष मन मोद भराई॥

सब मिलि प्रिय वृन्दावन आये। राधे-राधे कण-कण गाये॥
रज कण कण आनंद भराया। युगल प्रेम माधुर्य समाया॥
मधु रसमय वृन्दावन प्यारा। रसिक जनन जीवन आधारा॥
वृन्दावन की महिमा न्यारी। सुर नर मुनि तरसत सब झारी॥

ब्रज रज कन चिन्तामणि सारा। प्रेम सुधा नव मधु की धारा।
ब्रज रज कन मधु सुधा बहावहिं। शुक सनकादिक अज तरसावहिं॥
युगल प्रेमरस मन है डुबाये। माधुर्य केलि रस सिन्धु बहाये॥
गोविन्द सखा वृन्दावन आई। दीन सपन वनमालिहि जाई॥

श्रीवनमालिदासजी की गोलोक धाम प्राप्ति

गोविन्द सखा आये वृन्दावन। दीन स्वप्न वनमालि सुहावन॥
सकल सखा मिलि तेहि ढिंग आये। करि अभिवादन गल लपटाये॥
आदर भाव सखा सब पाये। गोविन्द प्रीति कहते पुलकाये॥
धाम चलौ गोविन्द बुलाया। यश-सौरभ तुम्हरा जग छाया॥

मधुकंठ सखा तुम यश विस्तारा। कीन धरा पावन जग सारा॥
गोविन्द काज तुम पूरा कीना। धाम चलहु अब हम संग लीना॥
सपन भंग जागेहु वनमाली। तन पुलकित मुख छटा निराली॥
रामकृष्ण की याद कराये। वाणी गद् गद् अश्रु बहाये॥

ब्रह्म महूरत सदगुरु जागे। हरि नाम सुधा ध्वनि करने लागे॥
शौच क्रिया करि शुद्धि कीनी। दाँतुन नीम तोरि उन लीनी॥
दाँतुन करन लगे हरषाई। प्रेम के लक्षन तन मन छाई॥
गोविन्द प्रीति तन-मन पुलकाई। त्रिभंग भये मनु वंशी बजाई॥

सब कर कीन्हेउ अस उपदेशा। जाहुँ धरा तजि प्रभु के देशा॥
प्रातः समय कीन्हेउ असनाना। हरे कृष्ण ऊँचे स्वर गाना॥

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे॥

महामंत्र गावत तनु त्यागा। अति दुर्लभ पायहु सौभागा॥
अस सौभाग्य न ऋषि मुनि पाये। अन्त समय हरि नाम न आये॥
कोटि जन्म मुनि जप तप करहीं। अन्त काल नहिं हरि उच्चरहीं॥
पौष कृष्ण षष्ठी तिथि आई। भये तिरोहित वनमाली राई॥

तनहिं त्यागि हरिधाम पधारे। सकल लोक महँ यश विस्तारे॥
गो लोकधाम वनमालि सिधाये। शिष्य भक्त सब अनुभव पाये॥
कोउ शिष्य जब भोजन पावा। भूख मिटी भोजन लौटाबा॥
कोहू गिरि परिक्रमा करई। मन विषाद उर दुःख से भरई॥
निज-निज अनुभव सब सिख पाये। दुःख सागर सब शिष्य डुबाये॥

सकल शिष्य रोबहिं दुःख भारी। अहो विधाता बीजुरि डारी॥
हाय विधाता यह क्या कीना। गुरु मिलाइ फिर अब क्यों छीना॥
सदगुरु हमरे गुरु पितु माता। क्रूर करम तुम कीन विधाता॥
हमको अब को धीर धराबहि। यम संकट से कौंन बचाबहि॥

सत पथ अब हमको को लाबहिं। को अब प्रिय उपदेश सुनाबहिं॥
विषम काल जब हम घबराये। महा विपद से गुरुहि बचाये॥
हे बिधि! क्यों तुम अपयश लीना। सब बिधि क्रूर करम तुम कीना॥
जड़ समान करतूति तुम्हारी। बिनु सोचे देते दुःख भारी॥

क्यों मिलाइ फिर क्यों बिछुड़ाये। तुम्हरी रीति-नीति नहिं भाये॥
करुणा दया प्रेम उर नाहीं। भल-अनभल कछु समझत काहीं॥
हृदय हीन तुम निष्ठुर भारी। तुम्हरी बुद्धि गई हरि मारी॥
देहिं विधातहि दूषण भारी। गिनि-गिनि देवहिं गारि उचारी॥

विद्युत सम फैली यह बाता। सुनतहि सब पाबहिं परितापा॥
कथहिं परस्पर यश गुन गाथा। नयन अश्रु पीटहिं निज माथा॥
वृन्दावन निधि गई पलाई। एहि सम संत होंन अब नाई।
ज्ञान सूर्य अस्ताचल गयऊ। जग अँधियार दशों दिशि भयऊ॥

महा विभूती जग की न्यारी। प्रेम भक्ति विद्या आगारी॥
विद्या-बारिधि सब गुन आगर। जिन कीने बस कृष्ण गुणाकर॥
परमारथ पथ परम प्रबीना। किये सुखी सब दुःखी व दीना॥
धरम अबधि भक्ति नट नागर। शील नेह करुणा सुख सागर॥

को करहइ अब हमहिं दुलारा। दीखत अब सब जग अँधियारा॥
प्रेम सहित अब कौन बुलाबहिं। हँसि-हँसि हमसे को बतराबहिं॥
हमको अब को पथ दिखलाबहि। हमरी उलझन को सुलझाबहि॥
हमको नहिं अब मग कछु सूझत। ज्ञान प्रकाश देत जब बूझत॥

देखन मिलहि न अब वह मूरति। हँसमुख परम सरल वह सूरति॥
अब लगता सब जग अँधियारा। गुरु बिन नहिं कोई हितू हमारा॥
सुमन वृष्टि गुरु पर सब करईं। रोबत बिलपत आहें भरईं॥
कृपा करहु अब गुरुवर प्यारे। हम जीवहिं तव कृपा सहारे॥

परम रम्य विमान बनावा। बिविध भाँति सिख ताहि सजाबा॥
ता ऊपर सदगुरु पधराये। जय जय ध्वनि सब शीश झुकाये॥
जय जय ध्वनि नभ मंडल छाई। सुमन वृष्टि कर जन समुदाई॥
हरि बोल ध्वनि भई चहुँ ओरा। कुम्भ जुरेहु वृन्दावन ओरा॥

श्रद्धा के जन सुमन चढ़ाये। नयन अश्रु सब शीश झुकाये॥
कोलाहल वृन्दावन छाया। जन समूह यमुना तट आया॥
रोबत रवि तनया हरि रानी। श्रद्धा अर्पित प्रभु पटरानी॥
वेद बिधि सब क्रिया कीनी। श्रद्धा सहित जलांजलि दीनी॥

करहिं बिलाप शिष्य समुदाई। श्रद्धा अर्पित बिलपत जाई॥
जमुन अंक वनमालि समाये। तेहि पथ वे गोलोकहिं आये॥
हरि भक्त मरण कभु होता नाईं। परदा पीछे जात छिपाई॥
गोविन्द काज पूरण करि जाबहिं। पुनः लौटि गोविन्द ढिंग आबहिं॥

एहि बिधि धाम गमन मैं गाया। मो सम को निष्ठुर जग जाया॥
क्षमा करहिं मोहि शिष्य सुजाना। सब बिधि मोहि दास निज जाना॥
धाम गमन मैं छोड़न चाया। प्रभु प्रेरित मैं बरबस गाया॥
अस गुरु विमल चरित मैं गाया। चाहहुँ क्षण-क्षण गुरु पद छाया॥

पहुँचे रामकृष्ण ढिंग जाई। हरि हलधर से भेंटेहु आई॥
पुनि पुनि भेटहिं गल लपटाईं। परम प्रीति बस भये दोउ भाई॥
रामकृष्ण मन मोद मनाबत। कुशलक्षेम पूछि बतराबत॥
मधुर गान मधुकंठ सुनाये। रामकृष्ण पद प्रीति दृढ़ाये॥

मधुर हास-परिहास सुहाई। सकल सखा भेंटे हिय लाई॥
पूरण तृप्त भये दोउ भाई। उर आनन्द न मनहिं समाई॥
वियोग जनित मेंटेहु परितापू। मन प्रसन्न अति पुलकित गातू॥
भोजन बास पाव विश्रामा। युगल भ्रात हरषित सुखधामा॥

वनमाली सबके अति प्यारे। रामकृष्ण के प्राण दुलारे॥
जग हित सखा भाव विस्तारा। हरन शोक भय पाप अपारा॥
सखा भाव जब उर में आवै। प्रभु प्रीति सब तन मन छावै॥
वनमाली सम को जग माहीं। रामकृष्ण नित लाड़ लड़ाहीं॥

श्रीवनमाली चरितामृत महात्म्य

दो०— वनमाली के चरित कौ जो कर नित प्रति पाठ।
होंइ अमंगल दूरि सब होबहिं बाके ठाठ॥
वनमाली के चरित कौ करहि जो नित प्रति गान।
सकल संपदा भोग सुख अरु रति पाबहि भगवान॥

जो कोई यह पाठ कराबहिं। रोग शोक भय ताप नशाबहिं॥
सकल सिद्धि सुख संपत्ति पाईं। परमधाम मिल संशय नाईं॥
संकट घोर महा श्रम हारी। मिट जाबहिं मन चिन्ता सारी॥
जो जो इच्छा कर मन माहीं। पूरण होबहिं कोउ श्रम नाहीं॥
जो वनमाली चरितहि पढ़ईं। बिन प्रयास भव सागर तरईं॥
प्रेम भक्ति अनपायनी पायें। विपद कलेश सकल मिट जायें॥
ब्रज वृन्दावन बास करायें। रामकृष्ण पद सेवा पायें॥
प्रेम मगन होइ कथा सुनाबहिं। हरि की कृपा अबश वे पाबहिं॥

वनमाली चरितामृत नव अमृतेर धार।
रामकृष्ण प्रेम सुधा बहिबे अपार॥
कृष्ण सखा वनमाली चरित जो कहे सुने।
दशों दिशि मंगल होइ कृष्ण भक्ति मिले॥

साधु संत राजा रंक करे जासु गान।
युवा वृद्ध नारि नर करे बहु मान॥
शुक सनकादिक मुनि करे जासु गान।
सुर नर शिव अज नारद करें सम्मान॥

लता विटप पशु पक्षी गाये। वन-उपवन सब नृत्य कराये॥
जड़ चेतन मन हरषित भारी। गावहिं चरितामृत हरि मन हारी॥
वनमाली चरितामृत धारा। कहहिं सुनहिं होयहिं भव पारा॥
वनमाली के चरित अपारा। अगम अनंत न पावहिं पारा॥

वनमाली के चरित सुहाये। बहुत काल लागे जाहिं न गाये॥
जो वनमाली चरितहिं गायें। रामकृष्ण पद पंकज पायें॥
तीन ताप तेहि निकट न आवें। जो वनमाली चरितहि गावें॥
जो वनमाली चरितहि गाई। सुख संपति आवहि हरषाई॥

दो०— वनमाली के चरित सब लिखे कौन पे जाइ।
शेष महेश गनेश हरि वाणी हू शरमाइ॥
श्रवण सुखद मंगल करन वनमाली गुण ग्राम॥
सुख संपति पावहिं सदा मिलहि कृष्ण बलराम॥

गुरू भागवत सिन्धु सुधा ते। प्रेमामृत मधु लयहु कृपाते॥
महा मंद मति कछु नहिं जाना। प्रभु प्रेरित मैं चरित बखाना॥
संत भक्त रसिकन मन भावन। कीन गान यह चरित सुहावन॥
राधा आयसु सिर धरि लाई। कठपुतली इव चरितहि गाई॥

रेवति राधा सखियाँ सारी। सखी सहचरी किंकरि प्यारी॥
परम कृपा इन सबकी जानी। पावन चरित लिखेहु यह मानी॥
हरि हलधर की कृपा मनाई। सखन संग बन्दहु तेहि पांई।
नन्द यशोदा वृभभानू कीरति। पद पंकज में होयहि मम रति॥

सिर धरि श्यामा आयसु पाई। लिखेहु चरित सब कहुँ सुखदाई॥
पढ़हि सुनहि अनुमोदन करई। करतल चार पदारथ लहई॥
कीरति तनया सखियन प्यारी। कृष्ण प्रिया वृषभानु दुलारी॥
श्यामा श्याम निकुँज बिहारी। कुँज रास मणि कीर्ति कुमारी॥

रासेश्वरि रस भरे अगाधा। कृपा करहु हे प्यारी राधा॥
मोकहुँ निज मंजरि करि लीजै। चरण कमल की सेवा दीजै॥
कुँज रास की सेवा पाऊँ। प्रिय सेवा करि ताप बुझाऊँ॥
राधागोविन्द राधारमण मदन मोहन। राधा पद पंकज तन मन अर्पन॥

कृपा करहु जंजीरी नन्दन। क्षम अपराध करहुँ पद वंदन॥
वनमाली के पद युग सोई। मम नयनन गोचर कब होई॥
वनमाली के शिष्य सुजाना। सब मिलि देहु कृपा कर दाना॥
कृपा मोर बल दूसर नाईं। कृपा करहु पद पंकज छाईं॥

रामकृष्ण पद मन मति लाई। कृपा करहु मिलि दोनों भाई॥
गुरू संत वैष्णव भगवाना। क्षमहु दोष मम पद रज जाना॥
रामकृष्ण मय सब जग जानी। दंड प्रणाम करहुँ शुभ मानी॥
कण-कण कृपा करहु सब झारी। सकल दोष अपराध बिसारी॥

वनमाली चरितामृत गाया। चरित-लिखत दिव्य सुख पाया॥
राधागोविन्द प्रीति सुहाई। हरि हलधर की कृपा मनाई॥
लिख्यौ चरित पावन मनहारी। सत शिव सुख मुद मंगलकारी॥
हरे कृष्ण० महामंत्र है गाई। करहुँ समापन हरिः मनाई॥

हरे कृष्ण हरे कृष्ण कृष्ण कृष्ण हरे हरे।
हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे॥

राधा गोविन्द नित भजहु-भजहु कृष्ण-बलराम।
होंइ सुमंगल रैन दिन पुजवहि मन हिय काम॥

समाप्तोऽयं ग्रन्थः
श्रीकृष्णार्पणमस्तु

श्रीगुरुदेव - प्रार्थना

शरण में आये हैं हम तुम्हारी, दया करो हे दयालो! गुरुदेव
बिना परों के हैं हम पखेरू, दया करो हे दया लुटेरू।
तुम्हारे बिन है को अब हमारा, दया करो हे दयालो! गुरुवर।
लाखों जनम से पड़े हुए हैं, भक्ति बिना हम मरे हुए हैं।
झपटने वाला है अब शिकारी, दया करो हे दयालो! गुरुदेव।
जगत् में देते रहे दुहाई, कोई न अब तक हुआ सहाई।
तुम्हारे चरणों में लौ लगाई, दया करो हे दयालो! गुरुवर।
करा दो हम को हरी का साथा, वही हमारा निजी है भ्राता।
झुका रहे हे 'हरिप्रेष्ठ' माथा, दया करो हे दयालो! गुरुदेव।

श्रीगुरुदेव - स्तुतिः

भवभीत पतित संसार हेतु, गुरु रूप हरी अवतार भये ॥टेक॥
हरि जो युग-युग में प्रगट होत, वे आय यही अवतार भये।
इनकी करुणा की महिमा का, कहते न बनै मुख सहस किये॥
गुरु साक्षात् हरि मूरति हैं, हरि ही अपने मुख बचन कहे।
इनकी सेवा में मगन होय, कितने ही भव से पार भये॥१
गुरु-वर्य के दर्शन से पहले, कैसी ये दशा हमारी थी।
क्या तत्त्व-वस्तु क्या परमेश्वर, बुद्धी ने नहीं विचारी थी॥
क्या पाप होत क्या पुण्य होत, पापों में रती हमारी थी।
जबसे गुरुवर ने कृपा करी, सब ही कुछ जानत आज भये॥२
इनके चरणों में सब तीरथ, निर्मल मन करने वाले हैं।
इनके कर-कमलों में शक्ती, भक्ति को देने वाले हैं॥
इनके हित में नित राम-श्याम, गउओं को चराने वाले हैं।
इनके जग-हित पै बलिहारी, दर्शन करि आज सनाथ भये॥३
कलियुग का कीर्तन मुख्य धर्म, इनने जग में विस्तार किया।
ग्रामों शहरों में घूम-घूम, कीर्तन का झण्डा गाड़ दिया॥
विमुखों को देकर प्रेम-भक्ति, जगका भारी उपकार किया।
यों "दास रामहरि" करत गान, बैठें हमरे ये आय हिये॥४

श्रीवनमाली-चरितामृत

महाकाव्य
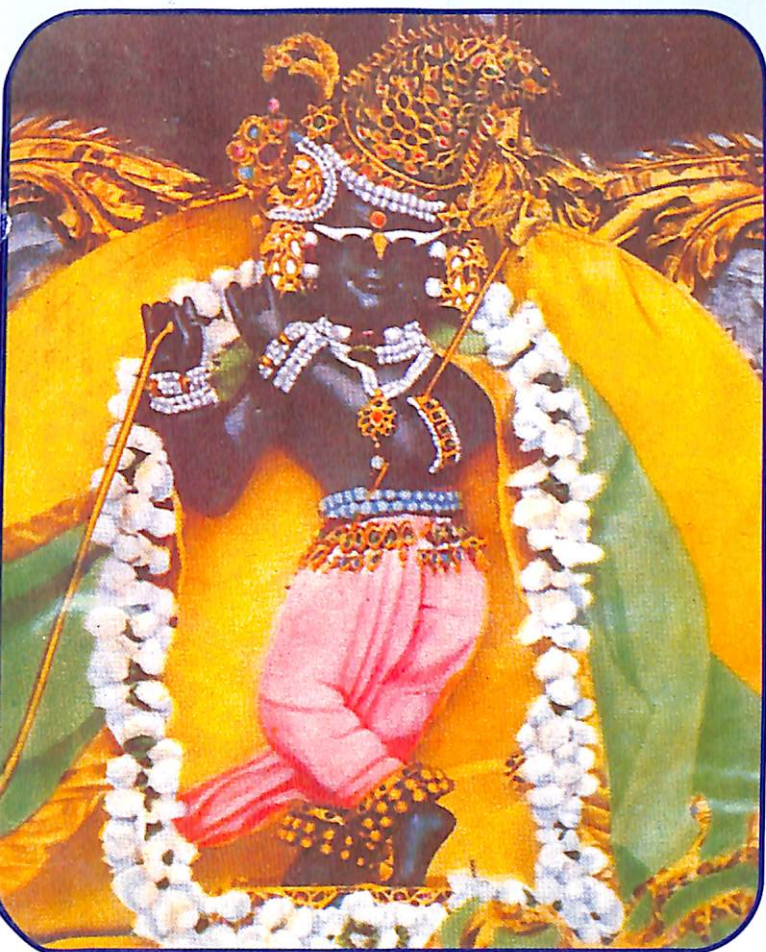
ठाकुर श्रीराधारमणजी, वृन्दावन

श्रीवनमाली-चरितामृत

महाकाव्य

श्रीदाऊजी महाराज, श्रीबलदेव

चावला ऑफसैट, नदिया मौहल्ला, भरतपुर फोन : 224461

॥ श्री गोविन्दाय नमो नमः ॥

श्रीवनमाली-चरितामृत

महाकाव्य

श्रीराधागोविन्द देवजी, जयपुर

रचयिता - **बाबूलाल शास्त्री**

श्रीराधाकृपा कुँज, पास पंचवटी आश्रम

पंचमुखी हनुमान परिक्रमा मार्ग, राजपुर बाँगर श्रीधाम, वृन्दावन (मथुरा)